मदीने की डगर

अर्थात्

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी

की पुस्तक

“कारवाने मदीना”

का

हिन्दी अनुवाद

☆

अनुवादक :

मुहम्मद हसन अंसारी

एम०ए०, एल०टी०

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक दारुल उलूम नदवतुल उल्मा, लखनऊ के रेक्टर मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी, जिन्हें लोग अली मियां के नाम से जानते और मानते हैं, की अरबी पुस्तक "अत्तरीक़ इलल मदीना" के उर्दू अनुवाद 'कारवाने मदीना' का हिन्दी रूपान्तर है।

मैं भाषा को विचारों एवं अनुभूतियों को व्यक्त करने का माध्यम पहले मानता हूं और कुछ बाद में। अनुवाद के साथ अगर मूल भाषा की चाश्नी बनी रह सके तो सोने में सुहागा। इस अनुवाद में यही शैली अपनाने का प्रयास किया गया है। आवश्यकतानुसार कहीं-कहीं कुछ शब्दों के ठेठ उर्दू अथवा हिन्दी अनुवाद कोष्ठक में अनुवाद के साथ ही दे दिए गये हैं जबकि पारिभाषिक शब्दों का अर्थ टिप्पणी के रूप में दिया गया है। सूरे के आगे लिखे अंक आयत संख्या बताते हैं।

'मदीने की डगर' आपके सामने है इस पर चलकर अपने जीवन को सफल एवं सार्थक बनाना हमारा आपका काम है। ईश्वर हमारी मदद करे और हमारे दिलों को अपनी और अपने प्यारे रसूल हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत से भर दे।

अनुवादक

स्थान : मेहलचौरी (चमोली)
ता : 31-7-1980 ई०
17-9-1400 हि०

विषय सूची

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

भाई मौलाना अबुल हसन अली नदवी !

हमारे यहां सीरिया में एक कहावत प्रचलित है कि 'लेख अपने शीर्षक से पहचान लिया जाता है' (अर्थात् ख़त का मजमूं भांप लेते हैं लिफ़ाफ़ा देखकर) आपकी किताब के नाम ने इससे पहले कि इसे खोलूं मेरे अन्दर जीवन की एक लहर दौड़ा दी। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि इस शीर्षक ने मुझे अपने जीवन की लम्बी यात्रा में 33 वर्ष पीछे लौटा दिया है। मुझे दिखा कि मैं हेजाज़ के बियाबान में हूं, मुझ पर और मेरे मित्रों पर वहां पचास दिन व्यतीत हो चुके हैं, उस मरुस्थल में ऊपर से दमकता हुआ सूरज है और नीचे झुलसती हुई रेत, एक टीले से हम चलते हैं और एक बियाबान में खो जाते हैं। प्यास से ज़बान पर छाले और रास्ता भटक जाने के डर से जान के लाले पड़े हुये हैं। हमारी समस्त आशायें और मनोकामनायें मात्र एक आशा और अभिलाषा में आकर समो गई हैं, वह यह कि हम मदीना देखें।

मेरे भाई ! हम मदीने की राह में भटक गये थे, हमने भूख और प्यास की तकलीफ़ झेली, मौत आंखों के सामने खड़ी नज़र आती थी, थकान और भय के कड़वे घूंट पिये, यहां तक कि पूरा दिन बीत गया। हमारे साथ एक बद्दू गाइड था जिसकी ज़बान पर ताला लगा रहता था और त्योरी चढ़ी रहती थी, अचानक उसका मुर्झाया हुआ चेहरा दमक उठा और उसने एक वाक्य कहा, अगर अशरफ़ियों का तोड़ा दिया जाता तो मुझे वह उस वाक्य से अधिक प्रिय न होता। वह वाक्य जिसने हमारे भय को इतमीनान, हमारी भूख और प्यास को तृप्ति (सैरावी) और हमारी थकन को आराम व राहत से बदल दिया। वह वाक्य एक जादू था— (अगर यह मान लिया जाये कि

शब्दों में भी जादू होता है) । उस वद्द का वाक्य था, 'यह रहा ओहद'[1] । आप एक प्रेमी की कल्पना कीजिए जिसके हृदय में विरह की ज्वाला धधक रही हो और वियोग ने जिसे मरणासन्न कर दिया हो फिर अचानक उसे ख़बर दी जाये कि यह प्रियतम का घर है । यह ध्यान रहे कि वह नश्वर शरीर से जुड़ा हुआ प्रेम है और यह मन की लगन की बात, वह सांसारिक इच्छाओं का प्रेम है जो नष्ट हो जाता है और यह एक दैवी भावना की प्रक्रिया जो अमर है ।

एक तिहाई सदी की ओट के पीछे मुझे अब तक अच्छी तरह से याद है कि किस प्रकार इस वाक्य ने हमारे अंग-अंग में जीवन की लहर दौड़ा दी थी । दम के दम में हम अपनी सवारी को तेज़तर करने लगे, और ड्राइवरों को तेज़ चलाने की ताकीद कर रहे थे, क्योंकि हम मोटरों में सवार थे और हमारी मोटरें सबसे पहली मोटरें थीं जिन्होंने सीरिया और हेजाज के मध्य के मरुस्थल को पार किया था । और यह मरुस्थल अपने इतिहास में पहली बार इस नये प्रयोग (मोटर) से परिचित हो रहा था । ड्राइवरों में चुस्ती आई । हमने अनुभव किया कि मिलन की खुशी ने जिस प्रकार हमें मस्त कर दिया है, उसी प्रकार मोटरों में भी तेजी, चुस्ती और शौक़ की एक लहर दौड़ गई है ।

जब हम ओहद के पार से घूमकर आये और गुम्बदे ख़िज़रा[2] पर पहली नजर पड़ी तो हमारी ज़बान हमारी आन्तरिक भावनाओं को व्यक्त करने में असमर्थ रही, जिस प्रकार आज क़लम असमर्थ है । हमने प्रेमियों की भाषा में दिल की धड़कन और आंसुओं की झड़ी के साथ बातें कीं । हमारे दिल क्यों न धड़कते ! और क्यों हमारे आंसू न बहते ! हम प्रियतम् की नगरी में पहुंच गये थे, वह नगरी जिसकी

---

1. सीरिया की ओर से आने में मदीना ओहद की पहाड़ियों की ओट में पड़ता है ।
2. मस्जिदे नबवी का हरा गुम्बद ।

याद में हम जिया करते थे, और जिसका ध्यान हमारा दाना पानी था। सीरत[1] पढ़ते हुए इन स्थलों के वर्णन पर हम महसूस करते थे कि यह हमारे मन का ठौर और तन का ठिकाना है। हमारा देश जिसमें हम पैदा हुये केवल हमारे तन का वतन था, और ऐसा कब हुआ है कि इंसान को उसके तन का वतन मन के वतन से अधिक प्रिय हो। भू-तल पर क्या कोई ऐसा अभागा मुसलमान है जो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नगरी पर (ईश्वर न करे किसी मुसीबत के अवसर पर) अपना वतन न्योछावर करने के लिये तैयार न हो जाये, या अगर ख़ुदा के घर पर कोई मुसीबत आये तो उस घर की सलामती के लिए वह अपना और अपने घर वालों का सब कुछ न्योछावर न कर दे।

एक मनुष्य, जो साहित्यकार हो और इतिहासकार भी, की इच्छा होती है कि वह उस घर के दर्शन करे जहाँ एक साहित्यकार पैदा हुआ हो, उस नगरी को देखे जहाँ पहले एक कवि वास कर चुका हो। इसके लिए वह यात्रा करता है और वहाँ पहुँचने के लिए ढेरों पैसा ख़र्च करता है, इस राह में वह सब कुछ सहन करता है और रास्ते की मुसीबतें झेलता है। किस प्रकार फिर एक मुसलमान का दिल उस शहर के शौक़ में बेताब न हो जाये जिसकी धरती को मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चरणों ने स्पर्श किया है, जिसकी हवा में आपने साँसें लीं और जहाँ के पानी का आपने सेवन किया। यह आशिक़ उन्हीं राहों पर चलता है जहां उसके प्रियतम् के पदचिह्न हैं, वहीं सजदा में सर झुकाता है जहाँ उसके प्रियतम् ने नमाज़ पढ़ी है। उस राह से मदीने में प्रवेश करता है जिस राह से हिजरत[2] के समय आप मदीने में प्रवेश किये थे और उस राह से बाहर जाता है जिस राह से ओहद की लड़ाई के समय मुसलमानों की फ़ौज आपके नेतृत्व में निकली थी।

---

1. मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनी।
2. मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक्के से मदीना प्रस्थान।

वह इस लड़ाई के मैदान को ध्यानपूर्वक देखता है और शहीदों की क़ब्रों पर खड़ा होता है, फिर उस रौज़े की ओर बढ़ता है जो इस धरती पर जन्नत का एक टुकड़ा है, उस हुजर-ए-मुबारक[1] पर हाज़िरी देता है जहाँ आपकी क़ब्र है और जो सदा के लिए बन्द कर दिया गया है, फिर यह आशिक़-ए-ज़ार अपनी ज़बान से कहता है, 'अस्सलाम अलैका या सैय्यदी या रसूलुल्लाह' (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)। अपनी पहली हाज़िरी के इन एहसासात (अनुभूतियों) को मैं कभी नहीं भूलूंगा।

क्या बात है आज मुझ में उस तरह का शौक़ नहीं और न मुझे उस जैसी खुशी का एहसास है? क्या बात है कि मैं उन नातिया-अशआर[2] को पढ़ता हूँ जो अरब कवियों के क़लम से निकले हैं जो मेरे रोम-रोम को इस प्रकार हिला देते थे जैसे माली एक फलदार पेड़ की डाल पकड़कर हिलाता है और मेरे हृदय से भावनाओं और अनुभूतियों की इस प्रकार वर्षा होती थी जिस प्रकार डाल हिलाने से पके फल गिरते हैं? क्या कारण है कि आज मैं उन पंक्तियों को पढ़ता हूँ तो दिल की केवल उन शाखों में हरकत (गति) होती है जिन्हें जीवन के पतझड़ ने पत्तों से वंचित कर दिया है और अब वह केवल सूखी टहनियाँ हैं।

क्या यह अधिक समय व्यतीत हो जाने का नतीजा है? या मन के बावरेपन का? अथवा समय के चक्र का फेर है? या यह कि पहले हम थल मार्ग से आते थे, मदीने के रास्ते में कई-कई हफ्ते लग जाते थे। शौक़ और लगन हमारे साथी होते थे। दिल में हज़ारों तमन्नायें होती थीं। अब हम दो या तीन घंटे में रास्ता तय करने लगे हैं। सीरिया या मिस्र में हम हवाई जहाज़ की सीढ़ी पर क़दम रखते हैं, और अभी खाना खाकर कुछ देर सोने भी नहीं पाते कि उस सीढ़ी से जद्दा में उतर जाते हैं। हमने इस प्रकार समय का लाभ उठाया, किन्तु भावनाओं एवम् अनुभूतियों से हाथ धोया।

---

1. वह कमरा जिसमें मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र है।
2. मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा में रचित पंक्तियाँ।

मेरा आत्मविश्वास डगमगा गया था। लेकिन भाई अबुलहसन! जब मैंने आपकी किताब 'अल्तरीक़ इलल मदीना'[1] को पढ़ा तो मैंने महसूस किया कि शौक़ मेरे अन्दर फिर अंगड़ाई लेने लगा है और मेरे हृदय में फिर वही ज्वाला दहक उठी है। इस प्रकार फिर मुझे इतमीनान हुआ कि मेरा दिल प्रेम के जौहर से एकदम खाली नहीं हुआ है, लेकिन समय के चक्र ने इस जौहर को धूल धूसरित कर दिया था आपकी किताब ने इस धूल को एक बार फिर साफ़ कर दिया।

साहित्य से भी मेरा विश्वास उठने लगा था, चूँकि साहित्यकारों में वह आसमानी नग़मा बहुत दिनों से नहीं दिखा जिसकी लय में शरीफ़ रज़ी[2] के समय से लेकर अब्दुर्रहीम बरअई[3] तक कवि गाते रहे, जब मैंने आपकी किताब पढ़ी तो यह खोया हुआ नग़मा फिर मुझे मिल गया। यह नग़मा मुझे आपके उस गद्य में मिला जो वास्तव में शायरी है लेकिन बेरदीफ़ और क़ाफ़िया की शायरी। भाई अबुल हसन आपको कोटि-कोटि धन्यवाद कि आपने दोबारा मेरे अन्दर स्वयं अपने आप पर और अपने साहित्य पर विश्वास बहाल कर दिया।

आपने मुक़दमा (प्राक्कथन) की फ़रमाइश की है। इसके लिए मुझे क्षमा करें। क्योंकि इसकी न आपको ज़रूरत है और न इस किताब को। किताबों के मुक़दमे की वही हैसियत होती है जो व्यापारी के लिए दलाल या एजेन्ट की। नये व्यापारी को दलाल की इसलिए तलाश होती है कि वह अपने अप्रचलित सामान की ख्याति बढ़ाये। जब स्वयं ग्राहक व्यापारी को एजेन्ट से अधिक जानते हों और उसका सामान खरीदने के उससे अधिक इच्छुक हों जितना व्यापारी उसके बेचने का तो ऐसी दशा में यह एजेन्ट क्या काम दे सकता है।

मक्का — वस्सलाम अलैक व रहमतुल्लाह

14—1—1385 हि० — **अली तन्तावी**

---

1. कारवाने मदीना का मूल अरबी संस्करण।
2. अब्बासी युग के विख्यात अरब शायर।
3. विख्यात अरब सन्त और शायर।

आमुख

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन व सल्लल्लाहु अला ख़ैरे ख़ल्क़ेहि सैय्यद्ना व मौलाना मोहम्मदिवं व आलेहि व सहबेहि अजमईन।

प्रस्तुत पुस्तक लेखक के विभिन्न व्याख्यानों और सीरत के निवन्धों का संकलन है। अपने समय, स्थल, प्रेरक तत्वों तथा आयोजनों के दृष्टिकोण से इनमें अन्तर और विभिन्नता है किन्तु इस अनेकता में एकता भी है और वह यह कि इन सबका सम्बन्ध एक ही व्यक्तित्व से है, अर्थात् मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपकी पाक सीरत, उसकी शिक्षायें, सन्देश, उसके वरदान व उपकार तथा उसके विश्वव्यापी प्रभाव एवं प्रतिफल से। और इन सबका उद्देश्य एक है, अर्थात् उस महान आत्मा के प्रति हृदय में प्रेम और मन-मस्तिष्क में भावात्मक लगाव उत्पन्न करना। इसलिए विषय एवं शैली में विभिन्नता होते हुए भी इन लेखों में किसी टकराव अथवा पुनरावृत्ति का आभास नहीं होगा।

इन व्याख्यानों एवं लेखों में से अधिकांश मूलतः अरबी में लिखे गये थे। फिर उसको लेखक ने स्वयं अथवा उसके कुछ एक सम्बन्धियों ने उर्दू में अनुवाद किया और वह विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। लेखक को कुछ दिनों से यह बात खटक रही थी और दिल में चटकियां लेती थी कि अरब देशों के शिक्षित समाज के बहुत से लोगों का सम्बन्ध—(विशेषकर वह जो अरब देश भक्ति के आन्दोलन से प्रभावित हैं और जिन पर उस साम्री[1] का ऐसा जादू चल गया है

---

1. एक स्थान साम्रा का रहने वाला जिसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम बनी इस्राईल से बनावटी सोने-चाँदी के बछड़े की पूजा कराई थी।

जिसको कुछ दिनों से मिस्र में जगाया गया है) उस महान आत्मा से जो उनकी हर प्रकार की नेकनामी का स्रोत है और जिससे उनको दीन व दुनिया की दौलत व इज़्ज़त मिली अब बहुत धूमिल और कमज़ोर पड़ गया है। और अधिकतर औपचारिकता मात्र बन कर रह गया है जिसमें इश्क़ की तड़प और ज़िन्दगी का बाँकपन नहीं, हालाँकि क़ुरआन व हदीस[1] की स्पष्ट आयतों के अनुसार इस प्रकार का रागात्मक सम्बन्ध वांछित है जिसमें वह महान आत्मा स्वयं अपने और अपने अत्यधिक प्रिय सगे सम्बन्धियों तथा अत्यधिक प्रिय धन दौलत से अधिक प्रिय हो और दुनिया की हर चीज़ से बढ़कर उसके प्रति श्रद्धा और सम्मान हो। इसके लिए शरीअत (इस्लामी आचार संहिता) में अत्यन्त विस्तृत एवं जतनपूर्ण व्यवस्था की गयी है और दूरगामी निर्देश व आदेश दिये गये हैं[2]।

---

1. तिब्रानी (क़ुरआन की सुप्रसिद्ध टीका) के अनुसार—अनुवाद: 'तुम में से कोई उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसको उसकी अपनी ज़ात (व्यक्तित्व) से अधिक प्रिय न हूँ'। सहीहीन (हदीस की छः सुप्रसिद्ध किताबें) के अनेक कथनों में पिता, सन्तान और तमाम इन्सानों का उल्लेख है।

2. उदाहरण के लिए सहाबा क्राम (हज़रत मोहम्मद सल० के सत्संगी) को आपके सामने ज़ोर से बोलने, आवाज़ पर आवाज़ बुलन्द करने की रोक है। सूरे हुजरात में है—अनु० : 'ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें पैग़म्बर स० की आवाज़ से ऊँची न करो और जिस प्रकार आपस में एक दूसरे से ज़ोर से बोलते हो उस प्रकार उनके समक्ष ज़ोर से न बोला करो ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म नष्ट हो जायें और तुमको ख़बर भी न हो' इसपर यह सज़ा की ख़बर (वईद) सुनाई गई है कि इससे आशंका है कि तुम्हारे कर्म अकारत हो जायेंगे और तुमको पता भी न चलेगा।

इसी प्रकार आपको आवाज़ देकर हुजरा-ए-मुबारक से बुलाना

[शेष पेज 9 पर

यह परिवर्तन एक बड़े ख़तरा की निशानी और एक बहुत बड़े इनक़्लाब एवं दुर्भाग्य का द्योतक है और इससे हर उस सहृदय एवं संवेदनशील मुसलमान को बेचैन होना चाहिए जिसका विश्वास यह है कि अरब ही इस दौलत के सबसे पहले और सबसे बड़े अमानतदार और संरक्षक थे और इस्लामी दुनिया के अस्तित्व तथा स्थायित्व के लिए आवश्यक है कि वह सदैव इस शक्ति के स्रोत और इस दौलत के संरक्षक बने रहें, और उनसे इस्लामी दुनिया को यह लाभ मिलता रहे।

इस परिस्थिति से प्रभावित होकर मैंने यह उचित समझा कि अपनी उन अरबी तक़रीरों और लेखों को जो अपने-अपने समय पर लाभप्रद सिद्ध हुए थे, और अरब साहित्यकारों एवं साहित्य प्रेमियों ने जिनको बहुत पसन्द किया था, एकत्र कर के प्रकाशित कर दूं। शायद वह किसी बुझे हुए दिल में दबी प्रेम की चिनगारी को हवा देने और क़ौम परस्ती (राष्ट्रीयता) के प्रभाव को कम करने में कुछ सक्रिय हो

पेज 8 का शेष]

और चिल्ला-चिल्ला कर आपको आवाज़ देना एक अत्यन्त अप्रिय एवम् अवांछित कर्म है। इसी सूरे में है—(अनु० : 'जो लोग तुमको हुजरों के बाहर से आवाज़ देते हैं—उनमें अधिकांश बुद्धिहीन हैं') सामान्य व्यक्तियों की भाँति आपको पुकारना और आवाज़ देना भी अनुचित एवम् अवांछित है। सूरे नूर में है—अनु०: 'मोमिनो! पैग़म्बर स० के बुलाने को ऐसा न समझना जैसा तुम आपस में एक दूसरे को बुलाते हो'।

इसी आधार पर आपकी मृत्यु के पश्चात् आपकी बीवियों से शादी करना नाजायज़ क़रार दिया गया कि ऐसी दशा में हृदय में वह श्रद्धा व सम्मान क़ायम नहीं रह सकता जो आपके साथ ज़रूरी और ईमान की सलामती के लिए लाभप्रद एवं सहायक है (अनु० : 'और तुमको यह उचित नहीं कि ख़ुदा के पैग़म्बर स० को तक्लीफ़ दो और न यह कि उनकी बीवियों से कभी उनके बाद निकाह करो। यह ख़ुदा के नज़दीक बड़े गुनाह का काम है'।)

सके कि दूर देश के एक अजमी वासी[1] के वश में इससे अधिक कुछ और नहीं । और उनके समक्ष अजमी भक्तों की भक्ति व प्रेम तथा उनके रागात्मक सम्बन्ध के नमूने भी प्रस्तुत किये जायें जिससे उनकी अरबी ग़ैरत (लज्जा) व इज़्ज़त को चोट लगे और प्रेम की दबी हुई चिनगारियाँ भड़क उठें ।

पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान, भौतिक-दर्शन, आधुनिक शिक्षा तथा राष्ट्रीयता के नेतृत्व में जो शत्रु-सेनायें अजम को छोड़कर अब स्वयं अरब में और दूर स्थित इस्लामी देशों से हटकर अब हरम[2] के अन्दर प्रवेश कर गई हैं उनका सामना करने और उनके प्रभाव को नष्ट करने का यही उपाय समझ में आया कि प्रेम के मतवालों और इश्क़ के दीवानों की एक नई सेना तैयार की जाये जो भौतिकवाद की इन सेना टुकड़ियों का सामना कर सकें । मन्द बुद्धि और ओछे ज्ञान का सफलतापूर्वक सदैव प्रेम ही ने मुक़ाबिला किया है । और उसकी ज्वाला ने अलगाव, अरुचि, तथा स्वार्थ एवं लिप्सा के जंगल को जलाकर राख कर दिया है ।

फलतः 1384 हि० के हज के अवसर पर यह संकलन तैयार करके मदीना तैयबा के एक विद्वान प्रकाशक शेख़ मोहम्मदुल नमनकानी अलमकतबुल इल्मिया के सुपुर्द किया । इस किताब का नाम लेखक ने "अत्तरीक़ इलल मदीना" रक्खा कि इससे अरब वासियों को मदीना तैयबा और इस्लाम के अन्तिम केन्द्र की ओर नये सिरे से मार्गदर्शन होता है और मानो इक़बाल ही के शब्दों में आधुनिक सभ्यता के पुजारियों और राष्ट्रीयता के समर्थक अरबों के लिए अपने वास्तविक केन्द्र की ओर वापसी का आह्वान और उनकी इन पंक्तियों का निचोड़ है :

भटके हुए आहू को फिर सूये हरम ले चल
इस शहर के ख़ूगर को फिर वुस्अते-सहरा दे ।।

---

1. ग़ैर अरब देश वासी ।
2. काबा शरीफ़ का प्रांगण ।

लेखक ने अपने विद्वान मित्र आचार्य अली तन्तावी, भूतपूर्व न्यायाधीश, हाईकोर्ट, सीरिया से जिनको वह वर्तमान काल में अरबी का सब से बड़ा लेखक और साहित्यकार समझता है, अनुरोध किया कि वह पुस्तक पर प्राक्कथन अथवा परिचय के रूप में कुछ लिख दें। उन्होंने कृपा कर यह अनुरोध पूरा किया और इस प्रकार पूरा किया कि उसने पुस्तक में एक बहुमूल्य वृद्धि कर दी तथा पुस्तक और लेखक दोनों की इज्ज़त बढ़ाई।

यह संकलन उर्दू में 'कारवाने मदीना' के नाम से प्रकाशित हुआ और अब इसे हिन्दी में 'मदीने की डगर' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है कि राष्ट्रीयता के आन्दोलन, पाश्चात्य शिक्षा के परिणाम तथा वर्तमान युग का भौतिकवाद हर जगह अपना प्रभाव दिखा रहे हैं और दिलों की उस गर्मी और उस तड़प को हानि पहुँचा रहे हैं जो इस उम्मत (इस्लाम) की बहुत बड़ी पूंजी है और प्रतिकूल प्रभावों का मुक़ाबिला करने की इसके अन्दर सबसे बड़ी ताक़त है।

आशा है कि यह पुस्तक हिन्दी भाषी व्यक्तियों के लिए उसी प्रकार लाभप्रद और प्रेम की ज्वाला को प्रज्वलित करने में इंशा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) उसी प्रकार प्रभावी सिद्ध होगी जिस प्रकार इसके अरबी तथा उर्दू संस्करण।

अबुलहसन अली नदवी
दायरा शाह अलम उल्ला
रायबरेली

दि० 31–7–1980 ई०
17–9–1400 हि०

वह पुस्तक जिसका आभार अविस्मरणीय है

आज मैं उस किताब की बात करूंगा जिसका मुझ पर बहुत बड़ा एहसान (उपकार) है और मैं उसके सहृदय और रसूल स० के परम भक्त लेखक के लिए ईश्वर के समक्ष हृदय से कामना करता हूँ जिन्होंने अपनी उस किताब के द्वारा मुझे एक ऐसी निधि दी जो मेरे निकट ईमान के बाद सबसे क़ीमती चीज़ बल्कि वास्तव में ईमान ही का एक अंश है। उस किताब का नाम "रह्मतुल लिलआलमीन" है और उसके लेखक मौलाना क़ाज़ी मोहम्मद सुलेमान् मंसूरपुरी र०[1] हैं।

उस किताब की एक रोचक कहानी है :—

मेरे अग्रज[2] (जो मेरे पिता के देहान्त के बाद उस समय से मेरी शिक्षा-दीक्षा के ज़िम्मेदार रहे जब मेरी अवस्था केवल नौ वर्ष की थी) इस बात का विशेष ध्यान रखते थे कि उस बाल्यावस्था में किन किताबों का अध्ययन मेरे लिए लाभप्रद होगा और किताबों के चयन में ऐश्वरीय अनुकम्पा निरन्तर उनका साथ देती। फलतः उन्होंने मुझे एक किताब 'सीरत ख़ैरूल बशर' पढ़ने के लिए दी। उनकी प्रबल इच्छा थी कि मैं सीरत की किताबों का अधिकाधिक अध्ययन करूँ। उनका विश्वास था कि चरित्र-निर्माण, दृढ़ विश्वास, आचरण के विकास तथा ईमान के बीजारोपण एवं विकास के लिए सीरत से अधिक प्रभावी कोई चीज़ नहीं, इसीलिए प्रारम्भ ही से सीरत की किताबों से मुझे एक विशेष लगाव और उनके अध्ययन तथा उनसे कुछ प्राप्त करने की एक लगन पैदा हो गई।

मैं प्रकाशन सूचियों को, जो प्रकाशक प्रायः प्रकाशित करते रहते

---

1. रह्मतुल्लाह अलैहि (अल्लाह की रह्मत हो उन पर)।
2. डा० हकीम सैय्यद अब्दुल अली रह० भूतपूर्व प्रबन्धक नदवतुल उलमा, लखनऊ।

हैं, सदैव बड़े शौक़ से देखता था। एक बार मेरी नज़र शिबली बुक डिपो, लखनऊ की प्रकाशन सूची में 'रहमतुल लिलआलमीन' पर पड़ी। और मैंने इस किताब का आर्डर भेजवा दिया। उस समय इस किताब की दो प्रतियाँ उपलब्ध थीं, और एक बच्चे का सीमित बजट (जिसकी अवस्था 11 या 12 वर्ष से अधिक न थी) इस किताब को ख़रीदने में निश्चय ही असमर्थ था, किन्तु बच्चे बजट के नियमों और आर्थिक बन्धनों के पाबन्द नहीं होते वह केवल अपनी सहज इच्छाओं और भावनाओं के साथ चलते हैं।

एक दिन डाकिया हमारे छोटे-से गाँव (दायरा शाह अलमउल्ला, रायबरेली) में डाक लेकर आया तो उसके पास उस किताब का पैकेट भी था। मैंने देखा कि मेरे पास उस किताब को खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। मेरी माता जी (अल्लाह उन्हें दीर्घजीवी करे)[1], जिनको अपने अनाथ बच्चे प्रिय थे, ने भी यह रक़म देने में असमर्थता व्यक्त की, इसलिए कि उस समय उनके पास कुछ न था। मैंने देखा कि इस समय मेरा कोई हामी व मददगार नहीं है, सिवाय उस सिफ़ारिशी के जिससे बच्चों ने प्रायः काम लिया है और उनको इसका अनुभव है कि उसकी सिफ़ारिश कभी रद्द नहीं की जाती। यह वह सिफ़ारिश है जिसकी मदद सैयदना उमैर बिन अबी वेक़ास रज़ी०[2] ने ली थी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी सिफ़ारिश स्वीकार की थी और उनको ग़ज़वा-ए-बदर (बदर की लड़ाई) में सम्मिलित होने की इजाज़त दे दी थी। यह आँसुओं और सहज ही मचल जाने की सिफ़ारिश है जो अल्लाह तआला और उसके प्रिय भक्तों के यहाँ अब भी बड़ी क़ीमती है और ज़रूर सुनी जाती है।

---

1. इस लेख के बाद 1388 हि० में उनका देहान्त हो गया। वह बड़ी संयमी थीं। हाफ़िज़े कुरआन थीं। शेर भी कहती थीं। कई लाभप्रद किताबें, और दुआ व मुनाजात (वन्दना) के संकलन उनकी यादगार हैं।
2. रज़ीअल्लाह तआला अन्हु (अल्लाह राज़ी हो उनसे)।

फलतः यही हुआ। मेरी माता का वात्सल्य स्वाभाविक रूप से उमड़ पड़ा। उन्होंने कहीं से जोड़-जुटा कर यह रक़म मेरे सुपुर्द की और मैंने किताब प्राप्त कर ली।

अब मैंने किताब पढ़ना प्रारम्भ किया, और किताब ने मेरे दिल को हिलाकर रख दिया किन्तु यह कोई अप्रिय एवं दुखदायी झंझाबात न था। यह अत्यधिक कोमल, हृदयग्राह्य एवं मर्मस्पर्शी झोंका था। मेरा हृदय खुशी से इस प्रकार झूम उठा जैसे बसन्त के आगमन से कोई झूलों से लदी डाल झूम उठे और फूलों के बोझ से झुक जाये।

यह वह अन्तर है जो सामान्य विजेताओं, विख्यात व्यक्तियों की जीवन-गाथा और सीरत-ए-नववी की किताबों में आप देखेंगे। वह किताबें भी हृदय में एक उल्लास जिज्ञासा एवम् उमंग पैदा करती हैं किन्तु वह जिज्ञासा हृदय पर बाहर से आक्रमण करती है तथा अप्रिय प्रभाव छोड़ती है, इसके विपरीत सीरत-ए-नववी की किताबों से हृदय में जो उमंग उठती है वह स्वयं मोमिन के दिल से उठती है, उसको आराम व राहत पहुँचाती है शान्ति तथा सुख प्रदान करती है।

मेरा दिल इस किताब के साथ ऐसा बिन्ध गया और उसने उससे ऐसा आनन्द लेना प्रारम्भ किया मानों वह इसी किताब की प्रतीक्षा में था। मैंने इस किताब के अध्ययन के दौरान एक नई और अजीब लज़्ज़त महसूस की, यह उन तमाम लज़्ज़तों से भिन्न थी, जिनसे मैं अपनी अवस्था के उस चरण में (इस अभिवृद्धि के साथ कि मैं प्रारम्भ ही से बहुत संवेदनशील सिद्ध हुआ हूँ) परिचित था। यह न भूख के समय मज़ेदार खाने की लज़्ज़त थी और न ईद के दिन नये जोड़े की, और न उल्लास और उत्साह के साथ खेलकूद की, न निरन्तर परिश्रम, पढ़ाई और व्यस्तता के बाद छुट्टी की, न किसी पुराने दोस्त और प्रिय मेहमान की मुलाक़ात की। यह इन तमाम मज़ों और लज़्ज़तों में किसी लज़्ज़त के समान न थी। यह एक ऐसी लज़्ज़त थी जिसका मज़ा तो मैं जानता था किन्तु उसको शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता

था। और मुझे स्वीकार है कि उसको निश्चित रूप से बयान करने तथा एक अथवा दो शब्दों में उसको व्यक्त करने में मैं आज भी असमर्थ हूँ। अधिक से अधिक जो मैं कह सकता हूँ वह यह कि यह आत्मा का स्वाद है। क्या बच्चे आत्मा नहीं रखते और उन्हें आत्मा के स्वाद की अभिभूति नहीं होती ? नहीं, ईश्वर साक्षी है, छोटे बच्चे बड़ों से अधिक सुन्दर आत्मा के मालिक हैं और अधिक सही समझ रखते हैं भले ही वह उसे बयान न कर सकें।

मैं इस मस्त कर देने वाली तथा झुमा देने वाली किताब में जब क़ुरैश के उन लोगों के हालात पढ़ता था जो इस्लाम लाये थे और जिसके परिणाम स्वरूप उनको कठोर से कठोर ताड़नायें दी जाती थीं और वे उनको धैर्य तथा साहस बल्कि आनन्द के साथ सहर्ष सहन करते थे, तो उस समय मैं महसूस करता था कि यहाँ एक लज्जत और भी है जिससे धनवान व सम्पन्न लोग और वह लोग जिनको दुनिया वाले सौभाग्यशाली और भाग्य का धनी समझते हैं, एकदम अपरिचित हैं, और वह यह है कि आपको सद्मार्ग में कोई कष्ट झेलना पड़े, अक़ीदे की ख़ातिर ज़ुल्म सहन करना पड़े और धर्म प्रचार के रास्ते में आपको अपमानित किया जाये। यह वह लज्जत है कि विजय व सफलता, तरक़्क़ी व इक़बाल तथा सम्मान व कुर्सी की कोई लज्जत इसका मुक़ाबिला नहीं कर सकती। मैंने देखा कि मेरा दिल इस बात का इच्छुक है कि उसको यह लज्जत, सम्मान एवं सौभाग्य प्राप्त हो, चाहे पूरे जीवन में एक ही बार सही।

मैंने मसअब बिन उमैर रज़ी० का हाल पढ़ा। वह मसअब बिन उमैर रज़ी० जिनकी सुरुचि, साज सज्जा, सरस प्रवृति एवम् उच्च स्तरीय जीवन-यापन की बड़ी ख्याति थी। क़ुरैश की आँखों के तारे और सुख-समृद्धि के दुलारे नौजवान, मक्का में सैर के लिए निकलते तो शरीर पर सौ-सौ दिरहम की पोशाक होती और सारे शहर में उसकी चर्चा हो जाती थी। किन्तु उन्होंने जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि-वसल्लम के हाथ में अपना हाथ दिया तो दौलतमन्दी के इन सारे दिखावों

मे हाथ झाड़ कर खड़े हो गये। अब वह मोटा-झोटा कपड़ा पहनते और सादा जीवन व्यतीत करते और यथासमय अपनी चादर को बबूल के काँटे से अटकाने पर मजबूर होते। इसे देखकर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आँखों में आँसू आ जाते। और आपको याद आता कि पहले उनका जीवन कितना सुखमय एवं सुरुचिपूर्ण था। यह नवयुवक जब ग़ज़्व-ए-ओहद (ओहद की लड़ाई) में शहीद हुआ तो उसके शरीर पर केवल एक चादर थी और वह भी इतनी छोटी कि अगर पैरों पर डाली जाती तो सर खुल जाता और सर ढाँका जाता तो पैर खुल जाते। उस समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनका सर ढंक दो और पैरों पर घास डाल दो। मैंने यह क़िस्सा पढ़ा तो इसने मुझे मुग्ध कर लिया और मेरे मन, मस्तिष्क पर पूरा अधिकार कर लिया। इस क़िस्मे से मुझे अन्दाजा हुआ कि सुरुचिपूर्ण एवं सुख-समृद्धि के जीवन, बहुमूल्य वस्त्र, स्वादिष्ट और अच्छे खाने तथा आलीशान महल के अतिरिक्त मनुष्य की एक और जरूरत भी है जहाँ तक इन धनवानों और बादशाहों की पहुँच नहीं। एक ऐसी लज्जत भी है जिससे यह पेट के पुजारी और इन्द्रियों के दास अनभिज्ञ हैं। मैंने अपने दिल को देखा तो मैंने महसूस किया कि उसको इस जरूरत और लज्जत की चाह और तलब है और उसकी निगाह में इस उच्च एवम् उत्कृष्ट मान्यता की जितनी क़दर और इज्जत है, अमीरों एवं धनवानों के चकाचौंध करने वाले पोशाकों, खोखले दिखावों और निर्जीव प्रदर्शनों की नहीं।

मैंने इस किताब में नबी स० की हिजरत का क़िस्सा भी पढ़ा, वह क़िस्सा जिससे अधिक प्रभावशाली एवं सजीव क़िस्सा मैंने नहीं पढ़ा और जिसको लेखक ने अपनी किताब में बड़ी सादगी एवं सच्चाई के साथ बयान किया है—रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने में पदार्पण करते हैं तमाम दर्शनाभिलाषी आपकी प्रतीक्षा में आखें बिछा रहे हैं। एक-एक क़बीला आपके समक्ष उपस्थित होता है और पूर्ण निष्ठा एवं सादगी के साथ रिकाब थाम कर निवेदन करता है—श्रीमन्

आप हमारे यहाँ पधारें। सब कुछ आप पर न्यौछावर है। आप इरशाद फ़रमाते हैं—यह ऊँटनी अल्लाह ने भेजी है। इसे रास्ता दे दो। फिर यह उस जगह ठहरती है जहाँ आज मस्जिद-ए-नबवी का दरवाजा है और बैठ जाती है। विधि का विधान जाहिर हो जाता है कि यह सौभाग्य हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ी० को प्राप्त हो। अबू अय्यूब अंसारी रज़ी० अपने प्रिय अतिथि को सादर घर लाते हैं और सामान उतरवाते हैं।

मैं इस इज्ज़त पर अबू अय्यूब अंसारी रज़ी० की प्रसन्नता को पढ़ सकता था जिसे भाग्य ने उनके द्वार तक पहुँचा दिया था और देख सकता था कि वह प्रसन्नचित सउल्लास आपके आतिथ्य में व्यस्त हैं। मैंने महसूस किया जैसे मेरा दिल मुझे छोड़कर अब नबी स० की ऊँटनी के साथ-साथ है और उसी के संग मदीना पहुँचा है। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कि यह मनोरम दृश्य मैं अपनी इन आँखों से देख रहा हूँ। विजेताओं, बादशाहों और इतिहास के सुप्रसिद्ध सूरमाओं की विजयश्री उनके वैभव के प्रदर्शन और चोबदारों के नक़्क़ारे मुझे उस समय तुच्छ एवम् अवर्णनीय प्रतीत होने लगे। किसी इन्सान से किसी इन्सान की मुहब्बत व वफ़ादारी का यह दृश्य मेरे हृदय में और मेरी स्मरण शक्ति पर सदा के लिए नक़्श हो गया।

मैंने ओहद का क़िस्सा भी पढ़ा। वह सत्य एवं निष्ठा, त्याग व बलिदान, ईमान व यक़ीन शराफ़त तथा हौसला मन्दी की एक ऐसी कहानी है जिससे अधिक महान्, सुन्दर एवं मनमोहक कहानी इतिहास में अन्यत्र न मिलेगी। जब अनस बिन अन नज़र ने, यह देखकर कि लोगों के हाथ पैर ढीले पड़ गये हैं और कह रहे हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गये, यह ऐतिहासिक वाक्य कहा, "जिस पर रसूलुल्लाह सल० ने जान दी है तुम भी उसी पर जान दे दो।" और किसी ने यह कहा कि, 'मुझे ओहद के उस पार से जन्नत की खुश्बू आ रही है' जिनकी सबसे बड़ी मनोकामना यह थी कि वह अपनी ज़िन्दगी की आख़री सांसों में किस प्रकार हुज़ूर सल० की सेवा

में पहुँच जायें। जब उनको उठाकर वहाँ ले जाया गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों पर उन्होंने जान दे दी।

अबू दुजाना रज़ी० ने किस प्रकार हुजूर सल्ल० को बचाने के लिए अपने को ढाल बना लिया था और सारे तीर उनकी पीठ पर गिर रहे थे और वह आप पर झुके हुए थे। इस प्रकार प्रेम व बलिदान की घटनायें एक-एक करके मेरे सामने आती गईं। कभी मेरा दिल भर आता और मैं रो देता कभी मदमस्त होकर झूम उठता।

इस किताब और इसके सहृदय लेखक का वह एहसान जो मैं कभी न भूलूंगा यह है कि इसने मेरे दिल में प्रेम की उस दबी चिनगारी को हवा दी है जिसके बिना जीवन नीरस है और जिसके बिना इस जीवन का कोई मूल्य नहीं। यही प्रेम तथा मतवालापन तो जीवन का लक्ष्य एवं सार है। यही वह प्रेम है जिसके कारण मनुष्य को विवेकशील एवं सर्वोत्कृष्ट प्राणी होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यही वह "महामन्त्र" है जिसके कारण साधारण एवं सामान्य स्तर के व्यक्तियों ने ऐसे-ऐसे काम किये और इतनी बड़ी सेवा की जो अत्यन्त शक्तिशाली, धनाढ्य एवं बड़ी हैसियत वाले लोग न कर सके। इसके कारण एक व्यक्ति ने बड़े-बड़े राष्ट्रों पर विजय प्राप्त किया। और किसी एक राष्ट्र ने जब इस महामन्त्र का प्रयोग किया तो सारी दुनिया उसके चरणों पर गिर गई।

यह वह प्रेम है जिसका आज इस उम्मत में नितान्त अभाव हो चुका है। उसके पास बड़ी दौलत है, नाना प्रकार का विशाल ज्ञान भण्डार है पद और सम्मान है और अनेक देशों की बागडोर उसके हाथों में है किन्तु वह जीवन के इस 'अमृत' से वंचित है। फलत: वह एक निर्जीव लाश होकर रह गई है जिसको ज़िन्दगी अपने कान्धों पर उठाये फिरती है।

यह वह प्रेम स्रोत है जिससे सर्वाधिक वंचित पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित आधुनिक शिक्षित समाज है जिसके फलस्वरूप आज उसकी आत्मा सबसे अधिक दुखी है, उसके भौतिकवाद के मुलम्मे में मुक़ाबला

की ताक़त सबसे कम है, वह मिल्लत के अन्य वर्गों से अधिक अप्रभावी एवं बेवज़न है, उसका जीवन सबसे अधिक ग्रसित एवम् अप्रिय और उसके प्रयास सबसे अधिक निरुद्देश्य एवं निस्फल हैं।

इस किताब और इसके लेखक के प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ कि इसने मेरे प्रेम के सोये हुए तारों को छेड़ दिया और इस उभरती हुई सक्रिय एवं सजीव तथा सजग मुहब्बत का रुख़ उस व्यक्तित्व की ओर फेर दिया जिससे अधिक इस प्रेम का कोई अन्य हक़दार नहीं जो इस सृष्टि में नेकी व एहसान और जमाल व कमाल का सबसे बड़ा स्वरूप है और जिससे अधिक सूरत व सीरत से युक्त तथा सर्वगुण सम्पन्न इन्सानी नमूना सृष्टा ने कोई और नहीं बनाया (सल०)।

इस उम्मत की सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि इसने दिल से अपना नाता तोड़ लिया है और मुहब्बत की लज़्ज़त से महरूम है।

ख़ुदा की सलामती हो आप पर ऐ सुलेमान! मुझे आपकी किताब से दो ऐसे वरदान प्राप्त हुए कि इस्लाम के बाद उनसे बड़ा कोई अन्य वरदान नहीं।

एक प्रेम का वरदान दूसरे उसके समुचित उपभोग का वरदान—सचमुच यह वरदान कितना बड़ा है!!

"नव-युग"

यूं तो इस दुनिया की उम्र बहुत बताई जाती है मगर यह दुनिया अनेक बार सो-सो कर जागी है और मर-मर कर जिन्दा हुई है। पिछली बार जब यह मौत की नींद से जागी और उसे सद्‌बुद्धि प्राप्त हुई वह, वह दिन था जब मक्का के सरदार अब्दुल मुत्तलिब के घर पोता पैदा हुआ। वह पैदा हुआ तो यतीम (अनाथ) था मगर उसने पूरी मानवता के संरक्षता की और दुनिया को नया जीवन दिया। सोते में जो उम्र कटी वह क्या उम्र है? आत्म हत्या में जो समय व्यतीत हुआ, वह क्या जीवन है? इसलिए सच पूछिये तो वर्तमान दुनिया की काम की उम्र चौदह सौ वर्ष से अधिक नहीं।

छठवीं शताब्दी में मानवता की गाड़ी एक ढलुवाँ रास्ते पर पड़ गई थी, अन्धकार फैलता जा रहा था, रास्ते का ढाल बढ़ता जा रहा था। और गति तीव्र होती जा रही थी। इस गाड़ी पर मानवता का पूरा क़ाफ़िला और आदम अलै०[1] का सारा कुटुम्ब सवार था। हज़ारों साल की सभ्यतायें और लाखों मनुष्यों की थाती थीं। गाड़ी के सवार मीठी नींद सो रहे थे अथवा अधिक एवम् अच्छी जगह पाने के लिए परस्पर हाथापाई कर रहे थे, कुछ तुनक मिज़ाज थे जो साथियों से रूठते तो एक ओर से दूसरी ओर मुँह फेर कर बैठ जाते कुछ ऐसे जो अपने जैसे लोगों पर हुक्म चलाते कुछ खाने-पकाने में व्यस्त थे, कुछ गाने-बजाने में लीन। किन्तु कोई यह न देखता कि गाड़ी किस खड्ड की ओर जा रही है और अब वह कितना निकट रह गया है।

मानवता की काया में ताज़गी थी किन्तु उत्साह न था, मस्तिष्क हारा-थका, आत्मा निर्जीव, नाड़ी डूब रही थी, आँखें पथराने वाली

---

1. अलैहिस्सलाम।

थीं, ईमान व यक़ीन की दौलत से बहुत दिन पहले यह मानवता वंचित हो चुकी थी। पूरे-पूरे देश में ढूंढने से एक ईमान व यक़ीन वाला न मिलता, अन्धविश्वास का हर तरफ़ बोल-बाला था, मानवता ने अपने को स्वयं अपमानित किया था, इन्सान ने अपने गुलामों एवं चाकरों के सामने सर झुकाया था। एक खुदा के अतिरिक्त सबके सामने उसको झुकना स्वीकार था। हराम उसके मुंह को लग गया था।

शराब उसकी घुट्टी में गोया पड़ी थी।
जुवा उसकी दिनरात की दिल लगी थी ।।

बादशाह दूसरों के खून पर पलते थे और बस्तियां उजाड़ कर बसते थे। उनके कुत्ते मौज करते और इन्सान दाना-दाना को तरसते। जीवन स्तर इतना ऊँचा हो गया था कि जीना दूभर था। जो इस मापदण्ड पर पूरा न उतरे वह जानवर समझा जाता था। नये-नये टैक्सों से किसानों और शिल्पकारों की कमर टूटी जाती थी। लड़ाई और बात की बात में देशों का सफ़ाया और राष्ट्रों की तबाही उनके बायें हाथ का खेल था। सब जीवन की चिन्ताओं से ग्रसित और अन्याय तथा अत्याचार से दुखित थे। पूरे-पूरे देश में एक अल्लाह का बन्दा ऐसा न मिलता था जिसे अपने पैदा करने वाले की रज़ामन्दी की चिन्ता हो, अथवा रास्ते की सच्ची तलाश हो। अर्थात् यह नाम की ज़िन्दगी थी किन्तु वास्तव में एक विशाल एवं व्यापक आत्म हत्या।

दुनिया का सुधार इन्सानों के बस से बाहर था। पानी सर से ऊँचा हो गया था। प्रश्न एक देश की आज़ादी और एक राष्ट्र की तरक्क़ी का न था, प्रश्न पूरी मानवता की मौत और ज़िन्दगी का था। सवाल किसी एक ख़राबी का न था। मानवता के शरीर पर धब्बे ही धब्बे थे उसकी चीर की धज्जियाँ उड़ गई थी। सुधार के लिए जो लोग आगे बढ़े वह यह कहकर पीछे हट गये :—

"तेरे दिल में तो बहुत काम रफ़ू का निकला"

दार्शनिक एवं ज्ञानी, कवि तथा साहित्यकार कोई इस मैदान का मर्द न निकला। सब इस महामारी के शिकार थे। रोगी-रोगी का

इलाज किस प्रकार करे ? जो स्वयं यक़ीन से ख़ाली हो वह दूसरों को किस प्रकार यक़ीन से भर दे ? जो स्वयं प्यासा हो दूसरों की प्यास किस प्रकार बुझाये ? मानवता के भाग्य पर भारी ताला पड़ा था और कुंजी गुम थी। जीवन की डोर उलझ गई थी और छोर न मिलता था।

इस दुनिया के मालिक को अपने घर का यह नक़्शा पसन्द न था। अन्ततः उसने अरब की आज़ाद और सादा क़ौम में, जो प्रकृति से निकट थी, एक पैग़म्बर (सल०) भेजा कि पैग़म्बर (सल०) के अतिरिक्त अब इस बिगड़ी दुनिया को कोई बना नहीं सकता था उस पैग़म्बर का नाम मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह है, अल्लाह के लाखों सलाम व दरूद हों उन पर :—

> ज़बाँ पे बार-ए-ख़ुदाया यह किसका नाम आया।
> कि मेरे नुत्क़ ने बोसे मेरी ज़बां—के लिए ॥

इस ज़िन्दगी की हर चीज़ सलामत थी किन्तु बेजगह व बेक़रीना। जीवन चक्र घूम रहा था किन्तु ग़लत रुख़ पर। असल ख़राबी यह थी कि ज़िन्दगी की चूल खिसक गई थी। और सारी ख़राबी इसी की थी। यह चूल क्या थी ? अपना और इस दुनिया के बनाने वाले का सही ज्ञान, उसी की बन्दगी और ताबेदारी का फ़ैसला, उसके पैग़म्बरों को मानना और उनके निर्देश व शिक्षा के अनुसार जीवन व्यतीत करना और दूसरी ज़िन्दगी का यक़ीन।

उन्होंने इस ज़िन्दगी की चूल बिठा दी। किन्तु अपने जीवन और अपने कुटुम्ब के जीवन को ख़तरे में डाल कर और अपना सब कुछ न्योछावर करके। उन्होंने इस उद्देश्य के लिए बादशाही का ताज ठुकरा दिया। दौलत और वैभव की बड़ी से बड़ी भेंट को अस्वीकार किया। अपना प्यारा वतन छोड़ा, आजीवन बे आराम रहे, पेट पर पत्थर बांधे, कभी पेट भर खाना न खाया, घर वालों के साथ भूखे रहे। दुनिया की हर क़ुरबानी व हर ख़तरे में आगे-आगे रहे, और हर फ़ायदा व हर लज़्ज़त से दूर रहे, लेकिन दुनिया से उस समय तक

प्रस्थान न किया जब तक कि दुनिया को सही रुख़ पर न डाल दिया और इतिहास का रुख़ न बदल दिया।

तेईस वर्ष में दुनिया का रुख़ पलट गया। दुनिया का अन्तःकरण जाग गया, नेकी की प्रवृत्ति पैदा हो गई। अच्छे-बुरे की परख होने लगी। ख़ुदा की बन्दगी का रास्ता खुल गया। इन्सान को इन्सान के सामने और अपने सेवकों के सामने झुकने में शर्म महसूस होने लगी। ऊँच-नीच का भेद समाप्त हुआ क़ौमी व नस्ली गुरूर टूटा, स्त्रियों को अधिकार मिले। कमजोरों व बेवसों की ढाँढ़स बँधी। यहां तक कि देखते-देखते दुनिया बदल गई जहाँ पूरे-पूरे देश में एक ख़ुदा से डरने वाला नज़र न आता था, वहाँ लाखों की संख्या में ऐसे इन्सान पैदा हो गये जो अन्धेरे-उजाले में ख़ुदा से डरने वाले थे जो यक़ीन की दौलत से मालामाल थे जो दुश्मन के साथ इन्साफ़ करते थे जो न्याय के मामले में अपनी औलाद की परवाह न करते थे, जो अपने विरुद्ध गवाही देने को तैयार रहते, जो दूसरों के आराम के लिए दुख सहन करते, जो निर्बल को शक्तिशाली पर प्राथमिकता देते, रात के इबादत-गुजार (ईश भक्त) दिन के शहसवार, दौलत, शासन, शक्ति एवं इच्छा सब पर भारी और सबके अधिकारी। केवल एक अल्लाह के अधीन, केवल एक अल्लाह के गुलाम। उन्होंने इस दुनिया को ज्ञान, विश्वास, शान्ति, सभ्यता, आध्यात्मवाद और ख़ुदा के जिक्र (जप) से भर दिया।

जमाने की ऋतु बदल गई। इन्सान क्या बदला, जहान बदल गया। धरती और आकाश बदल गये। यह सारा इन्क़लाब उसी पैग़म्बर (सल०) के प्रयास एवं शिक्षा का फल है। आदम अलै० की सन्तान पर आदम अलै० के किसी सपूत का इतना एहसान नहीं जैसा मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दुनिया के इन्सानों पर है। अगर इस दुनिया से वह सब ले लिया जाय जो मोहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसको दिया है तो मानव सभ्यता हजारों वर्ष पीछे चली जायेगी और उसे जीवन की अत्यधिक

प्रिय चीज़ों से वंचित होना पड़ेगा।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैदाइश का दिन मुबारक क्यों न हो कि इस दिन दुनिया का सबसे मुबारक इन्सान पैदा हुआ जिसने इस दुनिया को नया ईमान और नई ज़िन्दगी दी :—

बहार अब जो दुनिया में आई हुई है।
यह सब पौद उन्हीं की लगाई हुई है ॥[1]

---

1. रबीउल अव्वल के प्रोग्राम में इसे आकाशवाणी, लखनऊ से प्रसारित किया गया।

जीवन-लहरी

ज़रा चौदह सौ वर्ष पहले की दुनिया पर नज़र डालिए। ऊँचे-ऊँचे महलों, सोने-चाँदी के ढेरों और राजसी वस्त्रों को छोड़ दीजिए। यह तो आपको पुराने चित्रों के अल्बम और मुर्दा अजायब घरों में भी नज़र आ जायेंगे। यह देखिये कि मानवता भी कभी जीती-जागती थी। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक चहुँदिश फिर कर देख लीजिए और साँस रोक कर आहट लीजिये कहीं उसकी नाड़ी चलती हुई और उसका दिल धड़कता हुआ मालूम होता है ?

जीवन के महासागर में बड़ी मछली छोटी मछली को खाये जा रही थी। बुराई का भलाई पर, दुर्जनता का सज्जनता पर, कामनाओं का बुद्धि पर, तन की आपूर्ति का मन की आपूर्ति पर नियन्त्रण हो चुका था किन्तु इस वस्तुस्थिति के विरुद्ध इस विशाल वसुन्धरा पर कहीं विरोध न था। मानवता के चौड़े ललाट पर क्रोध से उत्पन्न एक भी बल दिखाई नहीं पड़ता था। सारी दुनिया नीलाम की एक मण्डी बन चुकी थी। बादशाह व वज़ीर, अमीर व ग़रीब इस मण्डी में सबके दाम लग रहे थे और सब कौड़ियों में बिक रहे थे। कोई ऐसा न था जिसका पुरुषार्थ ख़रीदारों के हौसले से ऊँचा हो और जो पुकार कर कहे कि यह सारा वातावरण मेरी एक उड़ान के लिए पर्याप्त नहीं। यह सारी दुनिया और यह पूरी ज़िन्दगी मेरे हौसले (आकांक्षा) से कम थी इसलिए एक दूसरा अमर जीवन मेरे लिये बनाया गया। मैं इस मरणशील जीवन और इस सीमित संसार के एक शतांश पर अपनी आत्मा का सौदा क्योंकर कर सकता हूँ ?

राष्ट्रों एवं देशों के और उनसे आगे क़बीलों और बिरादरियों के तथा उनसे आगे बढ़कर वंशज एवं घरानों के छोटे-से-छोटे घिरौंदे बन गये थे। और बड़े-बड़े साहसी पुरुष जो अपने समय के सूरमा कह-

लाते थे बौनों की तरह इन घिरौंदों में रहने के आदी बन चुके थे। किसी को इनमें तंगी और घुटन महसूस नहीं होती थी। इससे विशाल मानवता की परिकल्पना उनकी चिन्तन शक्ति से परे थी।

मानवता एक बेजान लाश बनकर रह गई थी जिसमें कहीं आत्मा की तड़प, दिल की धड़कन और इश्क़ की हरारत (प्रेम मन्दाग्नि) बाक़ी नहीं रही थी। मानवता के धरातल पर एक बिन बोया जंगल उग आया था। हर तरफ़ झाड़ियाँ थीं जिनमें खूँखार जानवर और ज़हरीले कीड़े थे। अथवा दलदल थे जिनमें शरीर से लिपट जाने वाली और खून चूसने वाली जोंकें थीं। इस जंगल में हर प्रकार के डरावने जानवर, हर प्रकार का शिकारी पक्षी और इन दलदलों में हर प्रकार की जोंक पाई जाती थी। किन्तु आदम की सन्तानों की इस बस्ती में कोई आदमी नज़र नहीं आता था। जो आदमी थे वह गुफ़ाओं के अन्दर, पहाड़ों के ऊपर और ख़ानक़ाहों तथा कुटियों में एकान्त में छिपे हुए थे और अपनी खैर मना रहे थे अथवा जीवित रहते हुए जीवन की वास्तविकताओं से आँखें बन्द करके दर्शनशास्त्र से अपना दिल बहला रहे थे अथवा कविता से अपना ग़म ग़लत कर रहे थे और जीवन के रणक्षेत्र में कोई योद्धा न था।

अचानक मानवता के इस सर्द जिस्म में गर्म खून की एक लहर दौड़ी। नाड़ी में हरकत और शरीर में कुसमुसाहट पैदा हुई। जिन पक्षियों ने इसको मुर्दा समझकर इस बेजान शिथिल शरीर पर बसेरा कर रक्खा था उन्हें अपने घर हिलते हुए और अपने शरीर डोलते हुए महसूस हुए। प्राचीन जीवन गाथाकार (सीरत निगार) इसको अपनी विशिष्ट भाषा में यूँ बयान करते हैं कि क़िला-शाह-ए-ईरान के महल के कंगूरे गिरे और आतिश-ए-पारस एकदम बुझ गई। आधुनिक युग का इतिहासकार इसको इस प्रकार बयान करेगा कि मानवता के इस आन्तरिक उद्‌गार से उसका बाह्य आवरण हिलने लगा, उसके स्तब्ध एवं शिथिल धरातल पर जितने कमज़ोर और बोदे क़िले बने हुए थे, वह हिलने लगे, मकड़ी का हर जाला टूटता और तिनकों का हर

घोंसला बिखरता नज़र आया। पृथ्वी के आन्तरिक उद्गार से यदि विशालकाय भवन पतझड़ के पत्तों के समान झड़ सकते हैं तो पैग़म्बर के शुभागमन से किस्राव क़ैसर की स्वरचित व्यवस्था में कम्पन क्यों न होगी ? जिन्दगी का यह गर्म ख़ून जो मानवता के सर्द जिस्म में दौड़ा मोहम्मद रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अभ्युदय की घटना है जो सभ्य संसार के हृदय मक्का मुअज्ज़मा में घटित हुई।

आपने दुनिया को जो सन्देश दिया उसके संक्षिप्त शब्द जीवन के सारे पहलुओं पर हावी हैं। इतिहास साक्षी है कि मानव जीवन की जड़ें और उसके हवाई क़िलों की बुनियादें कभी इस ज़ोर से नहीं हिलाई गई जैसी इस पैग़ाम 'ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि' के एलान से हिलाई गई। और दुनिया की मन्द बुद्धि पर कभी ऐसी चोट नहीं पड़ी थी जैसी इन शब्दों से पड़ी। वह गुस्से से तिलमिला गया और उसने झुंझला कर कहा "क्या उन सबको, जिनकी हम पूजा करते थे और जिनके हम बन्दे बने हुए थे, उड़ाकर एक ही आराध्य (माबूद) रक्खा है ? यह तो बड़े अचम्भे की बात है"। इस विचार के प्रतिनिधियों ने फ़ैसला किया कि यह हमारी जीवन व्यवस्था के विरुद्ध एक गहरी और सोची-समझी साज़िश है और हमको इसका मुक़ाबिला करना है। अनुवाद : "उनके सरदार और ज़िम्मेदार एक-दूसरे के पास गये कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो, यह तो तय की हुई बात मालूम होती है"।

ज़िन्दगी और इन्सानियत की सारी परिकल्पना पर इस नारे ने गहरी चोट लगाई जो मन के पूरे साँचे और ज़िन्दगी के पूरे ढाँचे को प्रभावित करती थी। इसका मतलब था जैसा कि आज तक समझा जाता रहा यह दुनिया कोई अपने आप उगा जंगल नहीं बल्कि यह माली का लगाया हुआ सुसज्जित उपवन है और इन्सान इस उपवन का सर्वोत्तम फूल है, यह फूल जो हज़ारों वसन्त की पूंजी है, निरुद्देश्य नहीं कि मल-दल कर रख दें। इन्सान की इन्सानित के जौहर की उसके निर्माता के अतिरिक्त कोई क़ीमत नहीं लगा सकता। उसके

अन्दर वह असीम तलब, वह उच्च साहस, वह पवित्र आत्मा और वह बेचैन दिल है कि सारी दुनिया मिलकर उसे सन्तुष्ट नहीं कर सकती। उसके लिए अमर जीवन और एक असीम संसार की ज़रूरत है जिसके सामने यह ज़िन्दगी एक बूंद और यह दुनिया बच्चों का घिरौंदा है। वहाँ की राहत के सामने यहाँ की राहत और वहाँ की तकलीफ़ के सामने यहाँ की तकलीफ़ कोई अस्तित्व नहीं रखती। इसलिए मानव की स्वाभाविक ज़रूरत एक अल्लाह की इबादत, उसका आत्मज्ञान अल्लाह की मर्ज़ी का तालिब और उसका जीवन उसके लिए संघर्ष है। इन्सान को किसी प्राणी, किसी मनगढ़न्त ताक़त, किसी पेड़ और पत्थर, किसी प्रकार की धातु और निर्जीव, किसी धन-दौलत, किसी पद व सम्मान, किसी शक्ति और किसी आध्यात्मवाद एवम् उठान के सामने बन्दों की तरह झुकने और हरी घास की तरह पद दलित होने की ज़रूरत नहीं। वह केवल एक ऊँचाई के सामने सर्वाधिक नीचा और सारी नीचाइयों के मुक़ाबिले में सर्वाधिक ऊँचा है। वह सारे संसार का स्वामी और एक ईश्वर का सेवक है। उसके सामने फ़रिश्तों को सज्दा करा के और उसको अल्लाह के अतिरिक्त हर एक के सज्दे से मना करके सिद्ध कर दिया कि सृष्टि की शक्तियाँ जिनके फ़रिश्ते (देवदूत) अमानतदार हैं, उसके सामने नतमस्तक हैं और उसका सर इसके जवाब में अल्लाह के सामने झुका हुआ है।

दुनिया की बुद्धि पर ऐसा पानी फिर गया था कि वह भौतिकवाद और पेट पूजा की सीमाओं से परे आसानी से नहीं सोच सकती थी। उसकी बुद्धि मनुष्य को सर्वोत्कृष्ट प्राणी मानने में असमर्थ थी। उन्होंने कुछ मापदण्ड बना रक्खे थे। हर नये व्यक्ति को उस कसौटी पर कसते थे। जीवन की जो छोटी-छोटी ऊँचाइयाँ बन चुकी थीं, हर ऊँचे व्यक्ति को उन्हीं के सामने लाकर देखते थे। बहुत कुछ सोच विचार के बाद वह मोहम्मदर्रसूलुल्लाह स० के लिए इसके आगे न सोच सके कि या तो वह धन-दौलत के अथवा सरमायादारी (सामन्तवाद) व बादशाही के या भोग-विलास के इच्छुक हैं। वास्तविकता तो यह है

कि उस समय तक दुनिया का अनुभव इससे अधिक था ही नहीं। उन्होंने आपके पास एक शिष्टमण्डल भेजा जो उस काल की विचार-धारा का सच्चा प्रतिनिधित्व करते थे और उसने जो कुछ कहा वह उस काल की अनुभूति का सही चित्रण करता है और मोहम्मदरसूलुल्लाह स० ने जो उसका उत्तर दिया वह नबूवत का सही प्रतिनिधित्व और मुसलमानों की हक़ीकत का वास्तविक चित्रण था। आपने सिद्ध कर दिया कि आप इनमें से किसी चीज के इच्छुक नहीं। आप लोगों को जिस चीज की ओर बुलाते हैं वह उनकी उन ऊँची चीजों से इससे भी अधिक ऊँची है जितना आकाश इस धरातल से। आप अपनी स्वयं की राहत और तरक़्क़ी के लिए चिन्तित नहीं बल्कि मानव जाति के उद्धार और उसकी राहत के लिए बेचैन तथा व्याकुल हैं। आप इस दुनिया में अपने लिए कोई नक़ली जन्नत बनाने के इच्छुक नहीं बल्कि जन्नत से निकाले हुए इन्सान को असली जन्नत में सदा के लिए दाख़िल कराना चाहते हैं। आप अपनी सरदारी के लिए प्रयत्नशील नहीं बल्कि तमाम इन्सानों को इन्सान की ग़ुलामी से निकाल कर असली बादशाह (ईश्वर) की ग़ुलामी में दाख़िल करना चाहते हैं। इसी बुनियाद पर यह उम्मत बनी और यही पैग़ाम लेकर तमाम दुनिया में फैल गई। उसके दूतों ने जो अपने अन्दर प्रचार की सच्ची लगन और इस्लाम की सही जिन्दगी रखते थे, किस्रा और क़ैसर के भरे दरबार में साफ़ कह दिया कि हमको अल्लाह ने इस काम के लिए नियुक्त किया है कि हम उसके बन्दों को बन्दों की बन्दगी से निकाल कर अल्लाह की ग़ुलामी में, दुनिया की तंगी से निकाल कर उसकी विशालता में और धर्मों के अन्याय से निकालकर इस्लाम के न्याय में दाखिल करें। उनको जब अपने नियमानुसार प्रशासन स्थापित करने और चलाने का अवसर मिला तो वह जो कुछ कहते थे और जिसकी ओर दूसरों को बुलाते थे उसे स्वयं जारी करके दिखा दिया। उनके आदर्श प्रशासन काल में किसी इन्सान की बन्दगी नहीं होती थी बल्कि अल्लाह की बन्दगी होती थी। किसी व्यक्ति अथवा वर्ग का आदेश नहीं चलता था।

उनका हाकिम जिसको वह ख़लीफ़ा कहते थे मनुष्य के तनिक से अपमान पर कह उठता था कि लोग माँ के पेट से आजाद पैदा हुए थे, तुमने उनको कब से गुलाम बना लिया ? उनका बड़े से बड़ा हाकिम बड़ी-बड़ी बादशाहतों (साम्राज्यों) की राजधानियों में इस सादगी से रहता था कि लोग उसको मजदूर समझकर उसके सर पर बोझ रख देते थे, और वह उसको उनके घर पहुँचा आता था। उनका दौलतमन्द इन्सान इस प्रकार जिन्दगी गुजारता था कि मालूम होता था कि वह इस जिन्दगी को जिन्दगी और इसकी राहत को राहत ही नहीं समझता, उसकी नज़र किसी और जिन्दगी पर है और वह किसी और राहत का तालिब है।

इस उम्मत का अस्तित्व दुनिया के प्रत्येक कोने में भौतिकवादी तथ्यों और शारीरिक राहतों के अतिरिक्त एक बिल्कुल दूसरी हक़ीक़त के अस्तित्व का एलान है। इसका प्रत्येक व्यक्ति पैदा होकर और मर कर भी इस हक़ीक़त का एलान करता है कि दुनिया की ताक़तों से बड़ी एक दूसरी ताक़त है और इस जीवन से अधिक सार्थक दूसरा जीवन है। वह दुनिया में आता है तो उसके कान में इस हक़ की अजान दी जाती है, मरता है तो इस गवाही व प्रदर्शन के साथ उसे विदा किया जाता है। जब यह दुनिया मरणासन्न-सी हो जाती है और शहर की सारी आबादी रोजी-रोटी के संघर्ष में पूर्णतया व्यस्त हो जाती है और दुनिया में भौतिक जरूरतों के अतिरिक्त कोई अन्य जरूरत और अनुभूति के पटल को छूने वाली हक़ीकतों के अतिरिक्त कोई अन्य हक़ीक़त जीती-जागती नज़र नहीं आती, इसकी वही अजान इस भ्रम को तोड़ देती है और एलान करती है कि नहीं शरीर और पेट से अधिक मूल्यवान एक दूसरी हक़ीक़त है और वही कामयाबी की राह है। "हैय्या अलस्सलाह; हैय्या अलल्फ़लाह" (आओ नमाज की ओर, आओ भलाई की ओर) हक़ के इस नारे के सामने बाज़ार का शोर दब जाता है और सब हक़ीकतें इस हक़ीक़त के सामने मान्द पड़ जाती हैं और अल्लाह के बन्दे इस आवाज पर दौड़ पड़ते हैं। जब

रात को पूरा शहर मीठी नींद सोता है और जीती जागती दुनिया एक विशाल क़ब्रिस्तान होती है, अचानक मौत की इस बस्ती में जीवन स्रोत इस प्रकार उबलता है जिस प्रकार रात के अन्धेरे में प्रभात की पौ फटे। "अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नोम (बेशक नमाज़ नींद से बेहतर है) से ऊँघती सोती इंसानियत को ताज़गी और जिन्दगी का नया सन्देश मिलता है। जब किसी ताक़त व सल्तनत का कोई भ्रम ग्रसित "मैं तुम्हारा सबसे ऊँचा पालनहार हूँ" और "मेरे अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं", का नारा लगाता है तो एक ग़रीब मुअज्ज़िन उसी के साम्राज्य की ऊँचाईयों से "अल्लाहु अकबर" कहकर उसके खुदाई के दावे की हँसी उड़ाता है और "अशहदु अनलाइलाह इल्लल्लाह" (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई माबूद (पूज्य) नही) कहकर वास्तविक बादशाहत का एलान करता है। इस प्रकार दुनिया की प्रवृत्ति बिगाड़ से सुरक्षित रहती है।

इस इरफ़ान (भक्ति) ईमान और एलान का स्रोत मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अभ्युदय और आप की शिक्षा व बुलावा (दावत) है। और अब यही इरफ़ान, ईमान और एलान दुनिया के नवजीवन का स्रोत और प्रत्येक सही और सच्ची क्रान्ति का एकमात्र साधन है :—

> यह सहर जो कभी फ़रदा है कभी है इमरोज़।
> नहीं मालूम कि होती हैं कहाँ—से पैदा॥
> वह सहर जिससे लरज़ता है शबिस्तान-ए-वजूद।
> होती है बन्द-ए-मोमिन की अज़ाँ से पैदा॥

(अर्थात् यह सुबह जिसमें कोई ठहराव नहीं, नहीं मालूम कहाँ से पैदा होती है। किन्तु वह सुबह जिसके साथ जन-जीवन डोलने लगता है मुअज्ज़िन की अज़ान से पैदा होती है)।

ग़ार-ए-हिरा की रौशनी में[1]

मैं जबल-ए-नूर (नूर पर्वत) पर चढ़ा और उसके ग़ार (गुफ़ा) पर जो ग़ार-ए-हिरा के नाम से मशहूर है, जा खड़ा हुआ। यहां पहुंच कर मैंने अपने दिल में कहा यही जगह है जहां अल्लाह ने हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पैग़म्बरी प्रदान की और पहली बार वही (ईशवाणी) अवतरित हुई। यहीं से वह पौ फटी जिसकी किरनों ने दुनिया में उजाला फैलाया और उसे नया जीवन दिया। यह दुनिया प्रतिदिन एक नये प्रभात का स्वागत करती है, किन्तु प्रायः इस प्रभात में कोई नयापन नहीं होता। इनकी आमद से इंसान तो जाग जाते हैं किन्तु दिल सोते रह जाते हैं। आत्मा सुसुप्तावस्था में पड़ी रहती है। ऐसे झूठे प्रभात का क्या महत्व है? हां, इस ग़ार से वास्तव में प्रभात की पौ फटी थी जिसके प्रकाश ने हर चीज़ को चमकाया और जिसकी आमद ने हर प्राणी को जगाया। इस प्रभात ने इतिहास का रुख़ मोड़ा और ज़माने का रंग बदला।

इस प्रभात से पहले मानव जीवन का स्वाभाविक प्रवाह रुका हुआ था। उसके प्रत्येक द्वार पर भारी-भारी ताले पड़े थे। उसकी अक़्ल (बुद्धि) पर ताला पड़ा था, जिसको खोलने में ज्ञानी और विद्वान असमर्थ थे। मनुष्य का अन्तःकरण बन्दी था जिसको आज़ादी दिलाने में धर्म के उपदेशक और समाज सुधारक असफल थे। मानव हृदय के पट बन्द थे जिसे खोलने में क़ुदरत की निशानियां (विधि संकेत) और आंख खोल देने वाले घटना चक्र असफल हो चुके थे।

---

1. यह तक़रीर सन् 1950 ई० में सऊदी रेडियो स्टेशन, जद्दा से अरबी में प्रसारित की गई। हिन्दी अनुवाद तक़रीर के उर्दू अनुवाद पर आधारित है।

क्षमताओं पर ताले पड़े थे जिन्हें सक्रिय बनाने में शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था तथा वातावरण एवं समाज असमर्थ थे। पाठशालायें अर्थ विहीन होकर रह गई थीं, जिनको उपयोगी तथा सुफल बनाने में विद्वान और पंडित असफल थे। न्यायालय खुले होने के बावजूद बन्द थे जिनसे न्याय प्राप्त करने के लिए मज़लूम (उत्पीड़ित) प्रजा की फ़रियादें (याचना) बेअसर थीं। पारिवारिक समस्यायें उल्झी हुई थीं जिनको सुलझाने में समाज सुधारक एवं विचारक असमर्थ थे राज-महलों पर ताले पड़े थे जिनमें मेहनतकश (पुराषार्थी) किसान, पिसे हुये मज़दूर तथा मज़लूम प्रजा का गुज़र न था। दौलतमन्दों और अमीरों के ख़ज़ाने बन्द थे जिनके कपाट खोलने में असहायों की भूख, उनकी औरतों के नग्न शरीर तथा उनके दूध पीते बच्चों की बिलक असमर्थ थी। बड़े-बड़े समाज सुधारक पूर्ण आत्म विश्वास के साथ मैदान में आये, बड़े-बड़े क़ानून साज़ों ने बीड़ा उठाया किन्तु वह इन अगिनत तालों में से कोई एक ताला भी खोलने में सफल न हो सके। कारण यह था कि इन तालों की असल कुंजी उनके हाथ में न थी, वह कुंजी गुम हो चुकी थी और ताला बिना अपनी कुंजी के कभी खुल नहीं सकता। उन्होंने अपनी बनाई हुई कुंजियों से काम लेना चाहा लेकिन वह इन तालों को न लगीं और एक ताला भी न खोल सकीं। कुछ एक ने इन तालों को खोलने के बजाय तोड़ने की कोशिश की किन्तु उल्टे इस कोशिश में उनके औज़ार टूट गये और हाथ भी ज़ख्मी हो गये।

ऐसे समय में सभ्य संसार से अलग-थलग एक छोटे से पहाड़ के ऊपर गुमनाम तथा देखने में तुच्छ स्थान (ग़ार-ए-हिरा) में दुनिया की वह गुत्थी सुलझी जो न बड़े-बड़े राज्यों की राजधानियों में सुलझ सकी और न विशालकाय विद्याकेन्द्रों में, और न ही ज्ञान व साहित्य के भव्य सदनों में। यहाँ दुनिया के पालनहार ने हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पैग़म्बरी के रूप में मानव जाति पर एक महान उपकार का द्वार खोला और शताब्दियों की

खोई हुई कुंजी पुनः मानवता को मिल गई। यह कुंजी है ईमान-अल्लाह पर, उसके रसूल पर तथा प्रलय के दिन पर। इस कुंजी से आपने शताब्दियों के उन बन्द तालों को एक-एक करके खोला जिसके फलस्वरूप मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के पट खुल गये। आपने जब नबूवत की इस कुंजी को बुद्धि के ताले पर रक्खा तो उसकी सारी गुत्थियां खुल गयीं। उसकी सिलवटें दूर हो गयीं वह विवेकशील होकर सृष्टि में व्याप्त खुदा की निशानियों से लाभ उठाने लगी। उसमें सृष्टि के निर्माता को पाने, विभिन्नता में एकता का दर्शन करने तथा शिर्क[1] व बुतपरस्ती (मूर्ति पूजा) तथा अन्ध विश्वास को बेकार समझने की क्षमता उत्पन्न हुई। इस कुंजी से आपने मानव के अन्तःकरण को जागृत किया उसकी सोयी हुई चेतना में हरकत और जिन्दगी पैदा हुई। बन्धनों से आज़ाद होकर उसकी अधर्म एवं विनाशकारी प्रवृत्ति सृजनात्मक प्रवृत्ति में बदल गयी। और उसे सन्तुष्टि प्राप्त होने लगी। जिसके बाद उसमें किसी असत्य के घुस पैठने की गुंजाइश न रही। गुनाह उसके लिए असह्य हो गया यहां तक कि गुनाहगार (पापी) अल्लाह के रसूल स० के सामने जाकर स्वयं अपना गुनाह बताता, उसे स्वीकार करता और अपने लिए कठोरतम दण्ड की याचना करता है। एक गुनहगार औरत अपने लिए संगसारी[2] की सजा की याचना करती है। अल्लाह के रसूल स० इस्लामी आचार्य संहिता के लोच को ध्यान में रखते हुए सजा को कुछ दिन के लिए स्थगित कर देते हैं। वह स्त्री अपने गांव वापस चली जाती है। न उसके पीछे सी० आई० डी० नियुक्त किया जाता है न उसे दोबारा समय पर हाजिर करने के लिए पुलिस नियुक्त की जाती है। किन्तु वह समय पर फिर मदीना पहुंचती है और स्वयं को उस

---

1. अल्लाह की ज़ात में किसी को शरीक करना।
2. बलात्कार के भोगी व्यक्ति पर उस समय तक पत्थरों की वर्षा करना जब तक वह मर न जाय। (अनु०)

सज़ा के लिए सहर्ष प्रस्तुत करती है जो निश्चय ही क़त्ल से भी अधिक कठोर एवं कष्टदायक है। ईरान की विजय के समय एक ग़रीब फ़ौजी के हाथ क़िस्रा का क़ीमती मुकुट आ जाता है, वह उसे कपड़ों में छिपा लेता है और गुप्त रूप से अपने कमांडर को ले जाकर देता है ताकि अमानतदारी का हक़ तो अदा हो किन्तु उसका ढिंढोरा न हो।

इन्सानों के बन्द दिलों पर जब यह कुंजी लगाई गई तो एकदम काया पलट गई। अब वह ईश्वर के भय से कांपते थे, घटना चक्रों से सीख प्राप्त करते थे। सृष्टि में बिखरी हुई क़ुदरत की निशानियों का अस्तित्व अब उनके लिए लाभप्रद था अब वह मज़लूमों का हाल देखकर तड़प जाते और ग़रीबों, बेकसों के साथ नफ़रत का बर्ताव करने के बजाय प्रेम का बर्ताव करने लगे। इस प्रकार नबूवत की इस कुंजी ने जब इन्सानों की इन जन्मजात् क्षमताओं एवं शक्तियों को स्पर्श किया जो दीर्घकाल से ठिठुरी पड़ी थीं और जो लाभप्रद होने के बजाय हानिकारक सिद्ध हो रही थीं, तो वह चिंगारी की तरह भड़क उठीं और बाढ़ की तरह मौजें मारती हुई उबल पड़ी और सही रुख़ पर लग गई। इसका परिणाम यह हुआ कि क्षमताओं के उभरने का अवसर न मिलने के कारण जो लोग बेकार हो गये थे अब वह क़ौमों के बेहतरीन रखवाले और संसार के अच्छे प्रशासक होने लगे। जो व्यक्ति कल तक किसी एक क़बीले (वंशज) मात्र अथवा एक शहर मात्र का विख्यात सिपाही समझा जाता था, वह अब बड़े-बड़े साम्राज्यों और ऐसे-ऐसे देशों का विजेता सिद्ध हुआ जो शक्ति एवं समृद्धि में अद्वितीय थे।

इस कुंजी से आपने विद्या मन्दिरों के ताले खोले और उनमें नया जीवन फूंका। यद्यपि शिक्षा और शिक्षक की दयनीय दशा इस सीमा तक पहुंच गई थी कि शिक्षा से न शिक्षकों को दिलचस्पी बाक़ी थी न शिक्षार्थियों को। आपने ज्ञान का महत्व बताया, विद्वानों की गरिमा बढ़ाई, और ज्ञान व धर्म के पारस्परिक सम्बन्ध को समझाया। फलतः

लोग विद्या केन्द्रों के उत्थान के लिए तन-मन-धन से प्रयास करने लगे। मुसलमानों का प्रत्येक घर और प्रत्येक मस्जिद स्वयं में एक पाठशाला बन गई। प्रत्येक मुसलमान अपने लिए शिक्षार्थी और दूसरे के लिये शिक्षक बन गया क्योंकि इनका दीन ही स्वयं ज्ञानार्जन के लिये सबसे बड़ा प्रेरक था।

आपने इस कुंजी से अदालतों के द्वार खोले। अब प्रत्येक न्यायमूर्ति इस क़ाबिल था कि उस पर एक न्यायाधीश की हैसियत से भरोसा किया जा सके। और प्रत्येक मुसलमान हाकिम उच्चकोटि का न्याय-प्रिय हाकिम था। और यह सच्चे मुसलमान सबके सब मात्र अल्लाह के लिये सच्ची गवाही देने वाले थे। जब अल्लाह और आख़िरत (पारलौकिक जीवन) के लेखा-जोखा पर ईमान मज़बूत हुआ तो न्याय की धारा बह चली। अन्याय और अत्याचार समाप्त हुआ और झूठी गवाहियां और अन्यायपूर्ण फ़ैसले लुप्त हो गये। पारिवारिक मामले जिनमें इतना बिगाड़ आ गया था कि बाप-बेटे के बीच, भाई-भाई के बीच, पति-पत्नी के बीच ख़ींचतान और छीनाझपटी का बाज़ार गर्म था, खानदानों से निकलकर यह बीमारी समाज की रगों में फैल गई थी। यही खींचतान नौकर और मालिक के सम्बन्धों में व्याप्त थी, राजा और प्रजा के सम्बन्धों में व्याप्त थी, बड़े और छोटे के सम्बन्धों में व्याप्त थी। प्रत्येक व्यक्ति का यह हाल था कि अपना हक़ किसी प्रकार छोड़ना न चाहता था और दूसरे का हक़ किसी प्रकार देना न चाहता था। स्वयं कोई चीज़ खरीदता तो नाप तौल पर तीखी नज़र रखता किन्तु यदि दूसरे के हाथ कुछ बेचता तो कम से कम नापने एवं तौलने का प्रयास करता। आपने इस ख़ानदानी एवं सामाजिक व्यवस्था की गुत्थियों को सुलझाया। ख़ानदान एवं समाज में ईमान का बीज बोया। लोगों को अल्लाह की नाराज़गी से डराया और अल्लाह का यह इरशाद सुनाया अनुवाद : 'ऐ लोगो! रब से डरो। तुम सब को एक नफ्स (प्राणी) से पैदा किया (इस प्रकार) कि उसका एक जोड़ा पैदा किया और दोनों (की नस्ल) से

फैला दिये बहुत से मर्द और बहुत सी औरतें। और उस अल्लाह से डरो जिसके वास्ते से तुम मांगते हो और निकट सम्बन्धों का ध्यान रक्खो। बेशक अल्लाह तआला तुम पर निगरां है'।

(सूरे निसा-1)।

आपने ख़ानदान और समाज के व्यक्तियों में से प्रत्येक पर कुछ जिम्मेदारियाँ डालीं। और पारिवारिक व्यवस्था को नये सिरे से न्याय, सच्चाई और प्रेम की बुनियादों पर क़ायम किया। समाज को भी उच्चकोटि का न्यायप्रिय बनाया। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अमानतदारी की ऐसी भावना और ईश्वर से भय की ऐसी अनुभूति जागृत कर दी कि इस समाज के अमीर और अधिकारी तक संयम और सादा जीवन के नमूने बन गये। क़ौम के सरदार अपने को क़ौम का सेवक समझने लगे। राज्यों के राजा महाराजा अपनी हैसियत अनाथों के संरक्षक से अधिक नहीं समझते थे कि यदि अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति कुछ है तो राज्य के धन दौलत से कुछ मतलब नहीं। यदि नहीं है तो आवश्यकतानुसार लेनें पर संतुष्ट हैं। इसी ईमान की बदौलत आपने दौलतमन्दों और व्यापारियों में दुनिया से अरुचि और आख़िरत (पारलौकिक जीवन) के प्रति रुचि पैदा की। उन्हें बतलाया कि माल असल में अल्लाह का है तुम्हें उसने इसे ख़र्च करने में अपना नायब बनाया है।

अनुवाद : "और ख़र्च करो उस (माल व दौलत) में से जिसमें अल्लाह ने तुम्हें अपना नायब बनाया है"। (सूरे हदीद—7)

अनुवाद : "और दो (उन जरुरतमन्दों को) उस माल में से जो अल्लाह ने तुम्हें दे रक्खा है"। (सूरे नूर—33)।

उन्हें तिजौरियों में बन्द करके रखने और खुदा की राह में ख़र्च न करने से यह कहकर डराया :

अनुवाद : "और वह लोग जो सोने-चाँदी के ख़ज़ाने जमा करते हैं और अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते आप उन्हें बशारत दे दीजिए दर्दनाक अज़ाब की उस दिन जबकि उनके ख़ज़ानों को दोज़ख़

की आग में तपाया जायेगा, फिर उससे उनकी पेशानियाँ (माथे) करवटें और पुश्तें दाग़ी जांय। लो! यह है तुम्हारा जमा किया हुआ अब चखो इसका मज़ा"। (सूरे तौबा—34, 35)।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने पैग़ाम और अपनी दावत (आह्वान) के द्वारा जिस व्यक्ति को तैयार करके जीवन-क्षेत्र में उतारा था वह अल्लाह पर सच्चा ईमान रखने वाला, नेकी को पसन्द करने वाला, अल्लाह के भय से डरने वाला, अमानतदार, पारलौकिक जीवन को सांसारिक जीवन पर प्राथमिकता देने वाला, और आध्यात्मवाद को भौतिकवाद से अधिक महत्वपूर्ण समझने वाला था। वह इस बात पर हृदय से विश्वास रखता था कि दुनिया तो मेरे लिए बनाई गई है किन्तु मैं आख़िरत के लिए पैदा किया गया हूँ। फलत: यह व्यक्ति यदि व्यापार के क्षेत्र में उतरता तो अत्यन्त सच्चा और ईमानदार सिद्ध होता, अगर मजदूरी करता तो बड़ा परिश्रमी और दयानतदार मजदूर सिद्ध होता, अगर मालदार हो जाता तो एक सहृदय एवम् उदार दौलतमन्द सिद्ध होता, अगर ग़रीब होता तो शराफ़त को क़ायम रखते हुए मुसीबतों को झेलता, अगर किसी अदालत की कुर्सी पर बिठा दिया जाता तो बड़ा समझदार एवं न्यायप्रिय जज सिद्ध होता, अगर राजा होता तो एक सच्चा एवं निःस्वार्थ प्रशासक सिद्ध होता, अगर स्वामी होता तो सहृदय एवं विनम्र होता, अगर नौकर होता तो अत्यधिक चुस्त और स्वामिभक्त नौकर होता और अगर क़ौम (राष्ट्र) का माल व दौलत उसे सौंप दिया जाता तो बड़ी चौकसी के साथ उसकी निगरानी करता।

यह थीं वह ईंटें जिनसे इस्लामी सोसाइटी का निर्माण हुआ और जिन पर इस्लामी शासन की इमारत खड़ी की गई। इसी कारण इस्लामी सोसाइटी और हुकूमत पर व्यक्तियों की नैतिकता, उनकी प्रवृत्ति तथा उनके, रहन-सहन की व्यापक छाप दिखाई पड़ती थी। व्यक्तियों के गुण समाज में जमा हो गये थे। उसके व्यापारी की सच्चाई और ईमानदारी उसमें थी, उसके ग़रीब का आत्मगौरव और

मेहनत उसमें थी, उसके मजदूर का परिश्रम उसमें था, उसके दौलतमन्द की उदारता एवं सहृदयता उसमें थी, उसके जज का विवेक और न्याय उसमें था, उसके प्रशासकों की निष्ठा उसमें थी, उसके स्वामी की विनम्रता और सहृदयता उसमें थी, उसके सेवकों की चुस्ती और गाढ़ा पसीना उसमें था, उसके ख़ज़ान्ची (कोषाध्यक्ष) की निगरानी और जागरुकता उसमें थी। यह हाल इस्लामी हुकूमत का था। यह हुकूमत सच्चाई पर चलने वाली थी, विश्वासों एवं सिद्धान्तों को लाभ और रीति पर प्राथमिकता देती थी जन साधारण को लूटने के बजाय उनके आचरण एवं विश्वास को बनाने और सँवारने का जी तोड़ प्रयास करती थी। इसका फल यह था कि व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ईमान व अमल, सत्यनिष्ठा, परिश्रम व प्रयास और न्याय के फूल खिले थे और इन सदाबहार फूलों की सुगन्ध जीवन के कोने-कोने में फैली थी।

मैं ग़ार-ए-हिरा पर खड़ा-खड़ा यह तमाम बातें अपने मन में सोच रहा था। मैं अपने इन विचारों और बीते दिनों की याद में इतना लीन हो गया कि थोड़ी देर के लिए अपने आप को भूल गया। मेरी कल्पना मुझे अपने वातावरण और अपने काल से उड़ाकर अलग ले गयी। मेरी निगाहों में पिछले युग का सामान्य इस्लामी जीवन नाचने लगा। मैं उसे ध्यानमग्न होकर देखने लगा, ऐसा लगा कि वही जन-जीवन मेरे चारों ओर फैला है और मैं उसके आत्मविभोर कर देने वाले वातावरण में साँस ले रहा हूँ। कल्पना के इसी संसार में मुझे अपने ज़माने का ध्यान आया जिसके वातावरण में वस्तुतः मैं साँस लेता हूँ। मेरे मन ने कहा आज भी जीवन की सफलता और सुख शान्ति के दरवाज़ों पर कुछ नये प्रकार के ताले पड़े नज़र आ रहे हैं। समस्यायें अनेक हैं उलझाव तथा गुत्थियाँ बढ़ गई हैं। तो क्या आज भी उसी पुरानी कुँजी से यह नये ताले खुल सकते हैं।

यह प्रश्न मेरे मन में उठा। किन्तु मैंने कहा कि जब तक मैं इन तालों को भली प्रकार देखभाल न लूं, मुझे कोई उत्तर न देना चाहिए।

अतः मैंने इन तालों को हाथ लगाया तो वास्तविकता खुलकर सामने आ गई। और मैंने देखा कि ताले नये नहीं हैं, वही पुराने हैं केवल उन पर रंग नया चढ़ा है। आज भी वास्तविक समस्या व्यक्ति की समस्या है जो अन्य समस्याओं की जड़ है। व्यक्ति वह ईंट है जिससे सोसाइटी व हुकूमत बनती है। व्यक्ति का आज यह हाल है कि वह केवल पैसा और शक्ति का पुजारी है। अपने स्वः और इच्छाओं के अतिरिक्त उसे किसी चीज से मतलब नहीं रहा। इस दुनिया की क़ीमत उसकी दृष्टि में वास्तविकता से अधिक बढ़ी हुई है। वह स्वार्थ तथा कामना का पुजारी है। उसका नाता अपने पालनहार से, अल्लाह के रसूलों से और आख़िरत से बिल्कुल टूट चुका है। यह व्यक्ति का बिगाड़ है जो समाज के बिगाड़ का स्रोत और सभ्यता के दुर्भाग्य का जिम्मेदार है।

यह व्यक्ति यदि व्यापार करता है तो लालच और जमाख़ोरी की अति करता है, भाव गिरने पर माल रोक लेता है और भाव चढ़ने पर निकालता है। यह व्यक्ति यदि ग़रीब होता है तो प्रयास करता है कि अपनी ग़रीबी को दूर करने के लिए स्वयं कुछ न करे और दूसरों के परिश्रम का फल उसे मुफ्त मिल जाये। यदि मजदूरी करता है तो कामचोरी करता है। अगर दौलतमन्द होता है तो बड़ा कंजूस और कठोर हृदय। अगर शासक होता है तो लुटेरा और बेईमान साबित होता है। अगर मालिक होता है तो ज़ालिम और स्वार्थी मालिक साबित होता है जो अपने फ़ायदे और आराम के अलावा कुछ देखना नहीं चाहता। अगर ख़ज़ान्ची बना दिया जाता है तो ग़बन करता है। अगर हुकूमत का वजीर या किसी गणराज्य का राष्ट्रपति हो जाता है तो आत्मा से परे पेट का पुजारी सिद्ध होता है जो केवल अपने को और अपनी पार्टी के हितों को देखता है। और लीडर बन जाता है तो भी देश और राष्ट्र की सीमाओं से आगे नहीं बढ़ पाता, और अपने देश एवं राष्ट्र का सम्मान बढ़ाने के लिए अन्य देशों एवं राष्ट्रों की मान मर्यादा को मटियामेट करने में संकोच नहीं करता अगर विधायक

होता है तो लोगों पर बड़े-बड़े टैक्स लाद देता है। अगर वैज्ञानिक होता है तो विनाश और तबाही फैलाने वाले यन्त्र ईजाद करता है, जहरीली गैसें, बम वर्षक विमान और टैंक बनाता है जो बस्तियों को खंडहर और राख का ढेर बना डालें। ऐटम बम बनाता है जिसके विनाशकारी प्रभाव से न इन्सान बच सकते हैं न हैवान, न खेत, न बाग़ात। और जब व्यक्ति को इनके प्रयोग करने की ताक़त भी मिल जाती है तो बस्तियाँ की बस्तियाँ देखते-देखते उजड़ जाती हैं।

जब किसी समाज एवं सामाजिक व्यवस्था पर उसके अच्छे व्यक्तियों की छाप होती है तो बुरे व्यक्तियों से निर्मित समाज एवं प्रशासनिक व्यवस्था में बुराइयों का होना स्वाभाविक है। उसमें व्यापारियों की जमाख़ोरी भी होगी, लाभ की लालसा भी होगी, दीन दुखियों की आह भी होगी, मजदूर की कम मेहनत और अधिक मजदूरी की बुरी आदत भी होगी, दौलतमन्द की हविस भी होगी, प्रशासक की बुरी नियत भी होगी, नौकर की कामचोरी और ख़जान्ची का ग़बन भी उसमें होगा। उस समाज में मन्त्रियों को लाभ कमाने की प्रवृत्ति, लीडरों की देश-भक्ति, विधायकों की मनमानी, वैज्ञानिकों की भटक और धनवानों की कड़क भी होगी।

यह है वह मूल कारण जिसने तमाम बुराइयों एवम् उलझनों को जन्म दिया और जिनसे मानवता ग्रसित है। बुराई की इस जड़ का नाम भौतिकवाद की प्रवृत्ति है। कालाबाजारी, भ्रष्टाचार, मंहगाई, जमाख़ोरी, मुद्रास्फीति, सबने इसी की कोख से जन्म लिया है। बड़े-बड़े विचारक और पंडित आज तक इन गुत्थियों को न सुलझा सके। एक समस्या हल करते हैं तो दूसरी मुसीबत में फंस जाते हैं। एक गुत्थी सुलझती है तो कई और गुत्थियाँ पैदा हो जाती हैं। कहीं-कहीं तो एक समस्या का समाधान स्वयं अनेक समस्याओं को जन्म दे रहा है। मानो वैद्य के इलाज से स्वास्थ्य लाभ के बजाय नये-नये रोग पैदा हो जायं। यह उस रोगी पर नित नये प्रयोग कर रहे हैं। उन्होंने समझा कि सामन्तवादी शासन इन तमाम बुराइयों का जड़ है

अतः उसे समाप्त करके गणतन्त्रवाद की बुनियाद डाली। जब उससे भी गुत्थियाँ न सुलझीं तो फिर सामन्तशाही की ओर आये। उससे और ख़राबियाँ बढ़ते देखा तो फिर प्रजातन्त्र को अपनाया कभी पूँजीवाद की शरण ली तो कभी साम्यवाद की किन्तु समस्यायें ज्यों को त्यों बनी रहीं बल्कि पहले से कुछ अधिक उलझ गईं। क्यों? इसका कारण यह था कि समस्याओं की जड़ व्यक्ति के बिगाड़ को सुधारने का प्रयास नहीं किया गया। यह न समझा गया कि असल फ़साद और टेढ़ व्यक्ति में है जिसकी छाप समाज और शासन पर है।

लेकिन मैं तो यह कहता हूँ कि यदि यह विचारक और सुधारक इस बात को अच्छी तरह समझ भी लेते और बुराइयों की इस जड़ को पा भी लेते तो भी इसका इलाज उनके बस की बात न थी। यद्यपि उनके पास शिक्षा के प्रसार के प्रभावी साधन हैं और यह युग ही शिक्षा-दीक्षा का युग है, किन्तु उनके हाथ में वह ताक़त नहीं है जिससे व्यक्ति का रुख़ बुराई से भलाई की ओर और विनाश से सृजन की ओर मोड़ दें। क्योंकि उनके मन-मस्तिष्क आध्यात्मवाद से खाली हैं, ईमान से खाली हैं। उनके पास मन की तृप्ति और उसमें ईमान का बीजारोपण करने का सामान नहीं है। उनके हाथों से वह चीज़ निकल चुकी है जो आराधक एवम् आराध्य को जोड़ती है, जो इस जीवन के साथ पारलौकिक जीवन का नाता जोड़ती है, जो आत्मा और भौतिक पदार्थ (Matter) के बीच की कड़ी हो और नीति के साथ प्रीति का सामंजस्य पैदा करे। उनकी आत्मा का दीवालियापन, भौतिकवाद की पूजा और अहंकार अब इस सीमा तक पहुँच चुका है कि वह विनाश एवं तबाही का आख़िरी तीर भी अपने तरकश में जमा कर लेना चाहते हैं जिसकी बरबादियों से समस्त मानव जाति का अस्तित्व समाप्त हो सकता है, ईश्वर न करे, यदि इस समय दुनिया की बड़ी शक्तियों ने इन विनाशकारी हथियारों के साथ युद्ध छेड़ दिया तो निश्चय ही उनके यह नव-ईजाद हथियार मानवता एवं सभ्यता का अन्त कर देंगे।

नबूवत[1] का कारनामा

अल्लाह तआला ने अपनी वह्‌ी व नबूवत के माध्यम से अपने पैग़म्बरों को इन्सानों के सुधार एवं उनकी परिपूर्णता के लिए भेजा और नबियों ने अपने कार्यक्षेत्र का केन्द्र विन्दु इन्सान को बनाया। नबियों के माध्यम से अल्लाह तआला ने बताया कि इस दुनिया की सारी रौनक़ और चहल-पहल इन्सान से है। अगर वास्तविक मानव मौजूद है तो यह दुनिया साधनहीन होते हुए भी आबाद एवं सुखी है और अगर वास्तविक मानव मौजूद नहीं तो यह दुनिया अपनी सारी रौनक़ों के साथ किसी वीराना से कम नहीं। इस दुनिया का दुर्भाग्य यह नहीं है कि उसके पास साधनों की कमी है बल्कि दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि उन साधनों का प्रयोग ग़लत है। संसार का इतिहास साक्षी है कि उसको मानव के बिगाड़ और उसकी दुर्भावना ने तबाह (नष्ट) किया। यन्त्रों और साधनों ने इस तबाही व बरबादी में केवल वृद्धि की है।

मानव अपनी उठान, अपनी विशालता, अपने केन्द्रत्व तथा अपने विवेक के कारण इसके अधिक योग्य है कि उसको प्रयास व परिश्रम का केन्द्र बनाया जाये। यह सृष्टि बड़ी रहस्यमय, बड़ी विचित्र, अत्यन्त सुन्दर और विशाल है किन्तु मानव प्रवृत्ति के रहस्य एवम् अजूबों, उसके निहित ख़ज़ानों एवं दफ़ीनों, उसके हृदय की विशालता, उसके मन की उड़ान, उसकी आत्मा की उकताहट और गरमाहट, उसका

---

1. अल्लाह की तरफ़ से दुनिया को पैग़ाम पहुँचाने के लिए किसी मनुष्य का चयन जिसको ख़ुदा के फ़रिश्ते हज़रत जिब्रील अल्लाह का कलाम पहुँचाते थे। कुरआन के अहकाम और मुसलमानों के विश्वास के अनुसार यह क्रम मोहम्मद स० पर समाप्त हो गया।

असीम इच्छाओं, उसकी अतृप्त महत्वाकांक्षा और उसकी असीम क्षमताओं के सामने यह सब हेच हैं। ऐसे कई संसार उसके हृदय की विशालता में, और यह सारे समुद्र उसके दिल की गहराइयों में गुम हो जायें। पहाड़ उसके विश्वास का, आग उसकी प्रेम ज्वाला का और सागर उसके एक बूंद आँसू का मुक़ाबिला नहीं कर सकते उसके चरित्र की सुन्दरता के सामने हर सुन्दरता मान्द है, उसके दृढ़ विश्वास एवम् आत्म-बल के सामने हर ताक़त नतमस्तक है। इस मानव में सही विश्वास, सच्ची लगन और सच्चरित्र का पैदा करना और उससे अल्लाह की ख़िलाफ़त[1] का काम लेना नबूवत का असल कारनामा है।

हर नबी ने अपने समय में यह महान कार्य किया और ऐसे व्यक्ति तैयार किये जिन्होंने इस संसार को नया जीवन प्रदान किया। और मानव जीवन को सार्थक बनाया। नबूवत के इन कारनामों में जिनसे मानवता का माथा दमक रहा है, सबसे रौशन कारनामा मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है जिसका सर्वाधिक विवरण इतिहास के पन्नों में सुरक्षित है। मानवता के निर्माण में अल्लाह ने आपको जो कामयाबी दी वह आज तक किसी मनुष्य को प्राप्त नहीं हुई। आपने मानवता के उत्थान का कार्य जिस तल से प्रारम्भ किया उतने नीचे से किसी पैग़म्बर (ईशदूत) और किसी सुधारक को प्रारम्भ नहीं करना पड़ा। यह वह सीमा रेखा थी जहाँ मानवता और दानवता की सीमायें मिलती थीं। मानवता के निर्माण के इस कार्य को आपने जिस बिन्दु तक पहुँचाया उस तक यह कार्य कभी न पहुँचा था। आपने मानव उत्थान का कार्य सबसे नीची सतह से प्रारम्भ किया और उसे सबसे अधिक ऊँचाई तक पहुँचाया। आपके तैयार किये हुए व्यक्तियों में से प्रत्येक नबूवत का शाहकार (महान कृति) है। और

---

1. पैग़म्बर की जानशीनी में मुसलमानों की व्यवस्था करने वाली दीनी हुकूमत।

मानव जाति के सम्मान तथा गौरव का कारण। मानवता के चित्रपट पर बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि में पैग़म्बरों को छोड़कर इससे अधिक सुन्दर, मनोरम एवं मनमोहक तसवीर नहीं मिलती जो इनके जीवन में नज़र आती है। उनका दृढ़ विश्वास, उनका गहरा ज्ञान, उनका सच्चा दिल, उनका सादा जीवन, उनका निःस्वार्थ जीवन, उनकी विनय एवं भक्ति, उनके मन की स्वच्छता, उनका प्रेमभाव, उनकी बहादुरी और उनका शौर्य, उनकी इबादत का ज़ौक़ और उनकी शहादत[1] का शौक़, उनकी शहसवारी और उनका रातों का जागना, माया-मोह से उनका दुराव, दुनिया से उनका अलगाव, उनका न्याय, उनकी सुव्यवस्था दुनिया के इतिहास में अपनी नज़ीर नहीं रखती। आपके तैयार किये हुये व्यक्तियों में एक एक व्यक्ति ऐसा था कि यदि इतिहास साक्षी न होता और दुनिया उसे सत्यापित न करती तो उसकी गाथा कवि की कल्पना और एक मनगढ़न्त कहानी प्रतीत होती। किन्तु वह एक ऐतिहासिक तथ्य है जिसमें किसी तोड़ मरोड़ की गुंजाइश नहीं। वह ऐसे लोग थे जिनमें आपकी शिक्षा-दीक्षा ने विरोधी गुण कूट-कूट कर भर दिये थे। आपकी शिक्षा-दीक्षा ने जिन लोगों को तैयार किया "ऐश्वरीय गुणों से युक्त वे भक्त धरा की धूल भी थे और आसमान के तारे भी, उनका बेन्याज़ (दुनिया के माया, मोह से विरक्त) दिल दो जहाँ की दौलत से मालामाल, उनकी उम्मीदें छोटी किन्तु उद्देश्य बड़े थे, व्यवहार कुशल किन्तु सहज, उनके काम में गर्मी और बात में नर्मी थी, लड़ाई का मैदान हो या घर की महफ़िल—हर जगह सच्चे, अनोखा उनका समय था और विचित्र उनकी कहानी, उन्होंने दुनिया को चलते रहने का सन्देश दिया। वह जीने और मरने की कला में सबसे आगे और सबके अगुवा"[2]।

---

1. अल्लाह के नाम की बलन्दी के लिए जो लड़ाई लड़ी जाय उसमें काम आना।
2. डा० इक़बाल के शेरों का अनुवाद। (अनु०)

ऐसे व्यक्ति जब तैयार हुए तो वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी, कीमती और चुस्त साबित हुए। जो भी कार्य उन्हें सौंपा गया उसे पूरी तनमयता, पूर्ण क्षमता, दायित्व की पूरी भावना एवं लगन के साथ कर दिखाया। यदि उसे न्याय तथा मध्यस्थता का काम सौंपा गया तो वह बेहतरीन क़ाज़ी और लायक़ तरीन जज साबित हुआ। उसे अगर फौज का सिपहसालार (सेनापति) नियुक्त किया गया तो वह एक विवेकशील बहादुर सिपाही सिद्ध हुआ। यदि उसे सेना अध्यक्ष के पद से हटाया गया तो उसके माथे पर शिकन न आई और न ही शिकायत का एक शब्द सुना गया और उसके उत्साह एवम् उल्लास में तनिक अन्तर न आया। अगर वह नौकरों का आक़ा और किसी विभाग का अफ़सर था तो एक उदार, सहृदय और शुभ-चिन्तक अफ़सर। अगर मज़दूर था तो समय का पाबन्द और कर्त्तव्यनिष्ठ एक ऐसा मजदूर जिसे अपनी मज़दूरी में वृद्धि से अधिक काम में वृद्धि की चिन्ता रहती। अगर फ़क़ीर था तो सन्तुष्ट और मालदार था तो ईश्वर के प्रति आभारी और लोगों के साथ एहसान करने वाला। अगर विद्वान था तो ज्ञान का प्रचारक और लोगों को सही रास्ता बताने वाला। अगर विद्यार्थी था तो सच्ची शिक्षा प्राप्त करने का प्रेमी और उसी लगन में मस्त। अगर वह किसी शहर का हाकिम था तो रातों को पहरा देने वाला और दिन को इन्साफ़ करने वाला था। सारांश यह कि यह व्यक्ति समाज में जहाँ भी था नगीने के समान जड़ा हुआ था।

दुनिया की सबसे नाज़ुक और ख़तरनाक जिम्मेदारी (हुकूमत) जब उसको सौंपी गई तो उसने माया-मोह से दुराव, त्याग और बलिदान, साधना और सादगी का ऐसा नमूना पेश किया कि दुनिया चकित रह गई। इस्लाम के चार ख़लीफ़ाओं के शासनकाल की अनेक घटनायें इसका प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। हज़रत अबूबक्र के बारे में इतिहाकार लिखता है :—

"एक दिन हज़रत अबूबक्र र० की पत्नी ने मिठाई की

माँग की। जवाब मिला कि मेरे पास कुछ नहीं। उन्होंने कहा कि इजाज़त हो तो मैं दैनिक ख़र्च में से कुछ पैसे बचाकर जमा कर लूं। फ़रमाया जमा करो। कुछ दिनों में चन्द पैसे जमा हो गये तो हज़रत अबूबक्र र० को दिये कि मिठाई ला दो। पैसे लेकर कहा मालूम हुआ कि यह जरूरी ख़र्च से ज्यादा है अतः बैतुलमाल (राजकोष) का हक़ है। अस्तु वह पैसे ख़ज़ाने में जमा कर दिये और उतना अपना वज़ीफ़ा कम कर दिया"[1]।

आपने अनेक देशों के राजाओं और अनेक गणराज्यों के शासनाध्यक्षों के सरकारी दौरों का हाल सुना होगा। और उनके ठाठ-बाठ तथा शान व शौकत का तमाशा देखा होगा। सातवीं शताब्दी ई० के सबसे शक्तिशाली प्रशासक हज़रत उमर र० के सरकारी दौरे (सीरिया की यात्रा) का हाल इतिहासकार से सुनिये। मौलाना शिबली अपनी विख्यात पुस्तक "अल्फ़ारुक़" में सन् 16 हिज्री के बैतुलमक़दिस का हाल बयान करते हुये प्रामाणिक अरबी इतिहासों के हवाले से लिखते हैं :—

"पाठकगण प्रतीक्षा में होंगे कि फ़ारूक़-ए-आज़म का दौरा और दौरा भी वह जिसका उद्देश्य दुश्मनों पर इस्लाम का सिक्का जमाना था, किस साज-सज्जा के साथ होगा ? किन्तु यहाँ नगाड़ा व नौबत, नौकर, चाकर, लाव लशकर तो दूर, मामूली डेरा व खेमा तक न था। सवारी में घोड़ा था और थोड़े से मुहाजरीन[2] व अन्सार[3] साथ थे। फिर भी जहाँ यह आवाज़ पहुँचती थी कि फ़ारुक़ आज़म ने मदीने से शाम (सीरिया) का इरादा किया है ज़मीन दहल

---

1. सीरत सिद्दीक़ ले० सदरयार जंग मौलाना हबीबुर्रहमान ख़ाँ शरवानी।
2. लोग जो हज़रत मोहम्मद स० के संग मक्का से मदीना गये।
3. मदीने के लोग जिन्होंने मदीना पहुँचने पर हज़रत मोहम्मद स० का साथ दिया। (अनु०)

जाती थी।

जाबिया में देर तक ठहराव रहा और बैतुलमक़दिस की सन्धि भी यहीं लिखी गई। सन्धि के बाद हज़रत उमर र० ने बैतुलमक़दिस का इरादा किया। घोड़ा जो सवारी में था उसके खुर घिस कर समाप्त हो गये थे और रुक-रुक कर क़दम रखता था। हज़रत उमर र० यह देखकर उतर पड़े। लोग तुर्की नस्ल का एक उमदा घोड़ा लाये। घोड़ा चंचल एवं चालाक था। हज़र उमर र० सवार हुए तो उलेल करने लगा। फ़रमाया अभागे! यह अहंकार की चाल तूने कहाँ सीखी? यह कहकर उतर पड़े और पैदल चल पड़े। बैतुल मक़दिस क़रीब आया तो हज़रत अबू उबैदा और फ़ौज के सरदार अगवानी को आये। हज़रत उमर र० का पहनावा और साज-सज्जा जिस मामूली हैसियत का था उसे देखकर मुसलमानों को शर्म आती थी कि ईसाई अपने दिल में क्या कहेंगे। अस्तु लोगों ने तुर्की घोड़ा और उमदा क़ीमती पोशाक हाज़िर किया, हज़रत उमर र० ने फ़रमाया कि—

"खुदा ने हमको जो इज़्ज़त दी है वह इस्लाम की इज़्ज़त है और हमारे लिए यही बस है"।

दूसरे दौरे का हाल भी सुन लीजिये जो सन् 18 हि० में शाम का था :—

"हज़रत उमर र० ने शाम का इरादा किया। हज़रत अली र० को मदीने की हुकूमत दी और स्वयं ऐला को प्रस्थान किया। यरफ़ा उनका गुलाम (सेवक) और बहुत-से सहाबा साथ थे। ऐला के निकट पहुँचे। कुछ कारणवश अपनी सवारी गुलाम को दी और स्वयं उसके ऊँट पर सवार हुए। रास्ते में जो लोग देखते थे पूछते थे कि अमीरुल-मोमनीन कहाँ हैं? फ़रमाते कि तुम्हारे सामने। इसी प्रकार ऐला में प्रवेश किया और वहाँ दो-एक दिन ठहरे। गजी का कुर्ता जो पहने थे कुजावे की रगड़ से पीछे से फट गया था। मरम्मत के लिए ऐला के पादरी के हवाले किया उसने स्वयं अपने हाथ से पैवन्द लगाये और उसके साथ एक नया कुर्ता तैयार करके पेश किया। हज़रत उमर र०

ने अपना कुर्ता पहन लिया और कहा इसमें पसीना खूब सोखता है।

चारों ख़लीफ़ा और सहाबा क्राम[1] की जीवनी के विभिन्न पहलू और उनके सदाचरण की गाथा किताबों में बिखरी पड़ी हैं इन सबको जमा करके आप अपने मन में एक व्यक्ति के पूरे जीवन की तस्वीर तैयार कर सकते हैं। सौभाग्य से उनमें से एक सैय्यदना अली र० इब्न अबी तालिब का पूरा आचरण और उनके जीवन की अखण्ड तस्वीर हमारे साहित्य में मौजूद है। उसे पढ़िये और देखिये कि एक मनुष्य की जीवनी और आचरण की इससे अधिक सुन्दर और मनमोहक तस्वीर क्या हो सकती है और नबूवत ने अपनी शिक्षा-दीक्षा और मानव-निर्माण के कैसे यादगार नमूने छोड़े हैं। हज़रत अली र० की सेवा में दिन-रात रहने वाले एक साथी ज़रार बिन ज़मरा इस प्रकार उनका चित्रण करते हैं :—

> "बड़े उच्च विचार वाले, बड़े बहादुर, बड़े ताक़तवर, जंची तुली बातचीत करते, हक़ व इन्साफ़ के अनुसार फ़ैसला फ़रमाते, वाणी से ज्ञान का स्रोत उबलता, हर-हर अदा से हिकमत टपकती, दुनिया और दुनिया की बहार से घबराते थे। रात और रात के अन्धेरे में खुश रहते। आँखें रसभरी। हर समय चिन्ता और सोच में डूबे रहते। समय की गति पर चकित, हर समय मन में डूबे हुए। कपड़ा वह पसन्द था जो मोटा-झोटा हो। खाना वह पसन्द था जो गरीबों का और सादा हो। किसी प्रकार का भेदभाव पसन्द न करते। समाज के एक व्यक्ति मालूम होते थे। हम सवाल करते तो वह जवाब देते। हम उनके पास जाते तो सलाम करने और कुशल पूछने में वह पहल करते। हम आमन्त्रित करते तो निमन्त्रण स्वीकार करते। किन्तु इस सानिध्य एवं समता के

---

1. वे मुसलमान जिन्होंने हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा हो और इस्लाम की हालत में उनका अन्त हुआ हो।

वावजूद उनका ऐसा रोब रहता कि बात करने की हिम्मत न होती। और बातचीत प्रारम्भ करना कठिन होता अगर कभी मुस्कराते तो दाँत मोती की लड़ी के समान मालूम होते। दीनदारों की इज़्ज़त और दीन-दुखियों से मुहब्बत करते थे किन्तु इसके वावजूद किसी ताक़तवर और दौलतमन्द की मजाल न थी कि उनसे कोई ग़लत फ़ैसला करवाले अथवा उनसे कोई छूट हासिल कर ले। कमज़ोर को हर समय उनके इन्साफ़ का भरोसा था"।

मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि मैं ने उनको एक रात ऐसी हालत में देखा कि रात का अन्धेरा था, सितारे ढल चुके थे। आप अपनी मस्जिद के मेहराब में खड़े थे। दाढ़ी मुट्ठी में थी। इस तरह तड़प रहे थे जैसे साँप ने डस लिया हो। इस तरह रो रहे थे जैसे दिल पर चोट लगी हो। इस समय मेरे कानों में उनके यह शब्द गूँज रहे हैं :—

"ऐ! दुनिया!! क्या तू मेरा इम्तेहान लेने चली है और मुझे बहकाने की हिम्मत की है। निराश हो जा। किसी और को बहकावा दे। मैंने तुझे ऐसी तीन तलाक़ें (सम्बन्ध विच्छेद) दी हैं जिनके वाद रजअत (वापसी) का कोई प्रश्न नहीं। तेरी उम्र छोटी। तेरा ऐश बेहक़ीक़त। तेरा ख़तरा ज़बरदस्त। हाय! रास्ते का सामान (सम्बल) कितना कम है और यात्रा कितनी लम्बी और रास्ता कितना भयावह है।"

नबूवत का यह कारनामा मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अभ्युदय काल तथा पहली सदी हिज्री तक सीमित नहीं। आपकी शिक्षा और आपके सहाबाकिराम ने ज़िन्दगी के जो नमूने छोड़े थे वह मुसलमानों की बाद की नस्लों और इस्लामी दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महापुरुष पैदा करते रहे जो निश्चय ही मानवता के सर्वोच्च शिखर पर थे। इस चिरस्थायी "मदरस-ए-नबूवत" से शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर निकलने वाले अपने-अपने समय के माथे की बिन्दिया एवं मानवता के गौरव का कारण रहे हैं। इस विद्या मन्दिर

से निकले हुए लाखों ज्ञानी, सन्तों का नाम मात्र गिनाना अच्छे-अच्छे इतिहासकारों, लेखकों और शोधकर्ताओं के वश की बात नहीं। फिर उनके सदाचरण, उनकी इन्सानियत और आध्यात्मवाद के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों का वर्णन तो किसी प्रकार सम्भव नहीं। उनके हालात को (जो कुछ भी इतिहास सुरक्षित कर सका) पढ़कर अक़्ल हैरान होती है कि तुच्छ मानव आत्मा के उत्थान, मन की पवित्रता, उत्साह एवं उल्लास, सहृदयता, उदारता, त्याग तथा बलिदान, माया मोह से दुराव, बड़े-बड़े राजाओं से निडरता, ईश भक्ति और अनदेखे ख़ुदा के वजूद पर ईमान व यक़ीन की इन सीमाओं तक भी पहुँच सकता है ? उनके यक़ीन ने लाखों इन्सानों के दिलों को यक़ीन से भर दिया। उनके प्रेम ने लाखों इन्सानों के सीनों में प्रेम की ज्वाला प्रज्वलित की। उनके आचरण ने शत्रु को मित्र और दानव को मानव बना दिया। उनके सत्संग और उनके वरदान ने ईश भक्ति और इन्सान दोस्ती की ज्योति जगाई। हमारा देश हिन्दुस्तान बड़ा सौभाग्यशाली है कि इस तपोभूमि में बड़ी संख्या में ऐसी आत्मायें हुयीं हैं जिन्होंने अपने समय में इन्सानियत का नाम रौशन किया है।

बादशाहों की श्रेणी में भी, जो देशों के जीतने और विलासता का जीवन व्यतीत करने के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते थे, इस शिक्षा ने ऐसे आस्तिक एवं सन्त प्रवृत्ति वाले बादशाह पैदा किये जिन्होंने त्याग और तपस्या का ऐसा नमूना प्रस्तुत किया जिसकी नज़ीर बड़े-बड़े सन्यासियों और एकान्त का जीवन व्यतीत करने वाले फ़क़ीरों के यहाँ भी मिलना मुश्किल है। इस्लाम के इतिहास के प्रत्येक युग में और इस्लामी दुनिया के हर कोने में ऐसे लोग मिलते हैं।

"मदरस-ए-नबूवत" से लाभान्वित होने वाले राजाओं की सूची लम्बी है। आप केवल सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का हाल पढ़ें। छठी शताब्दी हिज्री में मध्य पूर्व के इस सबसे बड़े शासक के बारे में उसका सेक्रेट्री क़ाज़ी इब्न शद्दाद गवाही देता है :—

"ज़कात फ़र्ज़ होने की सारी उम्र नौबत नहीं आई, इसलिए कि

उन्होंने कभी इतनी बचत ही नहीं की जिस पर ज़कात फ़र्ज हो। उनकी सारी दौलत सदक़ात व ख़ैरात (दान) में ख़र्च हुई। केवल सैंतालीस नासिरी और एक सोने का सिक्का छोड़ा। बाक़ी कोई जायदाद, सम्पत्ति, कोई मकान, बाग़, गाँव, खेती नहीं छोड़ी। उनके कफ़न-दफ़न में एक पैसा भी उनकी धरोहर से ख़र्च नहीं हुआ। सारा सामान क़र्ज़ से किया गया। यहाँ तक की क़ब्र के लिए घास के पोले भी क़र्ज़ से आये। कफ़न का इन्तेज़ाम उनके वज़ीर व कातिब (लेखक) क़ाज़ी फ़ाज़िल ने किसी जायज़ व हलाल ज़रिये से किया।"

मनुष्यता, मन की पवित्रता और महत्वाकांक्षा के दृष्टिकोण से भी सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी इतिहास के महानतम पुरुषों में गिने जाने के योग्य है। बैतुलमक़दिस की विजय के अवसर पर ईसाई विजेताओं के विपरीत (जिन्होंने अत्याचार की एक नज़ीर क़ायम कर दी थी) सुल्तान ने जिस प्रेम व मुहब्बत और जिस सहृदयता और उदारता का प्रदर्शन किया उसका वर्णन करते हुए स्टैनले लेन पोल लिखता है :—

> "अगर सुल्तान सलाहुद्दीन के कामों में केवल यही काम दुनिया को मालूम होता कि उसने किस तरह यरोशलम को जीता तो अकेला यही कारनामा इस बात को साबित करने के लिए काफ़ी था कि वह न केवल अपने युग का बल्कि तमाम युगों का सबसे बड़ा उत्साही व्यक्ति और अद्वितीय सूरमा था"।

आपने जहाँ मध्य-पूर्व के एक महान शासक के उपकार एवं उदारता का हाल सुना, स्वयं अपने देश के एक मुसलमान बादशाह का हाल भी सुनते चलिए जो सत्यनिष्ठा, उदारता, त्याग और उत्साह का एक और नमूना है। यह दसवीं शताब्दी हिज्री के एक शक्तिशाली शासक गुजरात के सुल्तान मुज़फ़्फ़र हलीम की घटना है जिसने महमूद शाह ख़िल्जी की मदद के लिए माँडव पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया।

गुजरात का इतिहासकार लिखता है :-

"क़िले पर विजय के बाद जिस समय मुज़फ़्फ़र हलीम ने अन्दर प्रवेश किया और उसके साथ के अमीरों ने मालवा के राजाओं के ठाट-बाट के सामान और ख़ज़ाने देखे और उस देश की सुख समृद्धि से अवगत हुए तो उन्होंने हिम्मत करके मुज़फ़्फ़रशाह से निवेदन किया कि इस युद्ध में लगभग दो हजार शूर वीर शहीद हो चुके हैं। यह उचित नहीं है कि इस क़दर नुक़सान उठाने के बाद फिर देश को उसी बादशाह के हवाले कर दिया जाये जिसकी नालायक़ी से मन्दलीराय ने उस पर अधिकार कर लिया था। बादशाह यह सुनते ही ठहर गया और क़िले से बाहर निकल कर महमूदशाह को निर्देश दिया कि उसके साथ के लोगों में से किसी को क़िले के अन्दर न जाने दे। महमूद ने अनुरोध किया कि बादशाह कुछ एक दिन क़िले के अन्दर आराम कर लें किन्तु मुज़फ़्फ़र शाह ने इस अनुरोध को स्वीकार नहीं किया और बाद को स्वयं बताया कि मैंने यह जेहाद[1] केवल अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल करने के लिए किया था। मुझको अमीरों की बातचीत से इस बात की शंका होने लगी कि कहीं कोई व्यभिचार मेरे दिल में पैदा न हो जाये और मेरी नीयत और निष्ठा बरबाद हो जाये। मैंने महमूद पर कुछ एहसान नहीं किया, बल्कि स्वयं महमूद का मुझ पर एहसान है कि उसके कारण मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

मैं यह नहीं कहता कि इस्लामी युग के सारे राजा और शासक नूरुद्दीन व सलाहुद्दीन, नासिरुद्दीन महमूद और सुल्तान मुज़फ़्फ़र हलीम का नमूना थे किन्तु आपको जिन बादशाहों में मनुष्यता के गुण, ईश

---

1. अल्लाह के नाम को बलन्द करने के लिए संघर्ष जिसमें कभी-कभी जंग की भी नौबत आती है।

भक्ति, आत्म सन्तोष, त्याग व बलिदान और प्रेम व मुहब्बत मिलती है और जो बादशाहों की परिपाटी से अलग निराले दिखाई पड़ते हैं वह नबूवत के वरदान और उनके दीनी जज़्बा का नतीजा है। आप उनकी जीवनी पढ़ें तो आप देखेंगे कि इन सब का सम्बन्ध (शिक्षा-दीक्षा, लगाव और लगन, अनुकरण एवं अनुसरण के माध्यम से) इसी एक स्रोत से था जिससे उन्हें मार्ग दर्शन मिलता रहा। यह नव मूलतः उसी ज्ञानस्रोत के धारे हैं जिसने मानव निर्माण का कार्य सबसे बड़े और सबसे ऊँचे पैमाने पर किया और जिसके कारण आज भी मानवता का चिराग़ रोशन है।

आधुनिक सभ्यता और वर्तमान विचारधारा समाज की जिम्मेदारियाँ संभालने वाले मानव तैयार करने और उनके नैतिक उत्थान में पूर्णतः असफल रही है। वह सूर्य की किरणों को नियन्त्रित कर सकती है, अन्तरिक्ष में सुरक्षित तैरने के यन्त्र तैयार कर सकती है, वह मानव को चाँद और दूसरे ग्रहों पर पहुँचा सकती है, वह अणु शक्ति से बड़े से बड़ा काम ले सकती है, वह ज्ञान व विज्ञान की चरम सीमा तक पहुँच सकती है, वह पूरे-पूरे राष्ट्र को साक्षर व शिक्षित बना सकती है। उसकी यह सफलतायें निस्संदेह मान्य हैं किन्तु वह नेक और ईमान व यक़ीन वाले व्यक्ति तैयार करने में असमर्थ है और यही उसकी सबसे बड़ी असफलता है और इसी कारण शताब्दियों का परिश्रम बरबाद हो रहा है और सारी दुनिया निराशा एवम् उलझन से ग्रसित है और अब उसका विज्ञान एवं ज्ञान पर से भी विश्वास उठ रहा है। डर है कि दुनिया में एक तीव्र प्रक्रिया का आन्दोलन और शिक्षा व सभ्यता के विरुद्ध क्रान्ति न प्रारम्भ हो जाय। बुरे व्यक्तियों ने अच्छे साधनों को भी बुरा बना दिया है। बुरे और कमज़ोर तख़्तों से कोई मज़बूत बेड़ा नहीं तैयार हो सकता। यह विचार ग़लत है कि अलग-अलग ख़राब और कमज़ोर तख़्तों के जोड़ने से उनकी ख़राबी दूर हो जाती है चोर और डकैत अलग-अलग तो चोर और डकैत हैं ही यदि उनका समूह हो तो वह भी चोर और डकैत ही होगा। नयी

विचारधारा ने दुनिया को जो व्यक्ति दिये हैं वह ईमान व यक़ीन से ख़ाली, उनकी आत्मा मरी हुई, नैतिक गुणों से वंचित, प्रेम व मुहब्बत की भावना से अपरिचित, मानवता के गौरव तथा सम्मान के प्रति उदासीन हैं। वह केवल स्वाद और सम्मान की नीति जानते हैं अथवा केवल राष्ट्र प्रेम और देश भक्ति की भावना से परिचित हैं। इस श्रेणी और क्षमता के व्यक्ति चाहे प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के चलाने वाले हों अथवा साम्यवाद के समर्थक कभी किसी अच्छे समाज, शान्ति-पूर्ण वातावरण और ईश्वर से डरनेवाले पवित्र समाज की स्थापना नहीं कर सकते। और उन पर प्राणी एवं मानव जाति के भाग्य के बारे में कभी भरोसा नहीं किया जा सकता।

इस दुनिया में सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति और सर्वोत्तम समाज केवल नबूवत ने तैयार किया हैऔर उसी के पास अन्तःकरण को बदलने और गरमाने, मन को झुकाने और जमाने, नेकी व पाकबाज़ी की मुहब्बत और गुनाह व बदी से नफ़रत पैदा करने, धन दौलत, देश व शासन, पद व सम्मान और राज-पाट की लोलुप्ता का मुक़ाबला करने की ताक़त पैदा करने की क्षमता है और वही लोग जिनमें यह गुण हों, दुनिया को नष्ट होने से और आधुनिक सभ्यता को तबाही से बचा सकते हैं।

नबूवत ने दुनिया को साइंस नहीं दी। आविष्कार नहीं दिये। उसको न इसका दावा है, न ऐसा न करने का पश्चाताप। उसका कार-नामा यह है कि उसने दुनिया को वह व्यक्ति दिये जो स्वयं सही रास्ते पर चल सकते हैं और दुनिया को चला सकते हैं और हर अच्छी चीज़ से स्वयं लाभान्वित हो सकते हैं और दूसरों को लाभ पहुँचा सकते हैं और जो प्रकृति के हर वरदान को ठिकाने लगा सकते हैं। जो अपने जीवन के उद्देश्य से परिचित और अपने पैदा करने वाले को जानते-मानते हैं और उस महान शक्ति से लौ लगाने और उससे और अधिक वरदान प्राप्त करने की क्षमता रखते हैं। उन्हीं का होना मानवता की असल पूंजी और उन्हीं की दीक्षा नबूवत का असल कारनामा है।

नबूवत की भेंट[1]

दुनियाँ के इतिहास में अनेक ऐसे व्यक्ति और वर्ग हुए हैं जिन्होंने मानवता की सेवा की है। और दुनिया के निर्माण व विकास में भाग लिया है। ऐसे अवसर पर वह सब इतिहास के धरातल पर उभर आते हैं और अपने को मानवता का निर्माता और सेवक की हैसियत से प्रस्तुत करते हैं और अपेक्षा करते हैं कि उनको भी इस कसौटी से जांचा और परखा जायेगा। यह ठीक है। उनको भी अवसर देना चाहिये और उनकी सेवाओं और उपकार की तुलना करनी चाहिये और फिर निर्णय करना चाहिये कि कौन इस कसौटी पर खरा उतरता है।

सबसे पहले हमारे सामने एक सन्जीदा (निष्कपट) और लब्ध-प्रतिष्ठ गिरोह आता है। यह ज्ञानी एवं दार्शनिकों का दल है इनमें यूनान के बड़े-बड़े दार्शनिक भी हैं और हिन्दुस्तान के उच्चकोटि के ज्ञानी भी। ज्ञान और दर्शनशास्त्र का प्रारम्भ से मुझपर दबदबा रहा है हम इनको देखकर कह उठे हैं कि इन्होंने मानवता का सर ऊंचा किया है और उसका आंचल हिकमत के मोतियों से भर दिया है किन्तु थोड़ी देर के लिए निष्पक्ष होकर न्यायपूर्ण विचार कीजिए कि क्या इनकी ओर से यह दावा किया जा सकता है और क्या इनका यह कहना उचित है कि यह मानवता के लिए रहमत (उपकार) साबित हुए हैं ? प्रश्न उठता है कि मानवता को इनसे क्या मिला, उसकी कौन सी प्यास बुझी। इन्होंने उसकी कौन सी समस्या सुलझायी। विचार करने पर हमको निराशा होती है। तनिक आप दर्शनशास्त्र का

---

1. नवम्बर 1954 ई० (रबीउल अव्वल 1374 हि०) में लखनऊ के अमीनुद्दौला पार्क में दिये गये भाषण पर आधारित।

अध्ययन कीजिए और दार्शनिकों के जीवन पर नजर डालिये। आप देखेंगे कि दर्शनशास्त्र जीवन के महासागर में एक छोटा सा टापू था। एक सुरक्षित जगह थी। एक सीमित क्षेत्र था। यह ज्ञानी और दार्शनिक अपनी सारी क्षमतायें और ईश्वर की दी हुई शक्तियां इस सीमित क्षेत्र में खपा रहे थे। मानवता की वह समस्यायें जिन्हें थोड़ी देर के लिए भी टाला नहीं जा सकता जिनके हल के बिना मानवता की गाड़ी एक पग भी नहीं चल सकती इन लोगों ने उन समस्याओं को हाथ नहीं लगाया और वह अपने इस टापू में सुख की नींद सोते रहे। किन्तु मानवता तो इन छोटे-छोटे टापुओं में वन्द न थी। यूनान जहां दार्शनिक वहुत हुए हैं वहां भी सवके सव दार्शनिक तो नहीं हुए। इन दार्शनिकों ने ज्योतिष शास्त्र को वढ़ावा दिया, चांद सितारों की दुनिया से वहस की किन्तु मानवता को क्या दिया और शिक्षित समाज को छोड़कर अन्य लोगों का क्या पथ प्रदर्शन किया? इन्होंने भटकती मानवता और सिसकती जिन्दगी को क्या दिया? वह वास्तविक जीवन से अलग थे। उन्होंने अपने चारों ओर एक घेरा बना लिया था उस घेरे के वाहर की दुनिया से वह अपरिचित थे।

यह एक राजनीतिक युग है और हमारा देश अव आज़ाद है। शायद आप एक उदाहरण से दार्शनिक की सही पोजीशन समझ सकें। देखिए अपने देश में विभिन्न देशों के दूतावास हैं। कोई अमरीकी दूतावास है, कोई रूसी दूतावास है। कोई मिस्र का है कोई ईरान का। इन दूतावासों के भीतर भी जीवन की चहल पहल है। इनके अन्दर भी वहुत से लोग लिखते पढ़ते रहते हैं। वड़े-वड़े ज्ञानी और कूटनीतिज्ञ भी हैं किन्तु उनको हमारे देश की आन्तरिक समस्याओं से कोई सरोकार नहीं, हमारे आपस के सम्वन्धों और पारस्परिक खींच-तान से कोई वास्ता नहीं, यहां की ग़रीवी, अमीरी, नैतिक उत्थान-पतन से कोई मतलव नहीं। उनका एक सीमित और विशिष्ट कार्य है और वह केवल वही कार्य करते हैं। इस लिए वह यहां रहकर भी ऐसे हैं जैसे वह यहां के नहीं हैं। वस इसी प्रकार ज्ञान व दर्शन

एक विदेशी दूतावास की भांति क़ायम था और यह ज्ञानी एवं दार्शनिक इस दूतावास की चहारदीवारी के अन्दर ज्ञान व दर्शन का प्रतिनिधित्व कर रहे थे और जीवन की समस्याओं से असम्बद्ध थे।

दूसरा दल जो इस क्रम में हमारे सामने आता है वह साहित्यकारों और कवियों का दल है। हमको साहित्य एवं कविता से लगाव है हम इसका अपमान नहीं करते। किन्तु क्षमा करें! साहित्यकारों एवं कवियों ने भी मानवता के दुख का इलाज नहीं किया। उन्होंने हमारे लिए मनोरंजन का साधन उपलब्ध कराया। हमारी भाषा और साहित्य को मालामाल किया। परन्तु मानवता के सुधार का दर्द सर मोल नहीं लिया और न यह उनके वस की बात थी। जिन्दगी बनती और बिगड़ती रही, मानवता गिरती और संभलती रही और यह अपने मीठे-मीठे बोल सुनाते रहे। इसकी मिसाल यूं समझिये कि लोग अपनी-अपनी मुसीबत में घिरे हों, कहीं लड़ाई-झगड़ा हो रहा हो, कहीं जीवन की गुत्थियाँ उलझ रही हों और कोई बाँसुरी वादक बड़ी सुरीली आवाज़ में बाँसुरी बजा रहा हो। आप थोड़ी देर उसका आनन्द ले सकते हैं, आप उसकी ओर आकर्षित हो सकते हैं किन्तु उस राग से आप जीवन की गुत्थियाँ तो नहीं सुलझा सकते और न इससे कोई सन्देश प्राप्त कर सकते हैं। साहित्य हमारे जीवन के लिए कितना ही आवश्यक सही। इससे हमारे मन, मस्तिष्क को ताज़गी भले ही प्राप्त हो किन्तु इसमें हमारी समस्याओं का समाधान नहीं है। यह लोग किसी लक्ष्य विशेष को लेकर संघर्ष भी नहीं करते थे और न ही इसके लिए कष्ट झेलना उनके वस की बात थी। सुधार और क्रान्ति विना संघर्ष के नहीं हुआ करती।

तीसरा दल हमारे सामने विजेताओं का आता है जिन्होंने देशों को जीता और अपने बाहु बल से राष्ट्रों को गुलाम बनाया। इस दल का भी मुझ पर बड़ा दबदबा है। इनकी तलवारों की झनकार अभी तक हमारे कानों में आ रही हैं। यूं तो इनके शोर से मालूम होता है कि इन्होंने मानवता की बड़ी सेवा की, मगर इनके नाम के साथ कौन-सा

इतिहास जुड़ा है ? न्याय का अथवा अन्याय और अत्याचार का ? सिकन्दर का नाम आते ही उसके अत्याचारों की याद ताजा हो जाती है। क्या मानवता के प्रति उसका कोई उपकार है ? उसने यूनान से हिन्दुस्तान तक तमाम देशों को तहस-नहस कर दिया। देश के देश उसके कारण शान्ति और सुख से वंचित हो गये। उसके चले जाने के बाद भी सैकड़ों वर्ष तक यह देश संभल न सके। यही हाल सीज़र, चंगेज़ खाँ और दूसरे बड़े-बड़े विजेताओं का है। विजेता भले ही अपने देश का हितकारी हो या अपनी क़ौम के लिए रहमत हो किन्तु दूसरी क़ौमों और मुल्कों के लिए अज़ाब और मुसीबत है।

चौथा दल उन लोगों का आता है जो देश को आजाद कराने वाले हैं। और राष्ट्र नेता हैं। इस गिरोह का जब नाम आता है तो श्रद्धा से हमारी गरदनें झुक जाती हैं। वास्तव में इन्होंने अपने देश के लिए बड़ा काम किया। मगर इस देश के बाहर बसने वालों के लिए क्या किया ? आप इब्राहीम लिंकन के नाम से परिचित हैं। वह आधुनिक अमरीका का निर्माता है। किन्तु बताइये हिन्दुस्तान, मिस्र, ईराक़ और इन जैसे अन्य देशों को उससे क्या फ़ायदा पहुँचा ? परिणाम देखिये तो ज्ञात होगा कि उसने एक इम्पीरियलिस्ट ताक़त पैदा कर दी और दुनिया की गुलामी की जंजीर में एक और कड़ी की वृद्धि कर दी। साद ज़ाग़लोल कौन था ? मिस्र की आजादी की लड़ाई का सबसे लोकप्रिय नेता। किन्तु मिस्र से बाहर उसने क्या किया और उसका हम पर क्या एहसान है ? यह राष्ट्रीयता वास्तव में दूसरे देशों और राष्ट्रों के लिए मुसीबत है। इसलिए कि इसकी बुनियाद ही अपने राष्ट्र की प्राथमिकता और दूसरे राष्ट्र के अवमूल्यन पर है। और इसे प्रायः अपने राष्ट्र के उत्थान के लिए दूसरे राष्ट्रों को गुलाम बनाना पड़ता है।

पाँचवाँ दल वैज्ञानिकों का है जिसने नये-नये आविष्कार किये और अनेक उपयोगी वस्तुएँ बनायीं। निस्सन्देह इस दल ने मानवता की बड़ी सेवा की। बिजली, हवाई जहाज, रेल और रेडियो आदि इन्हीं

वैज्ञानिकों की देन है इसके लिए इन्होंने बड़ा परिश्रम किया। निस्सन्देह यह सब चीजें मानव जाति के बड़े काम आ रही हैं। किन्तु विचार कीजिये तो ज्ञात होगा कि यह आविष्कारों के साथ अगर नेक इरादे (सद्भावना) न हों, धैर्य न हो, जनसेवा की भावना न हो, इससे अगर मानवता की बुनियादी जरूरतें पूरी न हों तो बताइये यह आविष्कार मानवता के लिए रहमत हैं या जहमत, वरदान हैं अथवा अभिशाप ? इन्होंने यह आविष्कार तो लोगों को दे दिया किन्तु उनके प्रयोग की सद्भावना न दे सके, वह उनके अन्तःकरण में वह सद्बुद्धि नहीं पैदा कर सके जो उनसे लाभ उठाये और उनको ठिकाने लगाये और उनके दुरुपयोग से बचे। गत दो विश्व युद्धों का अनुभव बताता है कि नैतिक शिक्षा और ईश्वर से भय के बिना यह आविष्कार एवं संसाधन मानवता के लिए अभिशाप हैं, वरदान नहीं। मैं इन वैज्ञानिकों का अपमान नहीं करता किन्तु इतना अवश्य कहूँगा कि यह आविष्कार सद्भावना, नैतिक शक्ति एवं मानसिक सन्तुलन के बिना पूरे नहीं अधूरे हैं। जब तक मानव के हृदय में सद्भावना न हो और स्वयं उसके अन्दर नेक काम करने की भावना उत्पन्न न हो, उसको साधन व यन्त्र, अवसर तथा सम्भावनायें और सहूलतें तथा आसानियाँ नेक नहीं बना सकतीं। मान लीजिये मेरे पास देने को रुपया भी है, लेने के लिए बहुत-से दीन-दुखिया भी हैं, मेरा कोई हाथ नहीं पकड़ता मगर मेरे अन्दर उदारता की भावना और सहायता करने की इच्छा नहीं तो मुझे कौन देने पर आमादा कर सकता है ?

अब एक दूसरा दल मेरे सामने आता है, यह पैग़म्बरों का दल है। यह दल आविष्कार और खोज का दावा नहीं करता, न वह ज्ञान व दर्शन में निपुण होने का दावा करता है, न उसको साहित्य पर गर्व है। वह अपने बारे में न अतिशयोक्ति से काम लेते हैं न अनावश्यक विनम्रता से। वह बड़ी सफ़ाई और सादगी से कहते हैं कि वह दुनिया को तीन चीजें देते हैं—(1) सही ज्ञान (2) उस ज्ञान पर विश्वास (3) उस ज्ञान को व्यवहार में लाने और उस विश्वास के अनुसार

जीवन व्यतीत करने की प्रबल इच्छा। यह है हज़रत आदम अ० से लेकर मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक की शिक्षा का निचोड़।

अब मैं बताता हूँ कि वह सही ज्ञान क्या है जो पैग़म्बर इन्सानों को देते हैं। वह ज्ञान इसका है कि दुनिया को किसने बनाया और किस लिए बनाया। पैग़म्बर कहते हैं कि सबसे पहले यह मालूम होना चाहिए कि हमको किसने पैदा किया और क्यों पैदा किया। इसे जाने बिना हमारा हर क़दम ग़लत है। हमको इस दुनिया की किसी चीज़ से फ़ायदा उठाने का कोई हक़ नहीं, इसलिए कि इस जीवन में जो कुछ हो रहा है—चलना-फिरना, खाना-पीना वह सब उस महान अखण्ड का एक अंशमात्र है। जब तक कि हमको इस सृष्टि के केन्द्र का ज्ञान न हो और हम उसके समग्र उद्देश्य से सहमत न हों, हमको उसके अंशों से लाभ उठाने का क्या अधिकार है? इसके बिना तो रोटी का एक टुकड़ा तोड़ना हराम है। हम भी इस सृष्टि के एक तुच्छ अंश हैं और जो अन्न हम खाते हैं वह भी इस कुल का एक अंश मात्र है। हम जिस ग्रह पर रहते हैं वह भी इस सृष्टि का एक अंश मात्र है। हमारी इस पृथ्वी की सौर्यमण्डल में क्या हैसियत है? अगर आप को यह सम्बन्ध मालूम हो जायें जो इस पृथ्वी और सूरज के बीच हैं तो आपको अपने अस्तित्व से भी शर्म आने लगे और अपने महान देश से भी। आपके और इस सृष्टि के अन्य अंशों के बीच किसने सम्पर्क स्थापित किया? इसी सृष्टि के निर्माता ने और इसी समग्र उद्देश्य ने!! यदि आप इस सृष्टि के निर्माता को नहीं जानते अथवा नहीं मानते और इस समग्र उद्देश्य से आप सहमत नहीं हैं तो आपको इस सृष्टि के किसी कण से लाभ उठाने का क्या अधिकार है? मैं पूछता हूं कि यदि रोटी का वह टुकड़ा जो आपके हाथ में है आपसे सवाल करे कि मैंने तो अपने पैदा करने वाले को पहचान लिया और उसके आदेशानुसार मैंने अपने स्वामी (मनुष्य) के लिए अपने अस्तित्व को मिटा दिया किन्तु ऐ! मनुष्य!! तूने न अपने पैदा करने वाले

को जाना न उसको बन्दगी की । तुझे मुझसे लाभ उठाने का क्या अधिकार है ? तो आप क्या उत्तर देंगे ? इसी प्रकार इस दुनिया की किसी चीज़ का प्रयोग ग़लत है जब तक यह न जान लिया जाये कि इसका पैदा करने वाला कौन है और उसका उद्देश्य क्या है ? किन्तु यह अजीब ट्रेजेडी है कि आज दुनिया में तमाम काम हो रहे हैं, बाज़ार में चहल-पहल है, सम्बन्ध स्थापित हो रहे हैं, सवारियाँ चल रही हैं, बड़े-बड़े काम हो रहे हैं मगर किसी को यह मालूम करने की फ़ुरसत नहीं कि जिस दुनिया में यह सब कुछ हो रहा है उसका पैदा करने वाला कौन है और उसका क्या उद्देश्य है ? जब पैग़म्बर दुनिया में आये मानवता की गाड़ी निरुद्देश्य जा रही थी, दार्शनिकों, ज्ञानी, साहित्यकारों, कवियों, विजेताओं, शासकों, किसानों और व्यापारियों को अपने कामों से फ़ुरसत न थी । राजा भी थे और प्रजा भी । ज़ालिम भी थे और मज़लूम भी थे किन्तु सब मूल उद्देश्य से ग़ाफ़िल और अपने पैदा करने वाले से अपरिचित । इन छोटे-छोटे बौने जैसे इन्सानों में एक भारी डील-डौल का इन्सान आता है और जिन लोगों के हाथ में मानवता की बागडोर थी उनसे सवाल करता है कि जवाब दो कि तुमने इन्सानों पर यह क्या अत्याचार किया है कि उनको अपने मालिक और इस दुनिया के बादशाह से हटाकर अपना ग़ुलाम बना लिया है । तुमको क्या हक़ था कि नाबालिग़ इन्सानियत का हाथ पकड़ कर तुमने इसको ग़लत रास्ते पर डाल दिया है । ऐ ! ज़ालिम ड्राइवर !! तूने यात्रियों से पूछे बिना ज़िन्दगी की गाड़ी किस ओर चलानी शुरू कर दी । वह जीवन के अन्तःकरण में खड़े होकर मानवता को सम्बोधित करता है, और उसको पुकारता है । उसके सवाल को टाला नहीं जा सकता, उसके आह्वान और उसकी पुकार पर मनुष्यता दो वर्गों में बंट जाती है एक वर्ग उसकी बात मानता है एक इनकार करता है । दुनिया को इन दोनों रास्तों में से एक रास्ता चुनना पड़ता है ।

पैग़म्बर कभी नहीं कहते कि हम प्रकृति के रहस्यों को खोलने

आये हैं, हम प्राकृतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त करने आये हैं, हम कुछ नये आविष्कार करेंगे। वह भूगोल तथा खनिज-शास्त्र में निपुणता का दावा नहीं करते। वह कहते हैं कि हम इस दुनिया को वनाने वाले और उसके गुणों का सही ज्ञान देते हैं जो हमको इस दुनिया के मालिक ने और हमारे पैदा करने वाले ने हमको दिया है और अव हमारे माध्यम से ही वह दूसरों को मिल सकता है।

वह वताते हैं कि इस दुनिया का वनाने वाला एक है और उसी की इच्छा व जतन से यह दुनिया चल रही है वह विना किसी अन्य के सहयोग से इसको चला रहा है। यह दुनिया विना उद्देश्य के नहीं वनाई गई और न विना उद्देश्य के चल रही है। इस जिन्दगी के वाद दूसरी जिन्दगी होगी जिसमें इस पहली जिन्दगी का हिसाव देना होगा। वहाँ अच्छे कर्मों का वदला मिलेगा, बुरे कर्मों की सजा मिलेगी। क़ानून लाने वाले और ईश्वर की इच्छा वतलाने वाले पैग़म्वर हैं जो हर देश और हर क़ौम में आये और ख़ुदा का पैग़ाम लाये। ख़ुदा का रास्ता उनके विना तय नहीं हो सकता। यह वह वातें हैं जिन पर सभी पैग़म्वर एकमत हैं। इनमें किसी का मतभेद नहीं। दार्शनिकों एवं ज्ञानियों में कठोर मतभेद है। उनमें से दो भी किसी एक वात पर सहमत नहीं किन्तु यहाँ किसी एक वात पर भी दो पैग़म्वरों (ईशदूतों) में मतभेद नहीं।

लेकिन ज्ञान के लिए विश्वास ज़रूरी नहीं। आज हमारा ज्ञान कितना अधिक है किन्तु हमारा विश्वास कितना कम है। ज्ञान सदैव विश्वास पैदा नहीं करता। प्राचीन समय के दार्शनिकों में से अनेक विश्वास से वंचित थे और शंका से ग्रसित। आज भी उनका ज्ञान विश्वास पैदा करने के वजाय उलटा शक पैदा करता है। आज भी वड़े-वड़े ज्ञानी विश्वास को तरसते हैं। नवी सच्चा ज्ञान मात्र नहीं देते थे उस पर विश्वास (यक़ीन) भी प्रदान करते थे। ज्ञान वड़ी दौलत है किन्तु उस पर विश्वास उससे भी वड़ी दौलत है। ज्ञान विना विश्वास के ज़वान की वरजिश है और मन-मस्तिष्क का भोग।

पैग़म्बरों ने अपने मानने वालों को सच्चा ज्ञान दिया और दृढ़ विश्वास उन्होंने जो कुछ जाना उसको माना फिर अपने को उस पर न्योछावर कर दिया। उनके दिमाग़ इस ज्ञान से रोशन हुए और उनके दिल इस विश्वास से ताक़तवर। उनके अडिग विश्वास के क़िस्से इतिहास में पढ़िये। उनके विश्वास के परिणाम अपने आस-पास की दुनिया में देखिये।

आज यदि विश्वास होता तो अनैतिकता क्यों होती? अत्याचार क्यों फैलता? रिश्वत का बाजार क्यों गरम होता? क्या यह तमाम बुराइयाँ इसलिए हैं कि ज्ञान नहीं है। क्या लोग जानते नहीं कि चोरी करना पाप है, रिश्वत हराम है, जेब काटना अनैतिकता है। यह कौन कह सकता है? हम तो देखते हैं कि जहाँ ज्ञान अधिक है, वहाँ ख़राबियाँ भी अधिक हैं। जो लोग रिश्वत की बुराई पर किताब लिख सकते हैं और उसका इतिहास संकलित कर सकते हैं वह अधिक रिश्वत लेते हैं। जो चोरी की ख़राबी और उसके कुपरिणामों से अधिक परिचित हैं वह चोरी अधिक करते हैं। जेब कतरों को देखिये उनमें से अनेक ऐसे मिलेंगे जो जेब काटने के अपराध में कई-कई बार सजा काट चुके होते हैं। क्या उनसे अधिक कोई जेब काटने के परिणाम और सजा से परिचित होगा। यदि केवल ज्ञान पर्याप्त होता तो चोरी की सजा के बाद चोरी छूट जाती और एक बार अपराध करने और सजा भुगतने के बाद कोई दोबारा अपराध न करता किन्तु ऐसा नहीं हो रहा है। पता चला कि ज्ञान अकेले पर्याप्त नहीं।

फिर ज्ञान जरूरी और विश्वास जरूरी, किन्तु इसे व्यवहार में लाया जायेगा इसकी क्या गारन्टी है। बहुत से लोग जानते भी हैं और विश्वास भी रखते हैं कि शराब बुरी चीज है, उससे होने वाली हानि का अनुभव भी है और विश्वास भी, मगर पीते हैं। आपके शहर में बहुत से डाक्टर, हकीम होंगे जो बदपरहेज़ी करते हैं उन्हें विश्वास होता है कि बदपरहेज़ी ख़तरनाक है मगर वह बदपरहेज़ी कर गुज़रते हैं। क्योंकि उनके अन्दर अमल (व्यवहार) का तक़ाज़ा नहीं

होता तथा उनके अन्दर परहेज़ की इच्छा और बदपरहेज़ी से घृणा नहीं होती। बल्कि बदपरहेज़ी की इच्छा होती है और वह इस इच्छा का मुक़ाबिला नहीं कर सकते।

नबी ज्ञान व विश्वास के साथ यह तीसरी शक्ति भी प्रदान करते हैं अर्थात् अपने ज्ञान व विश्वास पर अमल करने की स्वेच्छा और अपनी ग़लत इच्छाओं का मुक़ाबिला करने की ताक़त। फलतः वह अपने ज्ञान व विश्वास से पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं और उनके अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं। उनका अन्तःकरण उनकी निगरानी करता है और ग़लत काम करने के समय उनका हाथ पकड़ लेता है।

हर पैग़म्बर ने यह तीनों दौलतें अपने-अपने युग के लोगों और अपनी-अपनी उम्मतों[1] को दीं। और उनके कारण लाखों लोगों की ज़िन्दगी बन गई। ज़िन्दगी की चूल अपनी जगह पर आ गई। मानवता पर वास्तविक उपकार इन्हीं पैग़म्बरों का है। अल्लाह का दरूद व सलाम हो उन पर कि उन्होंने मानवता का पथ-प्रदर्शन किया और उसे अन्त समय तबाही से बचा लिया।

किन्तु धीरे-धीरे यह दौलतें दुनिया से समाप्त होने लगीं। सच्चा ज्ञान लुप्त हो गया। विश्वास की दीपशिखा बुझ गई। नेक अमल की इच्छा मुर्दा हो गई। छठीं शताब्दी ई० आई तो यह तीनों दौलतें इतनी अप्राप्य हो चुकी थीं कि इनका पता लगाना कठिन था। पूरे-पूरे देश और पूरे-पूरे महाद्वीप में ढूँढे से भी एक अल्लाह का बन्दा न मिलता जो सच्चे ज्ञान और दृढ़ विश्वास की दौलत से मालामाल (सम्पन्न) हो। नबियों का लाया हुआ दीन और फैलाया हुआ यक़ीन सिमटते-सिमटते एक बिन्दु बन गया था। शंका तथा अकर्मण्यता (बे अमली) के अन्धेरों में ज्ञान तथा विश्वास की यह किरन कहीं-कहीं

---

1. किसी नबी पर ईमान लाने वाली और उसका अनुसरण करने वाली जमाअत जिसमें विभिन्न राष्ट्रों और देशों के लोग हो सकते हैं जिनकी बुनियाद किसी विशेष अक़ीदे पर होती है।

इस प्रकार चमकती थी जैसे बरसात की अन्धेरी रात में जुगनू चमकते हैं। विश्वास से युक्त लोगों का ऐसा अभाव था कि ईरान का एक नवयुवक सलमान फ़ारसी विश्वास और नेक अमल (सुकर्म) की खोज में निकलता है तो ईरान से शाम (सीरिया) और वहाँ से हेजाज़[1] पहुँच जाता है और इन तीन देशों में उसे केवल चार ऐसे लोग मिलते हैं जिन्हें विश्वास की दौलत नसीब है।

इस घटाटोप अन्धेरे में ख़ुदा का अन्तिम पैग़म्बर आता है और वह इन तीनों दौलतों को इतनी सर्व-व्यापी बना देता है कि इसमे पहले कभी इतनी व्यापक न थीं। जो दौलत किसी-किसी के पास थी जो घरों से निकल कर महलों में और महलों से निकल कर शहरों में नहीं फैली थी, वह घर-घर फैल जाती है और पूर्व से पश्चिम तक सर्व व्याप्त हो जाती है।

"रहे इससे महरूम आबी न ख़ाकी
हरी हो गई सारी खेती ख़ुदा की"

वह इन तीन बातों की शिक्षा ही नहीं देता, इनका सूर फूंक देता है। दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक कोई कान वाला ऐसा नहीं जो कह सके कि उसने इस सूर (शंखनाद) की आवाज़ नहीं सुनी और जिसने नहीं सुनी उसके कान का दोष है नबी के एलान का दोष नहीं। आज दुनिया का कौन-सा कोना है जहाँ "अश्हदुअललाइलाह इल्लल्लाहु" और "अश्हदुअन्नमुहम्मदर्रसूलुल्लाह" का तराना सुनने में नहीं आता। जब दुनिया की तमाम आवाजें थक कर सो जाती हैं, जब जीते जागते शहर पर मौत की सी नींद छा जाती है, जब दुनिया सो रही होती है उस समय भी कानों में यही सदा आती है "ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं और मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह अल्लाह के पैग़म्बर हैं"।

आज रेडियो के माध्यम से दुनिया के कोने-कोने में आवाज़ पहुँचती

---

1. अरब प्रायद्वीप की लाल सागर को छूती हुई वह तटीय पट्टी जिसमें मक्का और मदीना स्थित हैं।

है और घर-घर पैग़ाम पहुँच जाता है किन्तु क्या किसी रेडियो ने, चाहे वह अमरीका का हो अथवा ब्रिटेन का, किसी तथ्य को किसी ज्ञान को इस प्रकार दुनिया में फैलाया है जिस प्रकार यह ज्ञान सर्व व्याप्त हुआ जिसकी सदा अरब के नबी-ए-उम्मी[1] ने कोहे सफ़ा[2] की चोटी पर चढ़ कर लगाई थी।

इन्सान कभी तरंग में आता है और बच्चों-सी मासूमियत के साथ अपने मालिक से कुछ कहने लगता है। ऐसी ही तरंग में इक़बाल ने इन्सानों की तरफ़ से अपने मालिक के दरबार में कहा था :—

'तेरा ख़राबा[3] फ़रिश्ते न कर सके आबाद'

अगर आज मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक अदना गुलाम अर्ज़ करे तो क्या बेजा है कि ऐ! ख़ुदा! तेरी ख़ुदाई बरहक़!! तू मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ालिक़ (बनाने वाला) और इस सारी दुनिया का ख़ालिक़ व मालिक है और हर चीज़ पर तेरी हुकूमत है! लेकिन क्या तेरे भक्तों और तेरी सृष्टि में से किसी ने तेरा नाम इस प्रकार फैलाया और दुनिया के कोने-कोने में पहुँचाया जिस प्रकार तेरे बन्दे और पैग़म्बर मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने! यह कोई बेअदबी और धृष्टता नहीं। इसमें भी प्रशंसा उसी ख़ुदा की है जिसने मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसा पैग़म्बर भेजा और उन को अपना नाम फैलाने और अपना दीन चमकाने की ताक़त और तौफ़ीक़[4] दी।

हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बदर के मैदान में जब अपनी 14-15 साल की कमाई अल्लाह के दीन की मदद के लिए

---

1. वह पैग़म्बर जो लिखना-पढ़ना न जानता हो।
2. मक्का के पास एक पहाड़ी का नाम है।
3. घर।
4. किसी काम के करने में ख़ुदा की मदद।

सामने रख दी और 313 को एक हज़ार के मुक़ाबिले में लाकर खड़ा कर दिया तो ज़मीन पर सर रखकर अपने मालिक से यही कहा था "ऐ ! अल्लाह !! अगर तू इस मुट्ठी भर जमात (टोली) को आज नष्ट कर देने का फ़ैसला करता है तो क़यामत तक तेरी इबादत न हो सकेगी"।

मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तौहीद की जो सदा लगाई थी, उससे दुनिया का कोई धर्म, कोई दर्शनशास्त्र और कोई दिमाग़ प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। जब से दुनिया ने सुना कि इन्सान के लिए ख़ुदा के सिवा किसी और के सामने झुकना अपमान है। ख़ुदा ने फ़रिश्तों को आदम अ० के सामने इसलिए झुकाया ताकि सब सज्दे उसकी सन्तान पर हराम हो जायें। वह समझ लें कि जब इस सृष्टि के कारिन्दे हमारे सामने झुका दिये गये तो हमको इस दुनिया की किसी चीज के सामने झुकना कब शोभा देता है। जब से दुनिया ने तौहीद की यह हक़ीक़त और इन्सान ने अपनी यह हैसियत सुनी तब से शिर्क स्वयं अपनी निगाहों में गिर गया। उसको हीन-भाव ने घेर लिया। आपको हज़रत मोहम्मद स० के अभ्युदय के बाद उसके टोन में अन्तर महसूस होगा। अब वह अपने किये पर इतराता नहीं, वह उसका कारण और दार्शनिक हल ढूंढता है। यह इस बात का प्रमाण है कि तौहीद की आवाज़ ने दिल में घर कर लिया है।

फिर मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस ज्ञान व विश्वास के साथ वह ताक़त भी पैदा करके दिखा दी जिसमें हज़ारों पुलिस सैकड़ों अदालतों और बीसियों हुकूमतों से ज्यादा ताक़त है अर्थात् अन्तःकरण की शक्ति, नेकी की तरफ़ झुकाव, गुनाह से नफ़रत और अपने मन (नफ़्स) का स्वयं लेखा-जोखा करना।

यह इसी ताक़त की देन थी कि एक सहाबी जिनसे एक बड़ा गुनाह हो जाता है वह बेचैन हो जाते हैं, अन्तःकरण चुटकियाँ लेने लगता है। वह आपकी सेवा में उपस्थित होते हैं और विनती करते हैं "हुज़ूर स० ! मुझको पवित्र कर दीजिए"। आप मुंह फेर लेते हैं।

वह उसी ओर आकर खड़े हो जाते हैं। आप दूसरी ओर मुख कर लेते हैं वह उस ओर आकर खड़े हो जाते हैं। आप जाँच करवाते हैं कि उनका मानसिक सन्तुलन खराब तो नहीं। जब मालूम होता है कि उनका मानसिक सन्तुलन ठीक है, तो आप उनको सजा दिलवाते हैं। किस चीज ने उनको सजा पर आमादा (तत्पर) किया और कौन सी चीज उनको स्वतः खींच कर लाई !

ग़ामेदिया एक अनपढ़ औरत थी किसी देहात की रहने वाली। वह एक बार बड़े गुनाह से ग्रसित हो जाती है। न कोई देखने वाला न सुनने वाला। मगर उनके दिल में एक फाँस थी जो उनको चैन न लेने देती। उनको खाने-पीने में मजा न आता था। वह खाना खाती तो उनका मन कहता कि तुम अपवित्र हो, पानी पीती तो दिल कहता कि तुम अपवित्र हो। अपवित्र का क्या खाना क्या पीना ? तुम्हें पहले पवित्र होना चाहिए। इस गुनाह की पवित्रता सजा के बिना सम्भव नहीं। वह स्वयं हजरत मोहम्मद स० की सेवा में उपस्थित होती है और बार-बार विनती करती है कि उनको पवित्र कर दिया जाये। यह मालूम करके कि उनके पेट में बच्चा है, आप फ़रमाते हैं कि इस बच्चे का क्या दोष, इसकी जान तुम्हारे साथ क्यों जाये, जब यह हो जाय तब आना। विचार कीजिये उनको अवश्य इसमें कुछ समय लगा होगा। क्या उन्होंने खाया-पिया न होगा। क्या जिन्दगी ने स्वयं उनसे तक़ाज़ा न किया होगा। क्या खाने-पीने के स्वाद ने उनके अन्दर जीने की इच्छा न पैदा की होगी ? क्या उनके मन ने उनको यह न समझाया होगा कि अब वह हुजूर स० के पास जाने का इरादा तोड़ दें। किन्तु वह अल्लाह की बन्दी पक्की रही और कुछ समय बाद बच्चे को लेकर आई और निवेदन किया कि हुजूर मैं इससे फ़ारिग़ (निवृत्त) हो गई। अब मेरी तहारत (पवित्रता) में क्यों देर हो ? फ़रमाया नहीं ! नहीं !! अभी इसको दूध पिलाओ जब दूध छूटे तब आना। आपको मालूम है कि उसको दो साल तो अवश्य लगे होंगे। यह दो साल कैसी आजमाइश के थे। न पुलिस थी, न निगरानी,

न मुचिल्का न जमानत। कैसे-कैसे विचार उसके मन में आये होंगे। बच्चे की मासूम (निष्पाप) सूरत उसको जीने की दावत देती होगी। उसकी मुस्कान जीने की इच्छा उत्पन्न करती होगी। और बच्चा अपनी मूक भाषा में कहता होगा कि माँ! मैं तो तेरी ही गोद में पलूंगा और तेरी उंगली पकड़ कर चलूंगा किन्तु उसका अन्तःकरण कहता था, नहीं! तेरी माँ अपवित्र है, उसे सबसे पहले पवित्र होना है। दिल का विश्वास कहता था कि सर्वशक्तिमान के यहाँ जाना है, वहाँ की सजा सख़्त है। वह फिर उपस्थित होती है। रोटी का टुकड़ा बच्चे के मुंह में है, वह कहती है, "या रसूलुल्लाह! देखिये इस बच्चे का दूध भी छूट गया और वह रोटी खाने के काबिल हो गया है। अब मेरी पवित्रता में क्या देर है? अन्ततः ख़ुदा की इस सच्ची और पक्की बन्दी को सजा दी जाती है और हुजूर स० फ़रमाते हैं कि उसने ऐसी सच्ची तौबा की है कि उस अकेली की तौबा अगर सारे मदीने में बाँट दी जाये तो सबके लिए काफ़ी हो।

मैं पूछता हूँ कि वह क्या चीज थी, जो बिना हथकड़ी, बेड़ी के, बिना मुचिल्का व जमानत के, बिना पुलिस व थाना के उसको खींच कर लाती है और वह सजा के लिए बार-बार विनती करती है। आज हजारों पढ़े-लिखे, शिक्षित स्त्री-पुरुष हैं जिनका ज्ञान और हानि का विश्वास उनको ग़लत काम से रोक नहीं सकता और अच्छे काम पर आमादा नहीं कर सकता।

मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया को यही तीन अनमोल मोती प्रदान किये—सच्चा ज्ञान, पूर्ण विश्वास और हृदय से नेक काम करने की प्रबल इच्छा। दुनिया को न इससे अधिक क़ीमती पूंजी कभी मिली, न किसी ने उस पर आपसे बढ़कर एहसान किया।

दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति को गर्व करना चाहिए कि मानव जाति में एक ऐसा मानव पैदा हुआ जिससे मानवता का सर ऊँचा और नाम रौशन हुआ। अगर आप न आते तो दुनिया का नक़्शा क्या होता

और हम मानवता के गौरव व सम्मान के लिए किसे प्रस्तुत करते ? मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर इन्सान के हैं। उनसे इस दुनिया की रौनक़ और मानव जाति का गौरव है। वह किसी क़ौम की सम्पत्ति नहीं उन पर किसी देश का इजारा नहीं। वह पूरी मानवती की पूँजी हैं। जिसपर सबको गर्व होना चाहिए आज किसी देश का मानव हर्ष एवं गर्व के साथ क्यों नहीं कहता कि मेरा सम्बन्ध उस मानव जाति से है जिसमें मोहम्मद रसूलुल्लाह स० जैसा परिपूर्ण मानव पैदा हुआ।

आज मनुष्य का कौन-सा वर्ग है जिसपर आपका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष उपकार नहीं ? क्या पुरुषों पर आपका एहसान नहीं ? आपने उन्हें पुरुषार्थ और मनुष्यता की शिक्षा दी। क्या स्त्रियों पर आपका एहसान नहीं ? आपने उनके अधिकार बतलाये और उनके लिए निर्देश और वसीयतें जारी कीं। आपने फ़रमाया, "जन्नत माओं के क़दमों के नीचे है"। क्या कमज़ोरों पर आपका एहसान नहीं कि आपने उनकी हिमायत की और फ़रमाया "मज़लूम (उत्पीड़ित) की बद्दुआ (श्राप) से डरो कि उसके और ख़ुदा के बीच कोई परदा नहीं। ख़ुदा कहता है कि मैं निराशों के पास हूँ"। क्या बलवानों और शासकों पर आपका एहसान नहीं कि आपने उनके अधिकार और कर्त्तव्य भी बतलाये और सीमायें भी बतलाईं। और इन्साफ़ करने वालों और ख़ुदा से डरने वालों को बशारत सुनाई कि न्यायप्रिय राजा रहमत के साये में होगा। क्या व्यापारियों पर आपका एहसान नहीं कि आपने व्यापार का महत्व और इस पेशे की शराफ़त बतलाई और स्वयं व्यापार करके इस वर्ग की इज्ज़त बढ़ाई। क्या आपने यह नहीं फ़रमाया कि मैं और सत्यवादी और दयानतदार व्यापारी जन्नत में क़रीब-क़रीब होंगे। क्या आपका मज़दूरों पर एहसान नहीं कि आपने ताकीद फ़रमाई कि मज़दूर की मज़दूरी पसीना सूखने से पहले दे दो। क्या जानवरों तक पर आपका एहसान नहीं कि आपने फ़रमाया कि हर वह प्राणी जिसमें एहसास (अनुभूति) व ज़िन्दगी है उसको आराम

पहुँचाना और खिलाना-पिलाना भी सदक़ा (दान) है। क्या समस्त मानव जाति पर आपका एहसान नहीं कि रातों को उठ-उठकर आप गवाही देते थे कि ऐ ख़ुदा ! तेरे सब बन्दे भाई-भाई हैं। क्या सारी दुनिया पर आपका एहसान नहीं कि सबसे पहले दुनिया ने आप ही की ज़बान से सुना कि ख़ुदा किसी देश, जाति, नस्ल और बिरादरी का नहीं सारे जहानों और सारे इन्सानों का है। जिस दुनिया में आर्यों का ख़ुदा, यहूदियों का ख़ुदा, मिस्रियों का ख़ुदा, ईरानियों का ख़ुदा कहा जाता था वहाँ "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन" (सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो जहानों का पालनहार है) का एलान हुआ और इसको नमाज़ का एक अंश बना दिया गया।

हमारी आपकी दुनिया में ज्ञानी और दार्शनिक भी आये, साहित्य-कार और कवि भी, विजेता और सूरमा भी, राजनीतिक और राष्ट्रीय नेता भी, आविष्कारक और वैज्ञानिक भी, मगर किसके आने से दुनिया में वह बहार आई जो पैग़म्बरों के आने से, फिर सबसे अन्त में सबसे बड़े पैग़म्बर मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने से आई। कौन अपने साथ वह हरियाली, वह बरकतें, वह रहमतें मानव जाति के लिए वह दौलतें और मानवता के लिए वह नेमतें (वरदान) लेकर आया जो मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर आये। तेरह सौ वर्ष का मानव इतिहास पूरे आत्म विश्वास के साथ आपको सम्बोधित करके कहता है :—

"सर सब्ज़ सब्ज़ा हो जो तेरा पायमाल हो
ठहरे तू जिस शजर के तले वह निहाल हो"

(अर्थात् आपके पैर जिस घास पर पड़ें वह हरी हो जाये और जिस वृक्ष के नीचे आप ठहरें वह निहाल हो जाय)

उम्मत के वफ़ूद[1] आक़ा के हुज़ूर में[2]

इतिहासकारों और लेखकों को ईश्वर क्षमा करे, पवित्र से पवित्र स्थलों और अच्छे से अच्छे समय में भी इतिहास से उनकी अभिरुचि और उनके सोचने का ढंग उनका साथ नहीं छोड़ते और वह कुछ एक क्षणों के लिए भी इससे आज़ाद नहीं हो पाते। वह जहाँ भी होते हैं अपने ज्ञान व अध्ययन के वातावरण में साँस लेते हैं और वर्तमान का नाता सदैव भूतकाल से जोड़ना चाहते हैं। दृश्यों को देखकर उनका मन बहुत जल्द इतिहास की उस छटा की खोज में निकल जाता है जिसके कारण इन दृश्यों का अस्तित्व बाक़ी है।

मैं कल मस्जिद-ए-नबवी में रौज़-ए-जन्नत[3] में बैठा हुआ था। मेरे चारों ओर नमाज़ियों और इबादत गुज़ारों का जमघट था। उनमें कुछ लोग सज्दे में थे और कुछ रुकू[4] में। क़ुरआन के पाठ की आवाज़ें वातावरण में इस प्रकार गूँज रही थीं जिस प्रकार मधुमक्खियाँ अपने छत्ते में भनभना रही हों। उस समय की छटा ऐसी थी कि मुझे इतिहास और इतिहास के महापुरुषों को थोड़ी देर के लिए भूल जाना चाहिए था किन्तु इतिहास की पुरानी यादें बादलों की भाँति मेरे मन-मस्तिष्क पर छा गईं और मेरा उन पर कोई ज़ोर न चल सका।

---

1. शिष्टमण्डल।
2. ज़िलहिज्जा सन् 1381 हि० में मउदी रेडियो स्टेशन जद्दा से अरबी में प्रसारित एक तक़रीर के उर्दू अनुवाद पर आधारित।
3. वह स्थान जिसके लिए हदीस में आया है कि मेरे घर और मेरे मेम्बर (मस्जिद की वह जगह जहाँ खड़े होकर लोगों को सम्बोधित किया जाता है) के बीच जन्नत की क्यारियों में से एक क्यारी है।
4. नमाज़ में झुकने की विशिष्ट स्थिति।

मुझे ऐसा महसूस हुआ कि इस उम्मत के कुछ विख्यात व्यक्तियों और पथ प्रदर्शकों को एक नया जीवन प्रदान किया गया है और वह शिष्ट मण्डल के रूप में एक-एक करके नबी स० के दरबार में उपस्थित हो रहे हैं और मस्जिद-ए-नबवी में नमाज अदा करने के बाद उस महान नबी स० को दरूद व सलाम की भेंट और श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। और उसके एहसान को स्वीकार कर रहे हैं। विभिन्न युगों, स्थानों और वर्गों के होते हुए भी वह सब एक स्वर से इस बात की गवाही दे रहे हैं कि आप ही वह नबी हैं जो अल्लाह के हुक्म से उनको अन्धेरे से उजाले की ओर, दुर्भाग्य से सौभाग्य की ओर, मख़्लूक़ (सृष्टि) की इबादत से एक ख़ुदा की इबादत की ओर और धर्मों के अत्याचार से इस्लाम के न्याय की ओर और दुनिया की तंगी से उसकी कुशादगी (विशालता) की ओर लाये। वह स्वीकार कर रहे हैं कि वह इस्लाम ही की पैदावार हैं और उनका सारा अस्तित्व एवं जीवन नबूवत के प्रति आभारी है। यदि, ईश्वर न करे, उनसे वह सब वापस ले लिया जो अल्लाहतआला ने उनको इस नबी स० के माध्यम से प्रदान किया था और नबूवत की वह भेंट उनसे छीन ली जाये जिन्होंने दुनिया में उनको सम्मान व श्रद्धा दी थी तो उनकी हैसियत एक बेजान ढाँचे से अधिक न रह जायेगी, और वह इतिहास के उस सबसे अन्धकारमय युग की ओर वापस चले जायेंगे जहाँ जंगल के क़ानून और अत्याचार तथा उत्पीड़न का दौर-दौरा था, और वर्तमान सभ्यता एवं संस्कृति का नाम व निशान तक मिट जायेगा।

अचानक मेरी निगाह एक ओर उठ गयी। मैंने देखा कि बाब-ए-जिब्रील[1] से (जो मुझसे अधिक निकट था) एक दल प्रवेश कर रहा है। शान्ति और शालीनता में डूबे हुए लोग जिनके माथे पर ज्ञान और बुद्धि की ज्योति चमक रही थी। वह बाब-ए-रहमत[2] और बाब-ए-

---

1. मस्जिद-ए-नबवी का महत्वपूर्ण एवं प्राचीन प्रवेश द्वार जो नबी स० की क़ब्र से सबसे अधिक निकट है।
2. मस्जिद-ए-नबवी का दूसरा प्रवेश द्वार।

जिब्रील के बीच वाले हिस्से में फैल गये। वह इतनी बड़ी संख्या में थे कि उनकी गणना का कोई प्रश्न नहीं था। मैंने दरबान से पूछा— यह लोग कौन हैं? उसने कहा कि इस उम्मत के इमाम और अगुवा, मानवता के परोपकारी और मानव जाति के विशिष्ट एवं गौरवपूर्ण नमूने हैं। इनमें से हर एक पूरी पूरी क़ौम का इमाम, पूरे पूरे पुस्तकालय और विचारधारा का संस्थापक, पूरी नस्ल की शिक्षा-दीक्षा का जिम्मेदार और कला-कौशल का आविष्कारक है। इनकी चिरस्थायी और अमिट उत्कृष्ट कृतियां (शाहकार) और नमूने आज भी देखे जा सकते हैं। इनके ज्ञान, खोज एवं संघर्ष की रोशनी में कई कई नस्लों ने जीवन व्यतीत किया है। उसने जल्दी जल्दी कुछ एक व्यक्तियों के नाम भी मुझे बता दिये। इमाम मालिक, इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद बिन हंबल, लैस बिन साद मिस्री, इमाम औज़ाई, इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम, तक़ीउद्दीन बिन तैमिया, इब्न क़दामा, अबू इसहाक़ अल्शात्बी, कमाल इब्न हमाम शाह वली उल्ला देहल्वी। यद्यपि इन महान आत्माओं में समय, देश, ज्ञान तथा दीन की हैसियत से बड़ा अन्तर था तथापि इन सब ने इस अवसर पर नबी स० के दरबार में श्रद्धांजलि अर्पित की।

मैं ने देखा कि सबसे पहले उन्होंने तहय्यतुल मस्जिद[1] की नमाज़ पूर्णतया एकाग्रचित होकर अदा की, फिर बड़े अदब के साथ हुज़ूर स० के रौज़े की ओर बढ़े और बहुत जंचे तुले, संक्षिप्त, मार्मिक एवं भावपूर्ण शब्दों में सलाम पेश किया। मुझे ऐसा महसूस होता है कि उनकी आवाज़ इस समय भी मेरे कानों में गूंज रही है। उनकी आंखों में आंसू थे और वह भर्राई हुई आवाज़ में कह रहे थे :—

"या रसूलुल्लाह ! अगर आपकी चिरस्थायी, विशाल, परिपूर्ण, न्यायपूर्ण और कुशादा शरीअत न होती और उसके वह सिद्धान्त न होते जिनसे मानव बुद्धि ने और उसकी क्षम-

---

1. मस्जिद में प्रवेश करने के उपलक्ष में पढ़ी जाने वाली नफ़्ल नमाज़।

ताओं ने नये नये गुल बूटे पैदा किये और दुनिया की झोली बहुमूल्य और सुगन्धित फूलों से भर दिया और उसकी वह जतनपूर्ण और मन्त्रमुग्ध कर देने वाली व्यवस्था न होती जिसने मानव के अन्दर सूझबूझ तथा ग्रहण करने व ग्राह्य बनने की क्षमता उत्पन्न की और यदि वह मानवता की एक प्रमुख आवश्यकता न होती तो न इस महान फ़िक़्ह[1] का कोई अस्तित्व होता न यह महान इस्लामी क़ानून होता जिससे इस समय तक हर क़ौम का दामन ख़ाली है, न इतना बड़ा इस्लामी पुस्तकालय जन्म लेता जिसके सामने दुनिया का सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य हेय है। यदि शिक्षा के प्रसार और ख़ुदा की निशानियों और उसकी महान् शक्ति पर विचार करने और बुद्धि से काम लेने की आपने ऐसी सशक्त दावत न दी होती तो शिक्षा का यह वृक्ष अधिक दिनों तक हरा भरा न रह सकता और न ही उसकी छाया तमाम दुनिया पर इस प्रकार होती जैसी आज दिखाई पड़ती है। मानव बुद्धि पर पूर्ववत् बेड़ियां पड़ी होतीं और दुनिया रौशनी से वंचित होती।"

मैं इस जमाअत को जी भर के देख न सका था कि मेरी नज़र एक दूसरे गिरोह पर पड़ी जो बाब-ए-रहमत से होकर अन्दर की ओर बढ़ रहा था। उनके चेहरों पर साधना और भक्ति, तक़वा[2] और इबादत के आसार (छाप) थे। मुझे बताया गया कि इस दल में हसन बसरी, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़, सुफ़ियान सूरी, फ़ज़ील बिन अयाज़, दाऊद अल्ताई, इब्न अल्समाक, शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी, निज़ामुद्दीन औलिया, और अब्दुल वहाब अल्मुत्तक़ी जैसे महानुभाव भी

---

1. इस्लामी न्याय-शास्त्र।
2. दुनिया के कंटकाकीर्ण रास्ते से दामन बचाकर निकल जाना। अल्लाह का डर।

उपस्थित हैं जिन्होंने अपने अनुकरणीय पूर्वजों की याद ताज़ा कर दी। नमाज़ के बाद यह लोग भी आपके रौज़े के सामने खड़े हुए और अपने नबी स० व पेशवा और सबसे बड़े गुरू व पथप्रदर्शक को दरूद व सलाम का तुहफ़ा पेश करने लगे। वह कह रहे थे :—

"या रसूलुल्लाह ! अगर हमारे सामने वह व्यवहारिक पक्ष न होता जो आपने प्रस्तुत किया और वह प्रकाश स्तम्भ न होता जिसे आपने बाद में आने वालों के लिए स्थापित किया, अगर आपका यह क़ौल (कथन) न होता कि, "ऐ अल्लाह ! ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी है," अगर आप की यह वसीयत न होती कि, "दुनिया में इस प्रकार ज़िन्दगी गुज़ारो जिस प्रकार कोई मुसाफ़िर या राही ज़िन्दगी गुज़ारता है।" अगर जीवन यापन का वह तरीक़ा न होता जिसका वर्णन हज़रत आयशा र० ने इस प्रकार किया है, "एक चाँद के बाद दूसरा चाँद और दूसरे चाँद के बाद तीसरा चाँद निकल आता था और आपके घर में आग न जलती थी, न चूल्हे पर देगची चढ़ाने की नौबत आती थी," तो हम दुनिया पर इस प्रकार आख़िरत को प्राथमिकता न दे सकते। और न हम मात्र गुज़ारे पर बसर कर सकते और न सन्तोष को अपने जीवन का अंश बना सकते, न हम मन के भुलावे पर क़ाबू पा सकते और न दुनिया के माया जाल से मुक़ाबिला कर सकते।"

उनके गारिमापूर्ण शब्द अभी पूर्णरूप से मेरे मन-मस्तिष्क में उतर भी न पाये थे कि मेरी नज़र एक और गिरोह पर पड़ी जो बाबुन्निसा[1] से बड़े अदब के साथ गुज़र रहा था। बनाव सिंगार के उन दृश्यों से जो इस्लामी उसूल के प्रतिकूल हैं, यह गिरोह पूर्णतः सुरक्षित और ख़ाली था। यह विभिन्न क़ौमों और दूर दूर के देशों की

---

1. मस्जिद-ए-नबवी का प्राचीन द्वार जो प्रारम्भ काल में स्त्रियों के प्रवेश के लिए निर्धारित था।

नेक, इवादत गुज़ार और हयादार (लाजवन्ती) औरतें थीं जो अरब व अजम तथा पूर्व व पश्चिम के विभिन्न प्रदेशों से सम्बन्ध रखती थीं। बहुत दबी जबान में बड़े अदब के साथ अपनी श्रद्धा और भावना इस प्रकार प्रकट कर रही थीं :—

"हम आप पर दरूद व सलाम भेजते हैं, या रसूलुल्लाह ! ऐसे वर्ग का दरूद व सलाम जिस पर आपका बहुत बड़ा एह-सान है। आपने हम को ख़ुदा की मदद से अज्ञानता की बेड़ियों और बन्दिशों (बन्धनों), जाहिली आदतों और पर-म्पराओं, सोसाइटी के अत्याचार और मर्दों की ज्यादती से छुटकारा दिलाया। लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न करने की प्रथा को समाप्त किया, मांओं की नाफ़रमानी (अवज्ञापालन) पर कठोर दण्ड की ख़बर सुनाई। आपने फ़रमाया कि जन्नत मां के क़दमों के नीचे है। आपने विरासत (उत्तराधिकार) में हमको शामिल किया और उसमें माँ, बहन, बेटी और बीबी की हैसियत से हम को हिस्सा दिलाया। यौम-ए-अरफ़ा[1] के प्रसिद्ध ऐतिहासिक सम्बोधन में भी आपने हमें भुलाया नहीं और कहा कि "औरतों के बारे में ख़ुदा से डरो इसलिए कि तुमने उनको अल्लाह के नाम के वास्ते से हासिल किया है।" इसके अतिरिक्त विभिन्न अवसरों पर आपने मर्दों को औरतों के साथ सद्व्यवहार उनके अधिकारों की अदायगी और अच्छे रखरखाव की शिक्षा दी। अल्लाह तआला आपको हमारे वर्ग की ओर से वह बेहतर से बेहतर बदला दे जो नबियों और अल्लाह के नेक बन्दों को दी जा सकती है।"

यह नर्म आवाज़ें मेरे कानों में गूंज रही थीं कि एक और दल

---

1. हिज्री साल के बारहवें महीने ज़िलहिज की नवीं तारीख जिसमें हाजी मक्का के निकट अरफ़ात के मैदान में जमा होते हैं और उन्हें संबोधित किया जाता है।

दिखाई पड़ा जो बाबुस्सलाम[1] की ओर से आ रहा था। मैंने देखा कि वह कला-कौशल के आविष्कारकों और व्याकरण के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वानों का दल था। इसमें अबुल अस्वद अल्दयली, ख़लील बिन अहमद, सैबुविया, कसाई, अबू अली फ़ारसी, अब्दुलक़ादिर अल्जर-जानी, अल्सका की, मुजदिद्दीन-फ़ीरोज़ाबादी, सैय्यद मुर्तज़ा बल्ग्रामी भी थे जो अपनी कलाओं का सलाम पेश कर रहे थे। वह अत्यन्त गम्भीर शब्दों में कह रहे थे :—

"या रसूलुल्लाह ! अगर आप न होते और यह पवित्र किताब न होती जो आप पर नाज़िल (अवतरित) हुई, अगर आपकी हदीसें न होतीं और यह शरीअत न होती जिसके सामने सारी दुनिया नतमस्तक थी और वह इसके कारण अरबी भाषा सीखने और इसमें निपुणता प्राप्त करने पर मज-बूर थी, तो फिर यह ज्ञान भंडार भी न होता जिसमें आज हमको प्रतिनिधित्व का गौरव प्राप्त है। यह अलंकारिक भाषा, यह वर्णन शैली, और साहित्य के यह दमकते मोती कुछ भी न होते, न यह बड़े बड़े विशालकाय शब्दकोष होते और न अरबी भाषा का यह निखार होता, न हम इस रास्ते में इस प्रकार घोर परिश्रम के लिए तैयार होते (जिसके यहां भाषाओं और बोलियों की कोई कमी न थी) अरबी सीखने और इसमें निपुणता प्राप्त करने की कोई इच्छा न होती और न इसमें वह लेखक पैदा होते जिनकी भाषा व साहित्य का साहित्यकारों ने लोहा मान लिया। या रसूलुल्लाह ! आप ही हमारे और इस्लाम में पैदा होने वाली इन कलाओं के बीच वास्ता (माध्यम) और कड़ी थे जो आपके अभ्युदय के बाद पैदा हुईं। वस्तुत: केवल आप ही अरब व अजम को जोड़ने वाले हैं। आप ही का व्यक्तित्व है जिसने बीच की इस खाई को

---

1. मस्जिद-ए-नबवी का एक प्रवेश द्वार।

समाप्त किया और अरब व अजम, पूरब और पच्छिम को गले मिला दिया। आपका कितना एहसान है हमारी इस बुद्धि और ज्ञान की पराकाष्ठा पर, आपका कितना उपकार है ज्ञान के इस संचित भंडार पर, मानव बुद्धि की उपज पर, और लेखनी के चमत्कार पर। या रसूलुल्लाह! अगर आप न होते तो यह अरबी भाषा बहुत सी अन्य भाषाओं की तरह दुनिया से नापैद हो जाती। यदि क़ुरआन मजीद का अजर व अमर सहीफ़ा[1] इसका रखवाला न होता तो इसमें इतना परिवर्धन हो जाता कि इसकी सूरत ही बिगड़ जाती और वह एक नयी भाषा बन जाती जैसा कि अनेक भाषाओं के साथ हुआ है। अजमी शब्द और स्थानीय भाषायें इसको निगल जातीं और इसकी असलियत समाप्त हो जाती। यह आपके शुभागमन, इस्लामी शरीअत और इस पवित्र किताब की देन है, जिसने इस भाषा को मिटने से बचा रक्खा है, और इस्लामी दुनिया के लिए इसकी इज़्ज़त व मुहब्बत वाजिब करदी है और हर मुसलमान को इसका प्रेमी बना दिया है। आप ही के कारण अल्लाह ने इस भाषा को स्थायित्व प्रदान किया और इसके ठहराव और विकास की ज़मानत की। इसलिए हर उस व्यक्ति पर जो इस भाषा में बात करता है या लिखता है अथवा इसके कारण कोई उच्च पद प्राप्त करता है या इसकी दावत देता है, आप का एहसान है और वह इस एहसान से इनकार नहीं कर सकता और न इसके ऋण से कभी उऋण हो सकता है।"

मैं उनके इन आभारपूर्ण शब्दों को ध्यान से सुन रहा था कि अचानक मेरी निगाह बाब-ए-अब्दुल अज़ीज़[2] पर जाकर ठहर गई।

---

1. आसमानी किताब।
2. मस्जिद-ए-नबवी का नया प्रवेश द्वार।

इस द्वार से एक ऐसा दल प्रवेश कर रहा था जिस पर विभिन्न क़ौमों और विभिन्न मुल्कों के रंग झलक रहे थे। इसमें दुनिया के बड़े बड़े राजा और इतिहास के विशिष्ट बादशाह और शासक शामिल थे। हारूं रशीद, वलीद बिन अब्दुल मलिक, मलिक शाह सलजूक़ी, सलाहुद्दीन अय्यूबी, महमूद ग़ज़नवी, ज़ाहिर बेबर्स, सुलेमान आज़म, औरंगज़ेब आलमगीर भी इस दल में शामिल थे। उन्होंने अरदलियों और चोबदारों को द्वार के बाहर ही छोड़ दिया था और नज़रें झुकाये हुए बड़े अदब के साथ धीरे धीरे बात करते हुए चल रहे थे मेरी निगाहों के सामने उन सबके व्यक्तित्व और कृतत्व उभरने लगे। मेरी आंखों में उस लम्बी चौड़ी दुनिया का नक़्शा फिर गया जिस पर उनका सिक्का चलता और उनका डंका बजता था। उनकी बादशाही की तस्वीर एकाएक मेरे सामने आ गई जो उनको दुनिया की बड़ी बड़ी क़ौमों, ताक़तवर सलतनतों और अत्याचारी राजाओं पर हासिल थी। उनमें वह हस्ती[1] भी थी जिसने बादल के एक टुकड़े को देखकर यह ऐतिहासिक वाक्य कहा था, "तू जहाँ चाहे जाकर बरस तेरा ख़ेराज अन्ततः मेरे ही ख़ज़ाने में आयेगा"। वह व्यक्ति[2] भी था जिसके राज्य का फैलाव इतना था कि अगर सबसे तेज़ रफ्तार सांडनी सवार राज्य के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाना चाहता तो यह पन्द्रह महीने से कम में असम्भव था। इनमें वह शासक[3] भी थे जो आधे भूतल पर शासन करते थे और बड़े बड़े राजा उनको ख़ेराज (टैक्स) देने पर मजबूर थे ऐसे शासक[4] भी थे जिनकी हैबत से सम्पूर्ण योरोप काँपता था और जिनके शासनकाल में मुसलमानों का यह दबदबा था कि जब वह योरोप के देशों में जाते थे तो उनके दीन के सम्मान में और उनके दबदबा के प्रभाव से गिरजों के घंटे बजना बन्द हो जाते थे। इस

---

1. हारूँ रशीद की तरफ इशारा है।
2. वलीद बिन अब्दुल मलिक की ओर संकेत है।
3. मलिक शाह सलजूक़ी।
4. तुर्की के बादशाह सुलेमान आज़म।

प्रकार के अनेक राजा महाराजा इस दल में थे। वह मस्जिद-ए-नबवी में नमाज़ अदा करने के लिए आगे बढ़ रहे थे और हुज़ूर स० को दरूद व सलाम पेश करना चाहते थे और इसे अपने लिए सबसे बड़ा गौरव और सम्मान समझते थे और तमन्ना करते थे कि काश उनकी यह नमाज़ और यह दरूद व सलाम स्वीकार हों। मैंने देखा कि वह लरज़ते हुए क़दमों के साथ धीरे-धीरे आगे की ओर बढ़ रहे थे उनके दिलों पर हैबत तारी थी। यहां तक वह "सुफ़्फ़ा" के निकट पहुंच गये जो सहाबा के सन्तों की ड्योढ़ी थी, वह थोड़ी देर के लिए वहां रुक गये और श्रद्धा व सम्मान तथा शर्म व हया की मिली जुली भावना के साथ उस जगह को देखने लगे जो कभी उन साधु-सन्तों का ठिकाना था जिनके क़दमों की ख़ाक को यह अपनी आँख का सुर्मा बनाने को तैयार हैं। इस के पास ही उन्होंने तहय्यतुल मस्जिद के तौर पर दो रकअतें पढ़ीं और आपकी क़ब्र की ओर बढ़े और शरीअत के आदाब और तौहीद ख़ालिस को ध्यान में रखते हुए, नबी स० के दरबार में अर्ज़ कर रहे थे :—

"ऐ! ख़ुदा के रसूल स०! अगर आप न होते और आपका यह जेहाद और दावत[1] न होती जो दुनिया के कोने कोने में फैल गई और जिसने बड़े बड़े देशों को जीत लिया, और अगर आपका यह दीन न होता जिस पर ईमान लाने के बाद हमारे पूर्वज कन्दराओं से निकल कर गौरव तथा सम्मान और साहस तथा हौसिला मन्दी के विशाल जीवन में प्रवेश किये, फिर इसके फलस्वरूप उन्होंने बड़ी बड़ी सल्तनतें क़ायम कीं, दूर दूर के देशों पर विजय प्राप्त की और उन क़ौमों से ख़िराज वसूल किया जो किसी समय उनको अपनी लाठी से हांकती थीं और भेड़ बकरी के गल्ला के तरह उनकी रख-वाली करती थीं। अगर अज्ञानता से इस्लाम की तरफ़ और

---

1. दीन की तरफ़ बुलाना।

गुमनाम तथा तंग क़बायली जिन्दगी से दुनिया पर विजय की ओर यह शुभ यात्रा न होती जो आपके कारण कार्यान्वित हुई तो दुनिया में किसी जगह हमारा झण्डा ऊंचा न होता और न हमारी कहानी किसी जगह सुनाई जाती। हम उसी प्रकार उजाड़ तथा वीरान मरुस्थलों और तुच्छ घाटियों में लड़ते झगड़ते रहते, जो ताक़तवर होता वह कमज़ोर पर ज़ुल्म करता, बड़ा छोटे पर ज़्यादती करता। हमारा खाना अत्यन्त मामूली और जीवन स्तर पर इतना नीचा था कि उससे नीच की कल्पना कठिन है। हम उस गाँव और अपने सीमित क़बीले से आगे बढ़कर कुछ सोचने की क्षमता ही न रखते थे जिसमें हमारी सारी जिन्दगी और उसके प्रयास घिरे थे। हम तालाब की मछलियों और कुएं के मेढ़कों के समान थे और अपने सीमित अनुभवों के जाल में फंसे थे और अपने जाहिल व बुद्धिहीन पूर्वजों के गुन गाते थे।

या रसूलुल्लाह स० आपने हमको अपने दीन की ऐसी रौशनी दी कि हमारी आंखें खुल गईं, विचारों में उदारता पैदा हुई, दृष्टिकोण व्यापक बना, इसके बाद हम इस परिपूर्ण दीन और इस आध्यात्मिक रिश्ते को लेकर ईश्वर की विशाल वसुन्धरा में फैल गये। हमारी निहित शक्तियां जाग उठीं और हमने उन क्षमताओं से काम लेते हुए शिर्क तथा बुत परस्ती (मूर्तिपूजा) और अज्ञानता व अत्याचार का पूरी ताक़त से मुक़ाबिला किया और ऐसे विशाल एवं महान् राज्यों की स्थापना की जिनकी छाया में हम और हमारी सन्तान और हमारे भाई सदियों तक आराम करते और फ़ायदा उठाते रहे। आज आपकी सेवा में यह सेवक श्रद्धांजलि अर्पित करने आये हैं और अपनी श्रद्धा व सम्मान का टैक्स सहर्ष अपनी मर्ज़ी से अदा कर रहे हैं, और इसे अपने लिए गौरव-पूर्ण तथा नजात (मोक्ष) का वसीला (माध्यम) समझते हैं।

हम स्वीकार करते हैं कि इस दीन के आदेशों और क़ानूनों को कार्यान्वित करने में हमसे निश्चय ही बड़ी कोताही (असावधानी) हुई। हम अल्लाह से क्षमा मांगते हैं, बेशक वह बहुत क्षमा करने वाला और रहीम (उदार) है।"

मेरा ध्यान उन बादशाहों की ओर था मेरी निगाहें उनके ख़ामोश और बाअदब चेहरों पर गड़ी थीं, मैं उनके उन निष्ठा एवं स्वामि-भक्ति से पूर्ण शब्दों को सुन रहा था, जो इससे पहले मैंने उनसे किसी अवसर पर नहीं सुने थे। इतने में एक जमाअत और दाखिल हुई और उन बादशाहों और शासकों की परवाह किये बिना उनके बीच से होती हुई सामने आ गई। ऐसा मालूम होता था कि उन बादशाहों के रोब और दबदबा और शक्ति व सिंहासन का उन पर कोई प्रभाव नहीं है। मैंने अपने दिल में कहा कि या तो यह शायर हैं अथवा क्रान्तिकारी। यह अनुमान ग़लत न था इसलिए कि इस दल में यह दोनों लोग थे। इसमें सैय्यद जमालुद्दीन अफ़ग़ानी, अमीर सईद हलीम, मौलाना मोहम्मद अली जौहर, शेख़ हसन बन्ना के साथ साथ तुर्की के मशहूर शायर मोहम्मद आकिफ़ और हिन्दुस्तान के डा० मोहम्मद इकबाल भी मौजूद थे। अपनी बात कहने के लिए इन लोगों ने डा० इक़बाल को चुना। डा० मोहम्मद इक़बाल ने उन सबकी भाव-नाओं को इन शब्दों में व्यक्त किया :—

"ख़्वाज-ए-कौनेन, सालार बदरब हुनैन !

या रसूलुल्लाह !! मैं आपसे उक्त क़ौम की शिकायत करने आया हूं जो आज भी आपके दर की भिखारी है और आपकी रहमत के साये के सिवा उसको कहीं पनाह (शरण) नहीं मिलती। वह आप ही के लगाये हुए बाग़ के फल खा रही है। वह उन मुल्कों में, जिनको आपने ज़ुल्म की बेड़ियों से आज़ाद कराया और सूरज की रौशनी तथा खुली हवा प्रदान की थी, आज आज़ादी के साथ अपनी मर्ज़ी के अनुसार

हुकूमत कर रही है लेकिन यही क़ौम आज उसी बुनियाद को उखाड़ रही है जिस पर इस अज़ीम उम्मत का अस्तित्त्व आधारित है। उसके प्रतिनिधि और लीडर आज यह प्रयास कर रहे हैं कि इस एक उम्मत को अनेक राष्ट्रों में विभाजित कर दें। वह उस चीज़ को ज़िन्दा करना चाहते हैं जिसको आपने समाप्त किया था, उस चीज़ को बिगाड़ रहे हैं जिसको आपने बनाया था। वह इस उम्मत को अज्ञानता के उस युग की ओर दोबारा वापस ले जाना चाहते हैं जिससे आपनें हमेशा-हमेशा के लिए निकाला था। इस मामले में वह योरोप के पदचिन्हों पर चल रहे हैं जो स्वयं गम्भीर बौद्धिक पतन, बिखराव तथा अनिश्चितता का शिकार है। वह अल्लाह की नेमत को नाशुक्री (अकृतज्ञता) से बदल कर अपनी क़ौम को तबाही के घर की तरफ़ ले जाना चाहते हैं। "चिराग़-ए-मुस्तफ़वी"[1] और "शरार बूलहबी"[2] की लड़ाई आज फिर क़ायम है। दुर्भाग्य से अबूलहब के कैम्प की तरफ़ वह लोग नज़र आ रहे हैं जो अपना नाता इस्लाम से जोड़ते हैं और अरबी भाषा बोलते हैं। वह आज अपने उन जाहिली कारनामों और बुतों पर गर्व करने लगे हैं जिनको आपने टुकड़े टुकड़े कर दिया था। यह लोग उन व्यापारियों में हैं जो सौदा ख़रीदते समय तो ज्यादा लेना चाहते हैं और बेचते समय कम देते हैं। आपसे उन्होंने हर चीज हासिल की और हर प्रकार की शक्ति और सम्मान के अधिकारी बनें। अब वह उन क़ौमों के साथ जिनके वह हाकिम और निगरां (संरक्षक) हैं यह व्यवहार कर रहे हैं कि उनको ज़बरदस्ती योरोप के क़दमों में डाल देना चाहते हैं और उसे जाहिली विचार-धाराओं, राष्ट्रवाद, समाजवाद, साम्यवाद के हवाले कर रहे हैं।

1. पैग़म्बर स० की हिदायत।
2. गुमराही।

आपने जिन बुतों से काबा को पाक किया था वह आज मुसलमान क़ौमों के सरों पर नये नये नामों और नये नये चोलों में पुनः आरूढ़ किये जा रहे हैं। मुझे अरब दुनिया के कुछ हिस्सों में जिनको आपका गढ़ होना चाहिए था, एक सार्वजनिक क्रान्ति नज़र आ रही है लेकिन कोई फ़ारूक़ (र०) नहीं, चिन्तन और बौद्धिक ह्रास की आग तेज़ी के साथ फैल रही है और कोई अबूबक्र (र०) नहीं जो ताल ठोंक कर मैदान में आये और इस आग को बुझाये।

मेरी तरफ़ से और मेरे साथियों की तरफ़ से, जिनके प्रतिनिधित्व और नेतृत्व का गौरव मुझे प्राप्त हुआ, दिल की गहराइयों से निकलने वाले और श्रद्धा व सम्मान की भावनाओं में डूबे हुए सलाम की भेंट स्वीकार हों। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ और अल्लाह को गवाह बनाकर कहता हूँ कि हम उन तमाम लीडरों और नेताओं से बरी और बेज़ार हैं जिन्होंने अपना रुख़ इस्लाम के क़िबला की तरफ़ से फेरकर पाश्चात्य सभ्यता की ओर कर लिया है। यह वह लोग हैं जिन्हें आपसे और आपके दीन से कोई सरोकार नहीं रह गया है। हम आपकी वफ़ादारी का फ़िर एलान करते हैं और जब तक ज़िन्दगी है इंशाअल्लाह इस्लाम की इस रस्सी को मज़बूती से पकड़े रहेंगे।"

अलंकरित भाषा और ईमान व यक़ीन से भरपूर यह शब्द समाप्त भी न हुए थे कि मस्जिद-ए-नबवी के मीनारों से अज़ान की मनमोहनी सदा बुलन्द हुई 'अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर'। मैं एकदम होशियार हो गया और कल्पनाओं का यह सुन्दर क्रम जो इतिहास के सहारे क़ायम हुआ था टूट गया और मैंने कहा :--

मुअज़्ज़िन मरहबा बरवक़्त बोला
तेरी आवाज़ मक्के और मदीने

मैं अब फिर उसी दुनिया में वापस आ गया था जहां से चला था। कुछ लोग नमाज़ पढ़ रहे थे, कुछ क़ुरआन का पाठ कर रहे थे। इस्लामी दुनिया के विभिन्न शिष्टमण्डल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में सलाम पेश कर रहे थे। उनकी बोलियां अलग-अलग थीं किन्तु भावनाओं और अनुभूतियों के ऐक्य ने एक अजीब समां पैदा कर दिया था।

सीरते मोहम्मदी[1] का पैग़ाम

बीसवीं सदी की दुनिया के नाम

जब हमारे सामने जाहिलियत (अज्ञानता) का नाम आता है तो सहसा हमारी आंखों के सामने छठवीं सदी ई० का वह अन्धकार युग तसवीर की तरह फिर जाता है जिसमें मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लालाहु अलैहि व सल्लम का अभ्युदय हुआ और जिसमें आपकी हिदायत (मार्गदर्शन) और तालीम का सबसे पहला और सबसे उत्तम चमत्कार प्रकट हुआ। जाहिलियत का शब्द सुनते ही एकदम अरब क़ौम अपनी उन तमाम जाहिलियत के युग की विशेषताओं के साथ चलती फ़िरती नज़र आती है जिनका चित्रण सीरत निगारों ने प्रस्तुत किया है।

लेकिन जाहिलियत उसी युग के साथ विशिष्ट नहीं, इस्लाम की शब्दावली में हर वह युग अज्ञानता का युग है जो 'वही'[2] और 'नबूवत' के मार्गदर्शन से वंचित हो और नबियों की रौशनी वहां तक पहुंची ही न हो या पहुंची हो किन्तु उसने अपनी आंखें उसकी तरफ़ से बन्द करली हों। चाहे वह छठवीं सदी ई० की विश्वव्यापी अज्ञानता हो अथवा योरोप के इतिहास की वह मध्यकालीन अंधेरी सदियां जिन्हें अन्धकार-युग के नाम से याद किया जाता है, अथवा बीसवीं शताब्दी की वह चमकती सभ्यता और दमकता विकास जिससे हम गुज़र रहे हैं।

क़ुरआनमजीद हमको बतलाता है कि दुनिया में रौशनी केवल एक ही है और उसका स्रोत भी एक ही है। सूरे नूर में आता है : अनुवाद : "अल्लाह तआला नूर देने वाला है आसमानों का और

---

1. मोहम्मद स० का किरदार (Character)।
2. ईश वाणी जो जिब्रील अ० के माध्यम से नबियों पर नाज़िल होती थी।

जमीन का"—35 । अंधेरे अवश्य अनगिनत हैं उनकी कोई गणना नहीं। अगर खुदा की रौशनी (जो केवल नबियों के माध्यम से आती है) का उजाला न हो तो दुनिया के अंधेरों का कोई ठिकाना नहीं । जीवन के हर मोड़ पर अंधेरा ही अंधेरा है ।

अनुवाद : "जैसे गहरे दरिया में अंधेरी चढ़ी आती है उस पर एक लहर, उस पर एक और लहर उसके ऊपर बादल अंधेरे हैं एक पर एक । जब अपना हाथ निकाले तो स्वयं अपना हाथ न देखने पाये और जिसको अल्लाह ने रौशनी नहीं दी उसके वास्ते कहीं रौशनी नहीं ।" (सूरे नूर-४०) ।

क़ुरआन मजीद में जहां कहीं नूर (उजाला) और जुलमत (अंधेरा) का एक साथ वर्णन आया है "नूर" को एकवचन तथा "जुलमत" को बहुवचन में प्रयोग किया गया है जिससे मालूम होता है कि अंधेरे अनेक हो सकते हैं किन्तु उजाला एक ही होगा । इस प्राकृतिक रौशनी की अगर चमक न हो तो फिर किसी कृत्रिम रौशनी से इस घटाटोप अंधेरे में उजाला नहीं किया जा सकता । फिर यह जगमगाती और जीती जागती दुनिया एक विशाल और अंधकारमय क़ब्र है जिसमें रौशनी का कोई गुज़र नहीं और जहां :—

"शमयें भी जलाओ तो उजाला नहीं होता"

अनुवाद :— "भला वह जो मुर्दा था हमने उसको जिन्दा कर दिया और फिर हमने उसको रौशनी दी कि उसके सहारे वह लोगों में चलता फिरता है । उसके बराबर हो सकता है जिसका हाल यह है कि अंधेरों में पड़ा हुआ है वहां से निकल नहीं सकता" (सूरे इनाम- 123) ।

ऐसा प्रतीत होता है कि पश्चिम के उस भू-भाग तक (जहां से सूरज निकलता नहीं बल्कि डूबता है) नबूवत की रौशनी बहुत कम पहुंचने पाई । यहां इस आसमानी रौशनी की ख़ानापूरी हमेशा इन्सानी रौशनी से करने की कोशिश की गई । यूनान तथा रोम का स्वर्णिम युग मानव-कला-कौशल्य के विकास के दृष्टिकोण से निस्सन्देह

इतिहास का चमकता युग है किन्तु नबूवत की तालीम और हिदायत के लेहाज से उतना ही बेनूर (अन्धकारमय) है जितना अंधेरे से अंधेरा अज्ञानता का युग हो सकता है यहां ख़ुदा की ज़ात व सिफ़ात (गुण) के बारे में बिना किसी रौशनी और मार्गदर्शन के मात्र अटकल-बाज़ी से काम लिया गया है। अनुवाद : "उनको इसका तनिक भी ज्ञान नहीं वह मात्र अटकलबाज़ी से काम लेते हैं।" इलाहियात (माबूदों) और फ़लसफ़ा (दर्शनशास्त्र) का वह जादू जिसे इन देशों के ज्ञानी और दार्शनिकों ने जगाया है अपनी कल्पना की उड़ान तथा अजूबे के दृष्टिकोण से पूरब के होश उड़ा देने वाले जादू और परियों की कहानियों से कम नहीं। सुक़रात (socratese) तथा प्लेटो (Plato) के कथन और यूनानी दर्शन शास्त्र की नैतिक शिक्षा में नबियों की शिक्षा के प्रभाव की झलक कहीं कहीं ज़रूर इस तरह नज़र आ जाती हैं जैसे बरसात की अन्धेरी रात में जुगनू की चमक जिससे अन्दाज़ा होता है कि नबियों की कुछ बातें उनके कान में कभी पड़ी थीं लेकिन यह रौशनी इतनी तेज़ और टिकाऊ नहीं कि इसके सहारे वह अपना सफ़र तय कर लें। अनुवाद:– "जब (बिजली) चमकती है तो वह उसकी रौशनी में चलने लगते हैं और जब अन्धेरा होता है तो खड़े रह जाते हैं।"

अजीब बात यह है कि हज़रत मसीह अ० की हिदायत का चिराग़ पूरब में दो सदी तक प्रतिकूल हवा के झोंकों का मुक़ाबिला करता रहा किन्तु पश्चिम में उनके क़दरदानों (प्रेमियों) के दामन तले बुझ कर रह गया अर्थात् हज़रत मसीह अ० की शिक्षाओं ने पश्चिम में जाकर अपनी असलियत खो दी, जहां ईसाईयत को पहली बार शक्तिशाली हुकूमत हासिल हुई। शिर्क तथा बुतपरस्ती की धारा मसीहीयत के बीच दरिया में बहने लगी। शायद दुनिया के किसी धर्म के लिए कोई नया धर्म इतना अशुभ सिद्ध हुआ हो जितना मसीही धर्म के लिए शहनशाह कुस्तुनतीन और सेन्टपाल। मसीहियत के इस इल्हामी (ऐश्वरीय) चिराग़ के गुल हो जाने के बाद कलीसा (गिरजाघर) के

लोगों ने धार्मिक मजलिसें सजाकर और उनमें काफूरी शमयें जला जलाकर मसीहीयत (ईसाई धर्म) के प्रति श्रद्धा की भावना रखने वाली दुनिया को विश्वास दिलाने की कोशिश की कि हज़रत मसीह अ० की लाई हुई रौशनी उनके पास मौजूद है, परन्तु यह रौशनी वास्तव में सदियों पहले अंधेरों में गुम हो चुकी थी: –

अनुवाद:- "उसकी तरह जिसने आग रौशन की जब उस आग से उसके चारों ओर प्रकाश फैल गया तो अल्लाह ने उनकी रौशनी उठाली और उनको अंधेरों में इस तरह छोड़ दिया कि उनको कुछ नज़र नहीं आता"। (सूरेबक़र-17)।

इन सबके बावजूद इस वास्तविकता को स्वीकार करना होगा कि मसीहीयत की बदौलत पश्चिम में ईश्वर में आस्था और आख़िरत का ख्याल पाया जाता था। वास्तव में आसमानी मज़हब कितना ही बदल जाये ख़ुदा और आख़िरत का ख्याल रग व रेशा में इस तरह जारी व सारी होता है (रच बस जाता है) कि कभी उससे निकल नहीं सकता। पन्द्रवीं और सोलहवीं सदी ई० में योरोप में भौतिकवाद और इन्द्रियों की गुलामी का जो आन्दोलन चला उसने पश्चिम को खुले तौर पर भौतिकवाद के रास्ते पर लगा दिया। धीरे धीरे योरोप ऐसा भौतिकवादी हो गया कि उसकी ज़िन्दगी और विचार धारा में ख़ुदा और आख़िरत की गुंजाइश बाक़ी नहीं रही। समस्त योरोप ने अपनी ज़बान से ख़ुदा और आख़िरत के इनकार की विधिवत् घोषणा नहीं की किंतु उसकी ज़िन्दगी इस तरह की ढल गई मानो न ख़ुदा है न आख़िरत। आज यह कहना सर्वथा उचित है कि योरोप का मज़हब मसीहीयत नहीं भौतिकवाद है। योरोप दीर्घकाल तक बुतपरस्त रहा है और दीर्घकाल से मसीहीयत का दावेदार है किन्तु इस निष्ठा एवम् उत्साह के साथ उसने ऐसा लगाव व्यक्त किया और इसके प्रति ऐसी पाबन्दी दिखाई जैसी भौतिकवाद के इस धर्म के साथ वह दिखा रहा है। इस नये धर्म (भौतिकवाद) के गिरजे और इबादतगाहों (कारखाने, व्यवसायिक तथा औद्योगिक केन्द्र और मनोरंजन केन्द्र) में दिन

रान जगमगाहट रहती है। इसके पुरोहित (अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारी, पूंजीपति तथा उद्योगपति) बड़े सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं और पूजे जाते हैं इसके सामने ईसाई धर्म पश्चिम में धूमिल होकर रह गया है।

पश्चिम में इस आत्म विस्मरण (खुदफ़रामोशी) के वह सब परिणाम जाहिर हुए और हो रहे हैं, जो इस विचारधारा के अनिवार्य अंग हैं। एक परिणाम यह है कि पश्चिम के मानव ने एक खुदा का दामन छोड़ कर दूसरे सैकड़ों खुदाओं का दामन पकड़ लिया है। एक वास्तविक चौखट से सर उठाकर, जहां सर झुका कर वह तमाम आस्तानों से बेनयाज (मुक्त होना) हो सकता था, प्रत्येक चौखट पर वह अपना माथा रगड़ रहा है। एक खुदा को छोड़ देने की सजा खुदा की तरफ़ से हमेशा यही मिली है। अल्लाह के सिवा यह बहुत से रब बड़ी संख्या में पश्चिम पर छाये हैं और सारी पश्चिमी दुनिया उनके चंगुल में फंस कर रह गई है। यह कहीं राजनीतिक नेता हैं कहीं आर्थिक देवता, कहीं स्वरचित जीवन स्तर, कहीं स्वनिर्मित जीवन के कर्तव्यों एवम् आवश्यकतायें, जिन्होंने अपने मानने वालों का जीवन दूभर कर दिया है, और उनसे ऐसी बन्दगी करा रहे हैं जिसके सामने खुदा की बन्दगी हजार बार माथा टेके, ऐसी मेहनत ले रहे हैं जो बेजबान जानवरों और बेजान मशीनों से नहीं ली जाती। ऐसी क़ुर-बानियां करा रहे हैं जो आज तक किसी देवता के नाम पर नहीं की गईं। अल्लाह के सिवा इन बहुत से रबों के लक्ष्यों एवं इच्छाओं में महान् संघर्ष है। उनके विरोधी लक्ष्यों ने पूरी दुनिया में उथल पुथल मचा रक्खी है। इन नये बुतों में एक बड़ा बुत मातृभूमि का है जो हमेशा खून की नजर और इन्सानी जानों की भेंट चाहता रहता है। उन्हीं में एक बुत पेट है जिसकी बन्दगी में बीसवीं सदी का इन्सान रात दिन लगा रहता है और फिर भी वह इससे राजी नहीं। कुछ दिन हुए सर ओलिवर लाज ने अपने एक भाषण में कहा था :--

"जीवन की सरलता अब स्वप्न हो गई है, अब न कोई उद्देश्य

सामने है न ऊंचा विचार। प्रत्येक व्यक्ति रात दिन बैल की तरह अपने कारखाने या दफ्तर की गुलामी में लगा हुआ है। तेज रफ्तार सवारियों के आविष्कार का परिणाम यह है कि हर समय प्रत्येक व्यक्ति के पैर पर मानो शनीचर सवार रहता है।"

खुदा को भूलने का दूसरा परिणाम यह है कि मानव स्वयं अपने को भूल गया है। क़ुरआन मजीद ने यह तथ्य बयान किया है कि खुदा को भूलने की सजा स्वयं को भूल जाना है :—

अनुवाद:- 'उन लोगों की तरह न हो जो खुदा को भूल गये तो खुदा ने उनको स्वयं को भूल जाने वाला बना दिया।'

बीसवीं शताब्दी का मानव आत्म विस्मरण का नमूना है। उसने अपनी वास्तविकता, अपना मनुष्यत्व, अपने जीवन का उद्देश्य और अपनी पैदाइश की गरज बिल्कुल भुला दी और एकदम जंगली अथवा जानवरों जैसी जिन्दगी गुजारने लगा है। वह एक ऐसी रुपया ढालने वाली मशीन बन गया है जो स्वयं उसमें कोई लाभ नहीं उठा सकती। यहां तक कि शारीरिक व मानसिक राहत तथा सुकून जो इस संघर्ष की किसी अर्थ में क़ीमत हो सकता है न उसको अपनी जिन्दगी में प्राप्त है और न उसको इसका होश बाक़ी रहा है। प्रोफेसर जोड ने सही लिखा है :—

"जहां तक हमारे समय की सोसाइटी का सम्बन्ध है, वास्तविकता यह है कि हमारा विश्वास है कि सभ्यता नाम है आसानी का। आसानी वर्तमान युग की युवा पीढ़ी का देवता है, उसके चौखट पर वह सुकून (सुख) राहत, शान्ति और दूसरों के साथ मेहरबानी को बड़ी निर्दयता के साथ भेंट चढ़ा देता है।" [1]

इस आत्मविस्मरण के नशे ने मानव का कार्यक्षेत्र ही बदल

---

1. गाइड टु माडर्न विकडनेस।

दिया है। उसने अपने विकास क्षेत्र को छोड़कर विकास के अन्य क्षेत्रों में बड़ी तरक़्क़ी करली है। किन्तु पूर्ण मानव की हैसियत से उसने कोई तरक़्क़ी नहीं की बल्कि दिन प्रतिदिन उसके मानवीय गुणों का पतन हो रहा है। वर्तमान विकास कार्यों का विश्लेषण कीजिये कुछ दरिन्दों के कमालात निकलेंगे, कुछ परिन्दों (पक्षी) के और कुछ मछलियों के। प्रोफ़ेसर जोड कहते हैं :—

"हमारी आश्चर्यजनक औद्योगिक उपलब्धियों और हमारे शर्मनाक नैतिक बचपन के बीच जो खाई है, उससे हमारा हर मोड़ पर सामना होता है। एक ओर हमारे औद्योगिक विकासों का हाल यह है कि हम बैठे बैठे सात समन्दर पार से और एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप के लोगों से निःसंकोच बातें कर सकते हैं। समन्दर के ऊपर और ज़मीन के नीचे दौड़ते फिरते हैं। रेडियो के द्वारा सीलोन में घर बैठे लन्दन के बड़े घंटे की आवाज़ सुना करते हैं। बच्चे टेलीफोन के द्वारा एक दूसरे से बातें करते हैं, विद्युत चित्र आने लगे, बे आवाज़ के टाइपराइटर चल गये हैं, बिना किसी दर्द व दुख के दांत भरे जा सकते हैं, खेतियां बिजली से पकाई जाती हैं, रबड़ की सड़कें बनती हैं, एक्सरे के द्वारा हम अपने शरीर के भीतरी भाग को झांक कर देख सकते हैं, तस्वीरें बोलती और गाती हैं, लास्लकी से अपराधियों तथा हत्यारों का पता चलाया जाता है, विद्युत तरंगों से बालों में लहर पैदा की जाती है। जलयान उत्तरी ध्रुव तक और वायुयान दक्षिणी ध्रुव तक उड़कर जाते हैं, परन्तु इन सब के बावजूद हम से इतना नहीं हो सकता कि हम अपने बड़े-बड़े शहरों में कोई ऐसा मैदान बनादें जिसमें गरीबों के बच्चे आराम व सुरक्षा के साथ खेलें, इसका नतीजा यह है कि प्रति वर्ष दो हज़ार बच्चों की जानें जाती हैं और नब्बे हज़ार घायल होते हैं।

एक बार मैं एक भारतीय दार्शनिक से अपनी सभ्यता

के अजूबों की प्रशंसा कर रहा था उन्हीं दिनों एक मोटर चलाने वाले ने तीन या चार सौ मील की यात्रा एक घंटे में तय करके रिकार्ड क़ायम किया था, या किसी वायुयान चालक ने मास्को से न्यूयार्क की यात्रा, मुझे याद नहीं, बीस या पचीस घंटे में तय की थी। जब मैं सब कह चुका तो भारतीय दार्शनिक ने कहा—हां यह सही है कि तुम हवा में चिड़ियों की तरह उड़ते और पानी में मछलियों की तरह तैरते हो लेकिन अभी तक तुमको ज़मीन पर इन्सानों की तरह चलना नहीं आया।"

अब पश्चिम को आख़िरत फ़रामोशी (पारलौकिक जीवन को भूल जाना) को लीजिये। आख़िरत के इन्कार का पहला स्वभाविक असर यह है कि सांसारिक जीवन और माया मोह का एक पागलपन पैदा हो जाता है। भोग विलास ही जीवन का लक्ष्य बन गया है। आज पश्चिम के हर कोने से "खाओ पियो मस्त रहो" का नारा बुलन्द हो रहा है और उसकी सारी पूंजी भोग विलास और उसके साधन जुटाने की होड़ में ख़र्च हो रही है। होड़ ने जीवन को एक ऐसा रेस का मैदान बना दिया है जिसका कोई छोर नहीं। जिन्दगी की एक न बुझने वाली प्यास और एक न मिटने वाली भूख है, हर व्यक्ति की ज़बान पर "हलमिम्मजीद" (क्या कुछ और है) की पुकार है। जीवन की आवश्यकतायें दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। इच्छाओं की पूर्ति का सामान और उनकी अनेकता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और इसने सैकड़ों सामाजिक उलझनें पैदा करदी हैं। व्यापारिक होड़ ने इसमें सहायता दी, जीवन स्तर प्रतिदिन ऊंचा होता जा रहा है, यहां तक कि प्रत्येक व्यक्ति जब नज़र उठाता है लक्ष्य दूर दिखाई पड़ता है। फलत: उसका जीवन उसकी प्राप्ति के प्रयासों में बेकैफ़ व बेमज़ा हो जाता है उसके जीवन का कोई आनन्द नहीं रह जाता और वह हिर्स व लालच के अटूट अज़ाब और असीम संघर्ष से ग्रसित रहता है। 'हन शीलता व आत्मसन्तोष, जो शान्ति और सुख का सब से बड़ा

साधन है, योरोप में बहुत दिनों से नापैद है।

आख़िरत का इनकार करने वाले के दृष्टिकोण से भोग-विलास ही जीवन है जिसे हम मुसलमान दीवानगी समझते हैं। जो इस जीवन के बाद दूसरे जीवन की परिकल्पना से ख़ाली हो वह इस जीवन में मजे उड़ाने और जिन्दगी की प्यास बुझाने में क्यों कमी करे और भोग-विलास को किस दिन के लिए उठा रक्खे। इसलिए क़ुरआन कहता है :–

अनुवाद:- 'काफ़िर मजे उड़ाते हैं और चौपायों की तरह खाते हैं और जहन्नम उनका ठिकाना है[1]।'

अनुवाद- उन्हें उनके हाल पर छोड़ दो, खायें, पियें, ऐश व आराम करें, उम्मीदों पर फूले हैं वह वक्त दूर नहीं कि उन्हें मालूम हो जायेगा[2]।

आख़िरत के इनकार का दूसरा परिणाम यह है कि यह दुनिया और इसकी चीजें, इसमें काम आने वाले कर्म अधिक मुसज्जित अधिक तर्कपूर्ण एवम् अधिक उचित प्रतीत होते हैं। भौतिकवादी विचारधारा और ओछा दृष्टिकोण पैदा हो जाता है जो वास्तविकता तक नहीं पहुंच सकता :-

अनुवाद:- बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हमने उनके आमाल (कर्म) उनके लिये ख़ुशनुमा बना दिये हैं पस वह भटक रहे हैं[3]।

अनुवाद:- कहो हम तुम्हें ख़बर दें कौन लोग अपने कामों में सबसे अधिक नामुराद (घाटे में) हैं, वह जिनकी सारी कोशिशें दुनिया की ज़िन्दगी में खोई गई और वह इस धोखे में पड़े हैं कि बड़ा अच्छा कारखाना बना रहे हैं, यही लोग हैं कि

---

1. सूरे मोहम्मद स०—12।
2. सूरे अल्हजर — 3।
3. सूरे नहल—4।

अपने परवरदिगार की आयतों से और उसके हुजूर हाजिर होने से मुनकिर [इनकार करने वाले] हुए। पस उनके सारे काम अकारत गये, और इसलिए क़यामत के दिन हम उनका कोई वजन तस्लीम नहीं करेंगे।[1]

इसका एक परिणाम यह भी है कि जिन्दगी में हक़ीक़त व संजीदगी (गम्भीरता) का हिस्सा कम और भोग विलास का हिस्सा अधिक होता जा रहा है। जीवन के एक बड़े हिस्से को मनोरंजन और धींगा मस्ती के कर्म व व्यस्ततायें घेरे हुए हैं।

परीक्षा की गम्भीर घड़ियां और ख़तरों में भी उनकी इन व्यस्तताओं में कोई अन्तर नहीं आता :—

अनुवाद:- छोड़ दो उनको जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना रक्खा है, और उनको दुनिया की जिन्दगी ने धोखा दिया[2]।

इसका एक परिणाम यह भी है कि घटना चक्र और दुर्घटनाओं के वास्तविक कारणों पर उनकी नज़र नहीं जाने पाती बल्कि कुछ एक जाहिरी चीजों में उलझ कर रह जाती है। वह बात की गहराई तक नहीं उतर सकते फलतः अत्यन्त नाज़ुक समय में भी उनकी विलासिता और ग़फ़लत में कमी नहीं होती वह इन घटनाचक्रों का कोई कारण गढ़ लेते हैं और सन्तुष्ट हो जाते हैं। और उनके चलन में कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन घटित नहीं होता।

क़ुरआन मजीद में भौतिकवाद की पुजारी क़ौमों की मनःस्थिति इस प्रकार बयान की गई है :-

अनुवाद:- और हमने तुम से पहले बहुत सी उम्मतों पर रसूल भेजे थे फिर हमने उनको सख़्ती और तकलीफ़ में गिरफ्तार

---

1. सूरे कहफ़ 103—105।
2. सूरे इनाम—70।

किया ताकि वह खुदा के हुजूर में गिड़गिड़ायें। फिर क्यों न गिड़गिड़ायें जब उन पर हमारा अजाब आया लेकिन (उल्टे) उनके दिल सख्त हो गये और शैतान ने उनके काम उनको आरास्ता (सजा) करके दिखाये[1]।

आख़िरत के इनकार की एक विशेषता अभिमान है। आख़िरत से इनकार करने वाले को अभिमानी (मुतकब्बिर) होने से कोई चीज नहीं रोकती। जो अपने से किसी महान शक्ति और इस ज़िन्दगी के बाद किसी ज़िन्दगी और रोज-ए-जजा (बदले का दिन) पर विश्वास नहीं रखता उसको एक बे-नकेल ऊंट और एक सरकश इन्सान बनने से क्या चीज रोक सकती है। इसलिए क़ुरआन मजीद में आख़िरत के इन्कार के साथ प्रायः तकब्बुर का शब्द आया है। मानो दोनों का चोली दामन का साथ है :--

अनुवाद :-- जो लोग आख़िरत पर विश्वास नहीं रखते उनके दिल मुनकिर और वह मुतकब्बिर हैं।[2]

फ़िरऔन और उसके लश्कर ने जमीन में नाहक़ तकब्बुर व इनकार से काम लिया और वह समझे कि वह हमारी तरफ़ लौट कर नहीं आयेंगे।[3]

आख़िरत से इनकार करने वाली ऐसी क़ौमों का हाथ लोहे की तरह मजबूत, उनकी पकड़ जालिमाना और उनकी विजय एक भूचाल के समान होती है जो मुल्कों और शहरों को बरबाद कर देता है।

अनुवाद :-- जब किसी पर हाथ डालते हो तो जबरदस्तों और जालिमों की तरह हाथ डालते हो।[4]

---

1. सूरे इनाम--42--43।
2. सूरे नहल--22।
3. सूरे क़सस--39।
4. सूरे शोरा--130।

अनुवाद:— बादशाह जब किसी बस्ती में घुसते हैं तो उसको ख़राब कर देते हैं और वहां के सरदारों को बेइज़्ज़त कर डालते हैं।[1]

इसी प्रकार पश्चिम रिसालत[2] पर ईमान की दौलत से भी महरूम रहा। हज़रत मसीह अ० को यद्यपि उसने अल्लाह का बेटा स्वीकार कर लिया किन्तु उनको अपनी पूरी ज़िन्दगी का रहनुमा (पथ-प्रदर्शक) और अनुकरणीय रसूल व्यवहारिक रूप से स्वीकार नहीं किया। पहली चीज़ केवल विश्वास पर आधारित थी, उसके मात्र स्वीकार करने से जीवन आचरण तथा कर्म पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उनको अपने जीवन का पूर्ण रूपेण पथप्रदर्शक, उनके कैरक्टर (सीरत) को अपने जीवन का प्रकाश स्तम्भ और उनको अपने लिए अनुकरणीय मानने से ज़िन्दगी का रुख बदल जाता। लेकिन पश्चिम ने ऐसा नहीं किया और न ऐसा करना आसानी से सम्भव था। हज़रत मसीह अ० के जीवन के केवल तीन साल के हालात उसके पास थे और वह भी ऐसे कि जीवन में उनका अनुकरण एवम् अनुसरण बड़ा कठिन था। यदि पश्चिम के लोग हज़रत मसीह अ० की सीरत, कथन और उनके निर्देशों एवं उपदेशों को अपने जीवन का पथ-प्रदर्शक बनाना चाहते तो उनके लिए इसमें व्यवहारिक कठिनाइयां थीं। ईसाई धर्म के प्रतिनिधियों के पास ऐसी कोई प्रामाणिक पूंजी न थी जिसकी सहायता से वह पूरी एक क़ौम की रहनुमाई का काम कर सकते न वह ऐसी दीन की सूझबूझ रखते थे जिससे वह पश्चिम की उभरती हुई क़ौमों को दुनिया की तरक़्क़ी के साथ धर्म की परिधि में रख सकते। परिणाम यह हुआ कि ईसाई क़ौमों ने अपने व्यवहारिक जीवन को हज़रत मसीह अ० के नेतृत्व और कलीसा की निगरानी से आज़ाद कर लिया और उन्होंने इस प्रकार का जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया जैसे वह किसी पैग़म्बर की

---

1. सूरे नहल—34।
2. अल्लाह का पैग़ाम रसूलों के माध्यम से आने की प्रक्रिया।

उम्मत नहीं है। उनके मन, मस्तिष्क पर हज़रत मसीह अ० की पवित्र शिक्षा गहरा असर नहीं पड़ सका। वह उस नैतिक दीक्षा और साधना से वंचित रहे जो पैग़म्बर के अनुयायी प्राप्त करते हैं। उन्होंने साधन अनेक प्राप्त किये किन्तु भलाई की प्रवृत्ति केवल पैग़म्बर की शिक्षा के असर और उसकी दीक्षा तथा सुधार से प्राप्त हो सकती है। भौतिकज्ञान और खोज से वह न प्राप्त हो सकती थी न उनको प्राप्त हो सकी। परिणाम यह हुआ कि यह सारे साधन और यह तमाम ताक़तें जो भलाई की प्रवृत्ति के साथ मानव संसार के कल्याण का कारण बन सकती थीं, संसार में सर बलन्दी (बड़ाई) और फ़साद का कारण बन गईं इसलिए कि उनका प्रयोग करने वालों के कान इस वाणी से अपरिचित हैं :—

अनुवाद :— वह पिछला घर हम उन लोगों को देंगे जो ज़मीन में अपनी बड़ाई नहीं चाहते और फ़साद नहीं चाहते और अंजामकार (भविष्य) अल्लाह से डरने वालों का है।[1]

ख़ुदा और आख़िरत को भूलने और पैग़म्बरों की शिक्षा से मुंह फेरने का परिणाम यह कि पश्चिम में आज इतनी जगमगाहट है कि उसकी रात भी दिन है किन्तु इतना अन्धेरा है कि दिन भी रात है। जगमगाहट और विकास के इस युग में आज वह सब कुछ हो रहा है जो असभ्य एवम् अन्धकार युग की विशेषता समझी जाती है। अकबर इलाहाबादी के अनुसार :—

लिखेगा किल्क हसरत दुनिया की हिस्ट्री में।
अन्धेर हो रहा था बिजली की रौशनी में॥

पिछले युद्ध की समाप्ति पर लायड जार्ज ने कहा था :—

"यदि हज़रत मसीह अ० इस दुनिया में पधारें तो अधिक समय तक जीवित न रह सकेंगे। वह देखेंगे कि दो हज़ार साल के बाद भी इन्सान फ़ितना व फ़साद, मारकाट, लूट-पाट से यथावत् ग्रसित है।

---

1. सूरे क़सस—83।

बल्कि इस समय तो मानवता के अंग के इतिहास की महानतम लड़ाई के असर में खून की बूंदें टपक रही हैं। और दुनिया इतनी उजड़ चुकी है कि भूखों मरने की नौबत आ गई है। और हज़रत आकर क्या देखेंगे? क्या प्रेम व ममता के साथ लोगों को आपस में हाथ मिलाते अथवा इससे ठीक विपरीत इस महायुद्ध से भी बढ़कर विनाशकारी एवं दुखदायी युद्ध की तैयारियां करते। एक से एक बढ़ कर जान लेवा और मुसीबत ढाने वाले विनाशकारी हथियार ईजाद करते और ताड़ना की नई नई तरकीबें सोचते"।[1]

और दूसरे विश्वयुद्ध के प्रारम्भ में एडेन ने कहा था :--

"जब तक कुछ किया जाये इस दुनिया के निवासी इस शताब्दी के पिछले हिस्से में गुफ़ाओं में जीवन व्यतीत करने वाली आदिम जातियों का रहन-सहन अख़्तियार कर लेंगे। और अज्ञानता तथा असभ्यता का वही युग प्रारम्भ हो जायेगा जो हज़ारों साल पहले दुनिया में क़ायम था। कैसी विडम्बना है तमाम देश एक ऐसे हथियार से बचने के लिए करोड़ों रुपया ख़र्च कर रहे हैं जिससे डरते तो सब हैं किन्तु उसको नियन्त्रण में रखने पर राज़ी नहीं होते हैं। कभी कभी आश्चर्य के साथ सोचता हूं कि यदि किसी दूसरे ग्रह से कोई यात्री और सैलानी इस ज़मीन पर आये तो वह हमारी दुनिया को देखकर क्या कहेगा। वह देखेगा कि हम सब अपनी ही बरबादी व विनाश के साधन तैयार कर रहे हैं और इतना ही नहीं बल्कि एक दूसरे को इसके प्रयोग करने की विधि की सूचना भी दे रहे हैं।[2]

साढ़े तेरह सौ वर्ष पहले का सभ्य संसार जिसका नेतृत्व रोम तथा ईरान के पूर्वी राज्यों के हाथ में था, आज की दुनिया से बहुत

---

1. "सच" से उद्धरित।
2. "सच" से उद्धरित।

बहुत कुछ मेल खाता था। मानव पूर्णतः ख़ुदा को भूलकर स्वयं को भुला बैठा था। ईश्वर में विश्वास एक ऐतिहासिक विचारधारा और ज्ञान से अधिक हैसियत नहीं रखता था। लोग केवल इतिहास के तौर पर यह मानते थे कि इस संसार को किसी समय ख़ुदा ने बनाया था किन्तु व्यावहारिक जीवन का कोई सम्बन्ध इससे शेष नहीं रहा था। कर्म के क्षेत्र में जीवन ऐसा व्यतीत होता था मानो ख़ुदा नहीं है या है तो (मआज़ अल्लाह)[1] गोशानशीन[2] और दूसरों की ख़ातिर सलतनत छोड़ चुका है। सारी दुनिया में अल्लाह के सिवा बहुत से रबों की इबादत और पूजा का जाल फैला हुआ था। कहीं बुतों की पूजा थी, कहीं क़ौम व नस्ल की, कहीं धन-दौलत की, कहीं शक्ति व शासन की, कहीं राजा महाराजा की, कहीं विद्वानों और पुरोहितों की। मानव अपने जीवन का लक्ष्य और उसका आदि-अन्त भुला चुका था और जीवन की सही व्यस्ततायें भूल कर क्रमागत आत्म हत्या और ग़लत व्यस्तताओं में लीन था। सारी दुनियां स्वयं को भूल चुकी थी। प्रशासक अन्याय व अत्याचार, लूट-खसोट, मानव से विरक्त और दौलत की पूजा में व्यस्त थे। धनवान अपने भोग विलास में बदमस्त हो रहे थे। जीवन स्तर इतना ऊँचा और उसकी आवश्यकतायें इतनी अधिक हो गई थीं कि नये नये टैक्सों और तावानों से भी पूरी न होती थीं। सामाजिक स्तर और जीवन की परिकल्पना इतनी ऊँची हो गई थी कि जिस व्यक्ति के पास धनवानों की आवश्यकतायें न होतीं उसे इन्सान नहीं समझा जाता था और समाज में उसके साथ इन्सानों का सा सुलूक (व्यवहार) नहीं किया जाता था। जीवन के बोझ तले समाज में विश्वसनीय एवं लब्ध प्रतिष्ठ बनने की चिन्ता से प्रत्येक व्यक्ति सदैव चिन्ता ग्रसित रहता। मध्यम श्रेणी के लोगों को उच्च श्रेणी के लोगों की नक़्क़ाली और रेस में फ़ुरसत न मिलती, ग़रीबों को

---

1. इस्लामी समाज में नफ़रत व बेज़ारी व्यक्त [illegible] शब्द
2. एकान्तवासी।

चाकरी और गुलामी और नये नये टैक्सों के बोझ से सर उठाने की मोहलत न थी, वह अपने आक़ाओं के ऐश व आराम और उनकी जायज़ व नाजायज़ जरूरतों को पूरा करने के लिए बेज़बान जानवरों की तरह हर समय जुते रहते जब कभी इससे छुट्टी मिलती तो ज़िन्दगी का ग़म ग़लत करने के लिए नाजायज़ तफ़रीहों और बद-मस्तियों से दिल बहलाते। पूरे पूरे देश में कभी-कभी एक प्राणी भी ऐसा न होता जिसको अपने दीन और आख़िरत की चिन्ता होती और मौत का ख़्याल आता। बेगुनाह शहरी, हुकुमतों की और अधिक जोड़ने तथा देशों को हड़प करने की लालसा की चक्की के दो पाटों के बीच में पिसते रहते। ईरानी सलतनत ने बिना किसी उचित कारण और जरूरत के शाम (सीरिया) की ईसाई सलतनत पर चढ़ाई करदी और नब्बे हज़ार बेगुनाह इन्सानों के ख़ून से अल्लाह की ज़मीन रँग दी। उसके जवाब में रूमी सलतनत ने ईरानी सलतनत को हिला-कर रख दिया और शान्तिपूर्ण नागरिकों का बदला शान्तिपूर्ण नागरिकों से लिया। बिना किसी उच्च उद्देश्य और नैतिक अभियान के इस खूनी-जंग का सिलसिला बरसों जारी रहा और दुनिया की दो सभ्य सलतनतों के निवासी और अत्यन्त सभ्य लोग जानवरों की तरह एक दूसरे को पछाड़ते रहे। समस्त भूतल पर उस समय अन्धेरा छाया हुआ था और इन्सान के दुष्कर्मों के कारण उस पर एक विश्व-व्यापी पतन और सर्व व्यापी ख़राबी का बोल-बाला था।

उस समय इस सभ्य संसार (जिसको पूरे तौर पर घुन लग चुका था) से अलग किन्तु उसके बिल्कुल निकट और रोम व ईरान के दो दुश्मन राज्यों के बीच अल्लाह तआला ने उम्मियों के बीच एक उम्मी पैग़म्बर स० को भेजा ताकि दुनिया को उस अज़ाब से नजात दे जिसमें वह सदियों से ग्रसित थी और आख़िरत के उस अज़ाब से डराये जो पेश आने वाला है। अन्धेरों से निकाल कर ख़ुदा की बन्दगी में दाख़िल करे और तमाम जंजीरें और बेड़ियां काटे जिन में वह जकड़े हुए थे।

अनुवाद:– (वह नबी उम्मी) उन्हें नेकी का हुक्म देता है, बुराई से रोकता है, पसन्दीदा चीजें हलाल करता है, गन्दी चीजें हराम ठहराता है। उस बोझ से नजात दिलाता है जिसके तले वह दबे हुए हैं, उन फन्दों से निकालता है जिसमें वह गिरफ़्तार हैं।[1]

उस नबी-ए-उम्मी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सन् 7 हि० (सन् 630 ई०) में रोम के शहनशाह (हरकुल) को मदीना से एक पत्र और पैग़ाम भेजा। दावत यह थी :–

अनुवाद:– ऐ अहले किताब! एक ऐसी बात की तरफ़ आओ जो हम में और तुम में बराबर है। कि बन्दगी न करें हम मगर अल्लाह की और उसका किसी को शरीक न ठहरावें और कोई किसी को अल्लाह के सिवा रब न बनायें।[2]

हरकुल ने इस दावत (आह्वान) की सच्चाई को स्वीकार कर लिया किन्तु वह अपनी कमजोरी से इस रबूबीयत (पालनहार का विशेषण) से पीछा न छुड़ा सका जिसके वह मजे उड़ा रहा था। इस प्रकार रोम वाले जिन्दगी के इस अजाब से उस समय तक नजात हासिल न कर सके जब तक मुसलमान मुजाहिदों (जेहाद करने वाले) ने सीरिया और रोम को अपने रहमत के साये में नहीं ले लिया।

परन्तु अरब के पिछड़ी क़ौम ने नबी-ए-उम्मी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैग़ाम को स्वीकार कर लिया और वह सारे वरदान प्राप्त किये जो इस पैग़ाम का फल है। उनकी गुलामी की तमाम जंजीरें स्वत: कट गई। ख़ुदा के चौखट पर सर झुका कर वह दुनिया के तमाम आस्तानों से छुटकारा पा गये। न मन की बन्दगी रही न बादशाहों और हुकूमतों की गुलामी, न जाहिलाना रीति-रिवाज तथा समाज की अत्याचार पूर्ण बन्दिशें, न अपनी लाई हुई और न दूसरों

1. सूरे एराफ़—157।
2. सूरे आल इमरान—64।

की डाली हुई मुसीबतें। ख़ुदा को पहचानने और उसकी बड़ाई को मानने ने दुनिया के बनावटी ख़ुदाओं की बड़ाई का भन्डा फोड़ दिया और उनको उनकी नज़र से गिरा दिया। अरब के यह भूखे, मोटे-झोटे, मैले-कुचैले वस्त्रधारी ऐराबी, जो कभी अपने देश से बाहर नहीं निकले थे और जिन्होंने शान-शौकत का प्रदर्शन नहीं देखा था, अजम के बादशाहों से इस प्रकार आंखों से आंखें मिलाकर निःसंकोच बातें करते थे और उनके दरबार के ठाटबाट को इस बेपरवाही और गिरी हुई नज़र से देखते थे मानो मिट्टी की मूर्तियां और काग़ज़ के खिलौने हैं जिनको झंडियों से सजाया गया है। वह ऐसी वास्तविकता को पहचानने वाले हो गये थे कि शान व शौकत के खोखले प्रदर्शन उनको तनिक प्रभावित न करते और कहीं वह अपने सिद्धान्त और उच्च नैतिक स्तर से तनिक भी विचलित होना पसन्द न करते। वह अपने को ख़ुदा के बन्दों (भक्तों) को दोबारा ख़ुदा की बन्दगी में दाखिल करने और इन्सानों की ख़ुदाई का भन्डा फोड़ने पर नियुक्त समझते थे।

हज़रत साद बिन अबी वक़ास र० ने ईरानियों के महान सेना-पति रुस्तम के आग्रह पर रबई बिन आमिर को राजदूत बनाकर ईरान भेजा। ईरानियों ने बड़े ठाट के साथ दरबार सजाया। सुनहले क़ालीन और रेशमी फ़र्श बिछाये। याक़ूत और आबदार मोतियों की चमक से नज़र नहीं ठहरती थी। सर पर चांदी का मुकुट पहने राजशी वस्त्रों से सुसज्जित रुस्तम सोने के सिंहासन पर आरुढ़ था। रबई इस शान से दरबार में दाख़िल हुए कि तन पर मोटे-मोटे कपड़े, हाथ में तलवार तथा ढाल, एक छोटे क़द के घोड़े पर सवार दनदनाते दरबार में आ गये। घोड़े से उतरकर दरबार के अमीरों के एक गाव तकिये से घोड़े को बांध दिया। कवच धारी, हथियार बन्द दरबार में आये। चोबदारों ने निवेदन किया, "हथियार रख दीजिये" कहा, "मैं अपने शौक़ से नहीं आया तुम्हारा बुलाया हुआ आया हूँ अगर तुम्हें मेरा इस तरह आना स्वीकार नहीं तो मैं वापस चला जाता हूँ।" रुस्तम

ने कहा, "आने दो।" रबई क़ालीनों पर अपना बरछा चुभोते हुए और उसमें छड़ी का काम लेते हुए इस प्रकार निःसंकोच बढ़ते चले गये कि क़ालीन जगह-जगह से कट फट गये और जाकर रुस्तम के पास बैठ गये। रुस्तम ने पूछा कि आप का इस देश में आने का उद्देश्य क्या है। उन्होंने कहा कि अल्लाह ने हमको इस काम के लिए नियुक्त किया है कि हम उसके हुक्म से उसके बन्दों को बन्दों की बन्दगी से निकाल कर अल्लाह की बन्दगी में, दुनिया की तंगी से निकाल कर विशालता एवं फैलाव में, धर्मों के अत्याचारों से बचाकर इस्लाम के न्याय में दाख़िल करें। उसने हमको अपने प्राणियों की तरफ़ अपने दीन के साथ भेजा है ताकि हम इस दीन की दावत दें अगर वह इसको मान लें तो हम वापस चले जायें और जिसको इससे इन्कार हो उस से हम हमेशा लड़ते रहें। यहां तक कि हमको अल्लाह का इनाम मिल जाये।" रुस्तम ने कहा वह इनाम क्या है? कहा जो इस रास्ते में मर जाये उस के लिए जन्नत और जो जिन्दा रह जाये उसके लिए उसकी नुसरत (सहायता)। रुस्तम ने कहा मैंने आपकी बात सुन ली। क्या आप हमको इसकी मोहलत दे सकते हैं कि हम अपने सलाहकारों से सलाह कर लें। कहा हां। आपको कितनी मोहलत चाहिए एक दिन या दो दिन। कहा इतने थोड़े समय में क्या होगा। हमें पत्र व्यवहार करना होगा और राय मालूम करनी होगी। रबई ने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुश्मन से मुक़ाबिला करते समय तीन दिन से अधिक मोहलत देने की नज़ीर नहीं छोड़ी इसलिए इस मामले पर जल्द विचार कर लीजिये और तीन चीज़ों (इस्लाम, जज़िया और जंग) में से किसी एक चीज़ का चयन कर लीजिये। रुस्तम ने कहा आप मुसलमानों के सरदार हैं। रबई ने कहा नहीं। मुसलमान सब एक शरीर हैं उनमें सबसे छोटे को भी सबसे ऊँचे के मुक़ाबिले में पनाह देने का हक़ है।

एक बार हज़रत मुग़ीरा र० राजदूत की हैसियत से ईरान गये। उस दिन दरबार की नई शान थी। ईरानियों ने अपनी शान

व शौकत और धन-दौलत का बढ़-चढ़ कर प्रदर्शन किया था। मुग़ीरा र० निःसंकोच अध्यक्ष की ओर बढ़ते हुए अध्यक्ष के बग़ल में जाकर बैठ गये। ईरानियों ने यह दृश्य कहाँ देखा था, वह ताब न ला सके और मुग़ीरा को हाथ पकड़कर तख़्त से उतार दिया। मुग़ीरा ने कहा कि मेहमान के साथ तो यह वर्ताव उचित न था। हम लोगों में यह दस्तूर नहीं कि एक व्यक्ति ख़ुदा बनकर बैठ जाय और तमाम लोग उसके आगे बन्दों की तरह खड़े हों। उन के इस निर्भीक वक्तव्य का जब अनुवाद किया गया तो दरबार पर सन्नाटा छा गया और लोगों ने स्वीकार किया कि हमारी ग़लती थी।

एक बार रोम के दरबार में हज़रत मआज़ बिन जबल र० राजदूत बनकर गये। दरबार में चाँदी के तारों का फ़र्श बिछा था। मआज़ ज़मीन पर बैठ गये और कहा कि मैं इस फ़र्श पर जो ग़रीबों का हक़ छीन कर तैयार हुआ है बैठना नहीं चाहता। ईसाइयों ने कहा कि हम तुम्हारी इज़्ज़त करना चाहते थे किन्तु हम क्या करें तुमको स्वयं अपनी इज्ज़त का ध्यान नहीं। मआज़ घुटने के बल खड़े हो गये और कहा जिसको तुम इज्ज़त समझते हो मुझ को उसकी परवाह नहीं। अगर ज़मीन में बैठना गुलामों का चलन है तो मुझसे बढ़कर कौन ख़ुदा का गुलाम हो सकता है। एक व्यक्ति ने पूछा मुसलमानों में तुम से कोई बढ़कर है, मआज़ ने कहा—मआज़ अल्लाह! यही बहुत है कि मैं सबसे बदतर न हूं। रूमियों ने अपने बादशाह की प्रशंसा की। मआज़ ने कहा कि तुमको इस पर नाज़ है कि तुम ऐसे राजा की प्रजा हो जिसको तुम्हारी जान व माल का अख़्तियार है किन्तु हमने जिसको अपना हाकिम बना रक्खा है वह किसी बात में अपने आपको प्राथमिकता नहीं दे सकता अगर वह बलात्कार करे तो उसको कोड़े लगाये जायें, चोरी करे तो हाथ काट डाले जायें, वह परदे में नहीं बैठता, अपने आपको हमसे बड़ा नहीं समझता। धन दौलत में उसको हम पर कोई प्राथमिकता नहीं।

इस मानसिक क्रान्ति से जो एक ख़ुदा को अपना असली आराध्य

और रब मान लेने में पेश आयी उनका जीवन पूर्णतः बदल गया। उनकी दानवता फ़रिश्ता ख़स्लत इन्सान में बदल गई। जो डाकू और लुटेरे थे वह दूसरों की जान व माल तथा इज़्ज़त व आबरू के रक्षक बन गये। जो जानवरों के पहले और पीछे पानी-पीने और पिलाने पर ख़ून की नदियां बहा देते थे वह दूसरों की ख़ातिर प्यासा मर जाना पसन्द करने लगे। जो अपनी बच्चियों को अपने हाथों ज़मीन में दफ़न कर दिया करते थे वह दूसरों की बच्चियों की परवरिश के लिए अपनी गोदें ख़ाली करने लगे। जो दूसरों के माल को अपना माल समझते थे वह अपना माल भी दूसरों का माल समझने लगे। जिनको दिन दहाड़े लोगों का माल लूटने में हिचक न थी, वह रात के अंधेरे में ईरान के बादशाह का चाँदी का मुकुट जो लाखों रुपये की मालियत का था अपने कम्बल में छिपा कर अमीर के पास पहुँचा देते थे।

ख़ुदा की चाह और लगन ने दुनियादारी और पेट पूजा की उस समस्या और उफान को ठंडा कर दिया जिसने जीवन का सुख चैन छीन लिया था और दुनिया को एक बाज़ार व मण्डी मात्र बना दिया था होड़ की वह भावना जो मानव की निहित शक्तियों को उभारती और उसके जौहर को चमकाती है जिसने पहले लोगों का रुख़ दुनिया की तरफ मोड़ कर जिन्दगी को नर्क बना दिया था। भाई-भाई में द्वेष की भावना पैदा कर दी थी। लोगों का रुख़ दीन की तरफ़ मोड़-कर उसने मानवीय गुणों को उभार दिया और चरित्र को पवित्र बना दिया। विभिन्न वर्गों और इन वर्गों के विभिन्न व्यक्तियों में अब भी एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ थी किन्तु नेक चलन बनने और पुण्य व सवाब कमाने तथा ख़ुदा की रज़ामन्दी व बख़्शिश प्राप्त करने में। ग़रीबों ने अल्लाह के रसूल मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम से शिकायत की कि हमारे दौलतमन्द भाई हमसे आगे बढ़े जा रहे हैं। नमाज, रोज़ा वह हमारी तरह करते हैं किन्तु सदक़ा और ख़ैरात (दान) में हम उनकी बराबरी नहीं कर सकते। आपने उनको एक ज़िक्र (मन्त्र) बतला दिया। दौलत मन्दों ने सुना तो उन्होंने भी वही पढ़ना

शुरू कर दिया। ग़रीबों ने आकर पुनः निवेदन किया कि हम तो फिर पीछे रह गये हमारे दौलतमन्द भाइयों ने भी वही पढ़ना शुरू कर दिया जो आपने हमको बतलाया था। आपने उनको तसल्ली दी। साधना और संतोष ने दुनिया को जन्नत का नमूना बना दिया जिसमें "ला ख़ौफ़ुन अलैहिम वलाहुम यहज़नून" (किसी तरह का अन्देशा नहीं उन पर और न वह दुःखी होंगे) की झलक नज़र आती थी। लिप्सा और लालसा के दूर हो जाने से दिलों में ऐसी उल्फ़त व मुहब्बत पैदा हो गई थी कि दिलों से खोट नापैद हो गया था। अधिकारों की माँग के बजाय कर्त्तव्यों के प्रति जागरुकता और लालच के बजाय आत्मबलिदान की ऐसी भावना उत्पन्न हो गई थी कि "यूसेरुन अला अनफुसेहिम व लौकाना बेहिम ख़सासा" [वह अपने ऊपर (दूसरों को) प्राथमिकता देते हैं यद्यपि उनको बड़ी ज़रूरत होती है] का दृश्य देखने वालों को नज़र आया। दुनिया ने देखा कि मेज़बान ने बच्चों को भूखा सुलाकर और चिराग़ बुझाकर मेहमानों को यक़ीन दिलाया कि वह उनके साथ खाने में शामिल हैं। मेहमान ने पेट भर खाना खाया और मेज़बान बीवी बच्चों सहित रात भर भूखा रहा।

यह सारा सुधार और यह सारी तरक़्क़ी नतीजा थी—अल्लाह को एक इलाह स्वीकार कर लेने, अपने को उसके हवाले कर देने और स्वयं को एक मासूम (जिससे पाप न हुआ हो) पैग़म्बर की शिक्षा-दीक्षा में देने का। इससे मानो उनके ज़िन्दगी की चूल बैठ गई और हर चीज़ अपनी जगह पर ठीक आ गई।

ईसाई संसार ने इस पैग़ाम की क़दर न की। उसका पूर्वी भाग तो बहुत जल्द उन लोगों के सामने झुक गया जो इस पैग़ाम के वाहक और अपने पैग़म्बर के जानशीन थे। किन्तु उसका पश्चिमी और उत्तरी भाग (यूरोप) मुजाहिदीन और इस्लाम की दावत देने वालों के हल्क़े से बाहर रहा। उसने पूरे एक हज़ार साल अज्ञानता और अन्धकार के उस युग में व्यतीत किया जिसे वह स्वयं 'अन्धकार युग' कहता है। मानव इतिहास का यह लम्बा युग जो अज्ञानता व असभ्यता,

अन्ध विश्वास, रहबानियत (सन्यास) मानव से अलगाव की भावना, कलीसा की सख्त जकड़न और अन्याय व अत्याचार की भेंट चढ़ा, उसका अफ़सोस योरोप को हमेशा रहेगा और उसकी लज्जा से उसकी गर्दन हमेशा झुक जानी चाहिए। यह नतीजा था एक अल्लाह को छोड़कर अनेक रबों की पूजा का।

अनुवादः-- उन्होंने अपने आलिमों (विद्वानों) राहिबों (सन्यासी) और (हज़रत) मसीह अ० को अल्लाह के अलावा अपना रब बना लिया।[1]

सोलहवीं शताब्दी में जब उसकी आंखें खुलीं तो उसने सोचा कि उसकी सारी मुसीबतों का इलाज यह है कि वह कलीसा की गुलामी से नजात हासिल करले किन्तु उसने "ला इलाहा" की पूरी मंज़िल तय नहीं की। उसने 'ला कलीसा' (नहीं है कोई कलीसा) को 'ला इलाहा' (नहीं है कोई माबूद) का पर्यायवाची समझा और उसे छोड़कर दूसरे 'इलाह' अपने ऊपर ओढ़ लिए। और 'इल्लाह' का तो उसने प्रारम्भ ही नहीं किया। पश्चिम अपने स्वर्णिम इतिहास की इन तीन शताब्दियों में अपने एक प्रिय 'इलाह' से रूठ कर दूसरे नये नये 'इलाह' (पूज्य) तराशता रहा और "अतआबुदूना मा तनहेतून" (क्या तुम जिन को अपने हाथों से तराशते हो उन्हीं की पूजा करने लगते हो) का दृश्य प्रस्तुत करता रहा। आज भी वह अपने बहुत से पुराने 'इलाह' से बेज़ार नज़र आता है किन्तु दूसरे झूठे 'इलाह' तराशता जा रहा है उनमें किसी इलाह का नाम 'प्रजातन्त्र' है किसी का नाम 'सामन्तशाही' किसी का 'सरमायादारी', किसी का नाम 'साम्यवाद', किसी का 'राष्ट्र' और किसी का नाम 'मातृभूमि' है। पश्चिम अपनी जिन्दगी के नक़्शे उधेड़-उधेड़ कर बनाता और अपनी जिन्दगी की घड़ी पुर्जे बिखेर-बिखेर कर जमाता है किन्तु उसकी चूल नहीं बैठती। इस उलझी हुई डोर को वह वर्षों से सुलझा रहा है किन्तु जितना सुलझाने

---

1. सूरे तौबा—31।

का प्रयास करता है वह उलझती जा रही है यहाँ तक कि अब उसमें स्वयं उसकी अंगुलियां इस प्रकार फंस गई हैं कि निकलती नहीं।

वह ज़िन्दगी के हज़ार नक़्शे बनाये और उनमें हज़ार संशोधन करे और उनके नये नये नाम रक्खे। एक व्यक्ति का दायित्व बहुत से लोगों पर बांट दे अथवा बहुत से लोगों की ज़िम्मेदारी एक अत्यन्त ज़िम्मेदार व्यक्ति पर डाल दे और उस व्यक्ति को सैंकड़ों नियमों में जकड़ दे किन्तु जब तक इस शरीर की आत्मा नहीं बदलती वह ज़िम्मेदार व्यक्ति हो अथवा कोई वर्ग या पूरा राष्ट्र जब तक अपने को एक सर्वज्ञानी, सर्व विद्यमान् महाशक्ति के सम्मुख जवाबदेह नहीं समझता, उसके दिल में ख़ुदा का डर और आख़िरत का भय नहीं पैदा होता, अच्छाई और नेकी व अमानतदारी की भावना नहीं जागृत होती तब तक नामों के बदलने मात्र से तथा नियमों के जाल बिछाने से कोई वास्तविक परिवर्तन सम्भव नहीं।

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चरित्र का, उनकी ज़िन्दगी का असल पैग़ाम इस बीसवीं शताब्दी की दुनिया के नाम, जिसका नेतृत्व आज पश्चिम के हाथ में है, यह है कि ऐ! अल्लाह से भागने वालों!! अल्लाह की तरफ़ भागो और उसके सिवा किसी को 'इलाह' न बनाओ।

अनुवाद:– पस भागो अल्लाह की तरफ़। बेशक मैं उसकी तरफ़ से खुला डराने वाला हूँ और अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को माबूद न बनाओ। बेशक मैं उसकी तरफ़ से खुला डराने वाला हूँ।[1]

यह पैग़ाम मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत हर साल दुनिया को सुनाती है और दुनिया के कोने कोने तक यह दावत पहुँचाती है। हवा अपने कान्धों पर और समन्दर अपने सर आँखों पर रखकर हर साल इस पैग़ाम और दावत को दुनिया के मुल्कों और क़ौमों को पहुँचाता है और दुनिया का यह शोर जो कुछ सुनने नहीं

1. सूरे ज़ारियात 50–51।

देता जरा कम हो तो अब भी कान में वह आवाज आ रही है जिसको पहली सदी के अहले किताब[1] ने सुना था।

अनुवादः– तुम्हारे पास एक रोशनी आई और एक खुली हुई किताब जिसके जरिये से अल्लाह हिदायत करता है उसको जो उसकी रजा पर चलने वाला हो सलामती के रास्तों की ओर उनको निकालता है अन्धेरों से रोशनी की तरफ़ और उनको हिदायत करता है सीधे रास्ते की।[2]

पैग़म्बर ही मानव-जलयान के खेवनहार हैं। इन्सानों की किश्ती हर जमाने में उन्हीं के खेने से किनारे तक पहुँची है। केवल हजरत नूह अ० के पुत्र ही की विशेषता न थी, हर जमाने में जिसने भी "पहाड़ पर पनाह लेकर तूफ़ान से बच जाने का" दावा किया है उसको यही जवाब मिला है कि "आज कोई बचाने वाला नहीं।" मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अभ्युदय के बाद व्यक्तियों और क़ौमों, पूरब और पश्चिम वालों, पहले और बाद वालों सबके लिए अल्लाह का फ़ैसला यह है कि भलाई और कल्याण उन्हीं के चरणों में है उनसे अलग होकर बरबादी और विनाश, महरूमी और निराशा के सिवा कुछ नहीं।

---

1. आसमानी किताब वाले अर्थात् मुस्लिम, यहूद व नसारा।
2. सूरे मायदा 15—16।

सीरत का पैग़ाम
वर्तमान युग के मुसलमानों के नाम

सब जानते हैं कि जिस समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अभ्युदय हुआ दुनिया कुछ वीरान और कोई क़ब्रिस्तान न थी जीवन चक्र जिस प्रकार इस समय चल रहा है बहुत थोड़े से अन्तर के साथ उस समय भी चल रहा था। सारे कारोबार आज की तरह हो रहे थे व्यापार भी था और खेती भी थी तथा प्रशासन चलाने वाले और उनकी मशीनरी में फ़िट होने वाले भी थे। उस समय के लोग अपने जीवन से सन्तुष्ट थे और उनको उसमें किसी संशोधन अथवा सुधार की ज़रूरत महसूस नहीं होती थी।

किन्तु अल्लाह तआला को अपनी ज़मीन का यह नक़्शा और दुनिया की यह हालत पसन्द न थी। हदीस में उस समय के बारे में है कि:—

अनुवाद:— "अल्लाह तआला ने दुनियावालों पर नज़र डाली। उसने भूतल के तमाम निवासियों क्या अरब क्या अजम सबको बेहद नापसन्द फ़रमाया और वह उनसे बेज़ार हुआ, सिवाय अहले किताब के कुछ लोगों के।" ऐसी दशा में अल्लाह ने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा और आप के साथ एक पूरी क़ौम का अभ्युदय हुआ। स्पष्ट है कि इनको किसी ऐसे उद्देश्य के लिए पैदा किया था जो दूसरी क़ौमों से पूरा नहीं हो रहा था। जो काम वह सब पूरी तन्म-यता से कर रहे थे उसके लिए स्पष्टतः किसी नई उम्मत को पैदा करने की ज़रूरत न थी और मानवजीवन के उस शान्त समुद्र में इस नये तूफ़ान की ज़रूरत न थी जो मुसलमानों के अभ्युदय से उत्पन्न हुआ और जिसने दुनिया को हिला दिया। अल्लाह तआला ने जब

हज़रत आदम अ० को पैदा किया तो फ़रिश्तों ने निवेदन किया कि आपकी आराधना के लिए हम सेवकगण बहुत काफ़ी थे इस के लिए इस मिट्टी के पुतले को पैदा करने की ज़रूरत समझ में नहीं आई। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते"। मानो संकेत किया कि आदम अ० केवल उसी काम के लिए पैदा नहीं हुए जो फ़रिश्ते कर रहे थे उनसे ख़ुदा को कुछ और काम लेना है।

यदि मुसलमान केवल व्यापार के लिए पैदा किये जा रहे थे तो मक्का के उन व्यापारियों को जो सीरिया व यमन तक व्यापार करने जाया करते थे और मदीना के उन बड़े-बड़े सौदागरों को जिनके बड़े-बड़े गढ़ बने हुए थे यह पूछने का हक़ था कि इस सेवा के लिए क्या हम कम हैं जो एक नई उम्मत पैदा की जा रही है। यदि उद्देश्य खेती कराना था तो मदीना और ख़ैबर के, तायफ़ और नज्द के, सीरिया, यमन और ईराक़ के किसानों को यह पूछने का हक़ था कि खेती बाड़ी के काम में हम क्या कम मेहनत करते हैं जिसके लिए एक नई उम्मत पैदा की जा रही है। यदि दुनिया की चलती हुई मशीनरी में केवल फ़िट होना था और राज्यों के प्रशासन एवं दफ़्तरी कारोबार को पैसा लेकर चलाना था तो रोम तथा ईरान के राज्य कर्मचारियों को यह कहने का हक़ था कि इस काम को करने के लिए हम बहुत हैं और हमारे अनेक भाई बेरोज़गार हैं इसके लिए नये उम्मीदवारों की क्या ज़रूरत है।

किन्तु मुसलमान वास्तव में एक नये और ऐसे काम के लिए पैदा किये जा रहे थे जो दुनिया में कोई न कर रहा था और न कर सकता था। उसके लिए एक नई उम्मत ही की ज़रूरत थी:--

अनुवाद:-- तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गई। भलाई का हुक्म देते और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो (सूरे आल इमरान--110)।

इसी उद्देश्य के लिए लोगों ने घरबार छोड़ा और अपना

कारोबार छोड़ा। अपनी जीवन भर की पूंजी लुटाई। अपने जमे जमाये कारोबार पर पानी फेरा। अपनी खेती वाड़ी और बाग़-बग़ीचों को वीरान किया। अपना सुख चैन तजा। दुनिया की तमाम सफलताओं और सुख-समृद्धि से आंखें बन्द करलीं। स्वर्णिम अवसर खोये। पानी की तरह अपना ख़ून बहाया और अपने बच्चों को अनाथ और अपनी बीवियों को बेवा किया। इन उद्देश्यों एवं व्यस्तताओं के लिए जिन पर आज मुसलमान सन्तुष्ट नज़र आते हैं इस उथल-पुथल और क्रान्ति की ज़रूरत न थी। इसकी प्राप्ति तो बड़ी आसानी से बिना किसी ख़ून ख़राबे के हो सकती थी। और इस पर अरब और दुनिया की दूसरी क़ौमों को शिकायत न होती। उन्होंने तो बार-बार इन्हीं चीज़ों की पेशकश की और हर बार इस्लाम की तरफ़ बुलाने वालों ने उनको ठुकराया। दौलत व सरदारी भोग-विलास और राहत व तन आसानी की बड़ी-बड़ी भेंट को अस्वीकार किया। फिर यदि मुसलमानों को उसी स्तर पर आ जाना था जिस पर इस्लाम के अभ्युदय के समय अन्य काफ़िर क़ौमें थीं और इस समय भी दुनिया की तमाम ग़ैर मुस्लिम आबादी है, और जीवन के उन्हीं कामों में लीन हो जाना था जिन में अरब और रोम व ईरान के निवासी डूबे हुए थे और उन्हीं सफलताओं को अपना जीवन लक्ष्य बना लेना था जिनको उनके पैग़म्बर स० उनके स्वर्णिम अवसर पर रद्द कर चुके थे तो यह इस्लाम के प्रारम्भिक इति-हास पर पानी फेर देने के समान है और इस बात की घोषणा है कि इन्सानों का वह बहुमूल्य रक्त जो बदर व हुनैन और अहज़ाब व क़ादिसिया व यरमूक[1] में बहाया गया, अनावश्यक बहाया गया।

आज अगर क़ुरैश के सरदारों को कुछ बोलने की ताक़त हो तो मुसलमानों को सम्बोधित करके वह यह कह सकते हैं कि तुम जिन चीज़ों के पीछे परेशान हो और जिनको तुमने अपने जीवन का लक्ष्य समझ रक्खा है उन्हीं चीज़ों को हम गुनाहगारों ने तुम्हारे पैग़म्बर के

---

1. इस्लाम के अभ्युदय के समय हुए महत्वपूर्ण धार्मिक युद्ध।

सामने पेश किया था। वह तमाम चीजें उस समय बिना एक बूंद खून बहाये प्राप्त हो सकती थीं। तो क्या सारे संघर्ष का फल और उन तमाम बलिदानों की क़ीमत जीने का वह ढंग है जिसे तुमने अख़्तियार कर रक्खा है और जीवन व आचरण का वही स्तर है जिस पर तुम सन्तुष्ट हो। अगर क़ुरैश के उन सरदारों में से जो इस्लाम के दुश्मन थे, किसी को यह जिरह करने का मौक़ा मिले तो आज हमारा कोई बड़े से बड़ा लायक़ वकील भी इसका संतोषजनक और मुंहतोड़ जवाब नहीं दे सकता। और उम्मत के लिए इस पर लज्जित होने के सिवा कोई चारा नहीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुसलमानों के बारे में यही खतरा था कि वह दुनिया में पड़कर अपना लक्ष्य न भूल जायें और दुनिया के सामान्य स्तर पर न आ जायें आपने मृत्यु से कुछ दिन पहले जो भाषण दिया उसमें मुसलमानों को सम्बोधित करके फ़रमाया:—

अनुवाद:— मुझे तुम्हारे बारे में कुछ ग़रीबी का ख़तरा नहीं, मुझे तो इसका डर है कि कहीं दुनियां में तुमको भी वही आकर्षण न प्राप्त हो जाये जैसा तुम से पहले लोगों को प्राप्त हुआ, तो तुम भी उसी तरह उसमें होड़ लगाओ जैसे उन्होंने किया तो तुम को भी उसी तरह नष्ट करदे जैसे उनको नष्ट किया। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

मदीना के अन्सारियों ने जब इस बात का इरादा किया कि जेहाद की व्यस्तता और इस्लाम के संघर्ष से कुछ दिनों की फ़ुरसत हासिल करके अपने बाग़ों, खेतों और कारोबार को दुरुस्त करलें और कुछ दिनों के लिए केवल अपने कारोबार को देखने की इजाज़त हासिल करलें। यह ख़तरा भी उनके दिल में नहीं गुज़र सकता था कि वह दीन के स्तम्भों नमाज, रोजा, हज और ज़कात से भी कुछ दिनों के लिए अपने कारोबार की देखभाल के लिए अपने को अलग करालें किन्तु इस्लाम के व्यवहारिक संघर्ष और दीन के विकास और उसे सर्वोपरि रखने के प्रयास से उनके इस क्षणिक अलगाव को भी आत्म

हत्या का पर्यायवाची बताया गया और सूरः बक़रा की आयत नाज़िल (अवतरित) हुई जिसकी विवेचना हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी र० ने इस प्रकार की है:—

अनुवाद:— अल्लाह के रास्ते पर ख़र्च करो और अपने हाथों विनाश में न पड़ो और अच्छी तरह काम करो बेशक अल्लाह तआला अच्छे काम करने वालों को दोस्त रखता है। (सूरे बक़रा-195)।

मुसलमान की ज़िन्दगी की असली पूँजी यही है कि या तो इस्लाम की दावत (बुलावा) और सक्रिय संघर्ष में व्यस्त हो या इस दावत व सक्रिय संघर्ष में व्यस्त लोगों के लिए सुरक्षा पंक्ति व मददगार बने और साथ ही सक्रिय संघर्ष में भाग लेने का इरादा और शौक़ रखता हो। एक सन्तुष्ट कारोबारी जीवन इस्लामी जीवन नहीं और यह किसी भी प्रकार एक मुसलमान के जीवन का लक्ष्य नहीं हो सकता। जीवन की जायज़ व्यस्तताओं और जायज़ आर्थिक संसाधनों पर कदापि रोक नहीं, बल्कि सच्ची नीयत (सद्भावना) तथा पुण्य की भावना के साथ यह ईश्वर का सानिध्य (क़ुर्ब) प्राप्त करने के साधन हैं मगर यह जब सब दीन साये में हों और सच्चे लक्ष्यों के साधन हों न कि साध्य।

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत का यह सबसे बड़ा पैग़ाम है जो विशुद्ध मुसलमानों के नाम है। इसकी ओर ध्यान न देना उसके लक्ष्य को बरबाद करना और सबसे बड़ी सच्चाई की तरफ़ से आँख बन्द करना है।

इक़बाल दरे दौलत पर[1]

डा० मोहम्मद इक़बाल का पूरा जीवन रसूल स० की भक्ति और मदीना की याद से भरपूर था। उनकी सजीव रचनाएं इन दोनों के वर्णन से भरी हुई है किन्तु जीवन के अन्तिम दिनों यह भावना इतनी तीव्र हो गयी थी कि मदीना का नाम आते ही प्रेम के आंसू अनायास जारी हो जाते। यद्यपि वह साक्षात् प्रियतम की नगरी में उपस्थित न हो सके तथापि अपने मन की लगन, वेचैन दिल, अपनी कल्पना शक्ति और रचनाओं के साथ उन्होंने हेजाज के मदमस्त वातावरण में वार-वार उड़ान की और उनकी चेतना का पंछी हमेशा उसी आस्ताने पर मंडलाता रहा।

उन्होंने रसूले आजम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुजूर में अपने दिल, अपनी मुहब्बत, अपनी निष्ठा और अपनी भक्ति भावना की नज़र पेश की और आपको सम्बोधित करके अपनी भावनाओं एवम् अनुभूतियों, अपनी मिल्लत[2] और अपने समाज की हृदयविदारक तस्वीर खींच कर रख दी। ऐसे अवसरों पर उनकी कविता के जौहर खूब मिलते थे और भावों के सोते फूट पड़ते थे। वह वास्तविकतायें जिन पर उनका भरपूर नियन्त्रण होता उस समय खुल कर सामने आतीं और अपना खूब रंग दिखातीं।

बहरफ़े मी तवां गुफ़तन तमन्ना-ए-जहाने रा
मन अज शौक़े हुजूरी तूल दादम दास्ताने-रा

(अनुवाद:- तमाम दुनिया की बातें मैं कुछ शब्दों में बयान कर सकता

---

1. सन् 1956 में दमिश्क रेडियो से प्रसारित एक अरबी भाषण के उर्दू अनुवाद से।
2. इस्लाम।

हूं। मैंने तो दास्तान को इसलिए तूल दिया ताकि देर तक आप के पास रह सकूं)।

इस विषय पर उनकी रचनायें सर्वाधिक सजीव, शक्तिशाली, प्रभावी, उनकी भावनाओं को ठीक ठीक व्यक्त करने वाली, उनके अनुभवों का निचोड़, उनके युग की तस्वीर और उनकी अत्यन्त कोमल अनुभूतियों की प्रतिबिम्ब हैं।

वह कल्पना के संसार में मक्का और मदीना की यात्रा करते हैं और इस कल्पना के साथ हर्ष उल्लास में डूबे क़ाफ़िले के साथ नर्म रेगिस्तानी जमीन पर बढ़ते चले जाते हैं। हाज़िरी की लगन तथा शौक़ व मुहब्बत में यह रेत उनको रेशम से भी ज्यादा नर्म महसूस हो रही है बल्कि ऐसा लगता है कि उसका हर कण दिल बनकर धड़क रहा है। वह सारबान[1] से कहते हैं कि इन धड़कते दिलों का ख़्याल करे और धीरे चले।

ऊंटनी वाले का गीत सुनकर उनकी प्रेम ज्वाला और तीव्र होने लगती है। हृदय की शिरायें तरंगित हो उठती हैं। उनके तन मन में हरारत और ज़िन्दगी की एक लहर दौड़ जाती है और उनके दिल के तार करुण भाव में डूबे हुए प्रभावी एवम् अलंकरित शेरों के साथ मुखरित होने लगते हैं।

फिर वह कल्पना के इसी संसार में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मज़ार पर हाज़िर होते हैं दरूद व सलाम पढ़ते हैं अपनी भावनायें व्यक्त करते हैं और वह इस शुभ घड़ी का लाभ उठाकर अपने दिल का हाल बयान करते हैं। इस्लाम की उम्मत और इस्लामी संसार का हाल, उसकी समस्याओं और कठिनाइयों, उसकी परीक्षा की घड़ियों तथा पाश्चात् सभ्यता एवं भौतिकवादी विचारधाराओं एवम् आन्दोलनों के सामने उसके घुटने टेक देने तथा उसकी बेबसी, अपने देश में उसका अपरिचित होकर रह जाना और स्वयं अपनी क़ौम में

1. ऊँटनी को लेकर चलनेवाला।

अपने पैग़ाम की अवहेलना की शिकायत करते हैं। यह सब कहते कहते उनकी आँखें डबडबा जाती हैं और दिल भर आता है। अपने शेरों के इस संकलन का नाम इक़बाल ने "अरमुग़ाने हेजाज़" रक्खा जो वास्तव में इस्लामी दुनिया के लिए एक बहुमूल्य भेंट है।

इक़बाल की यह मन की यात्रा उस समय हुई जब उनकी अवस्था साठ वर्ष से ऊपर थी, उनका शरीर कमज़ोर हो गया था। इस अवस्था में जब लोग आराम करना अधिक पसन्द करते हैं और एकान्त में पड़े रहना चाहते हैं, उनको जिस धुन ने इस लम्बी और कठिन यात्रा के लिए तैयार किया उसको प्रेम की पराकाष्ठा और जीवन के लक्ष्य की पूर्ति के सिवा और क्या कहा जा सकता है।

वह कहते हैं कि इस समय जबकि मेरी ज़िन्दगी का सूर्यास्त निकट है, अगर मैंने मदीना जाने का इरादा किया तो इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है। जिस प्रकार शाम को चिड़ियां अपने अपने ठिकानों की तरफ़ जाती हैं उसी प्रकार मेरी आत्मा भी अब अपने असली ठिकाने की तरफ़ वापस जाना चाहती है।

मक्का और मदीना के बीच जब उनकी ऊँटनी अपनी रफ़्तार तेज़ कर देती है तो वह उसको सम्बोधित कर कहते हैं कि सवार बहुत कमज़ोर व बीमार है किन्तु ऊँटनी उनकी इस सलाह को नहीं मानती, वह मदमस्त बढ़ती चली जाती है मानो यह रेत नहीं रेशम का फ़र्श बिछा है।

अब यह कारवाने मदीना दरूद व सलाम की सौग़ात लिए अपनी मंज़िल की तरफ़ अग्रसर है। आनन्द विभोर कर देने वाले इस वातावरण में वह कामना करते हैं कि क्या ही अच्छा हो कि उनको इस गर्म रेत पर ऐसा सज्दा नसीब हो जो उनके माथे पर एक चिरस्थायी चिन्ह छोड़ जाये। वह अपने दोस्तों को भी ऐसे ही सज्दे की सलाह देते हैं।

उमंग की उफान जब अधिक होती है तो एराक़ी और जामी[1]

1. फ़ारसी साहित्य के दो प्रसिद्ध कवियों के उप नाम।

की पंक्तियाँ अनायास उनकी जबान पर जारी हो जाती हैं। लोग चकित होकर देखने लगते हैं कि यह अजमी आखिर किस जबान में शेर पढ़ रहा है जो समझ में तो नहीं आते किन्तु दिल को दर्द व मुहब्बत से ऐसा भर देते हैं कि आदमी को खाने पीने का होश भी बाक़ी नहीं रहता और बिन पानी ही उनकी प्यास दूर हो जाती है।

रास्ते की कठिनाइयों में उनको आनन्द आने लगता है। रात को जागने, कम सोने और आराम न करने में उन्हें मजा मिलता है। वह इस रास्ते को लम्बा नहीं समझते और शीघ्र पहुँचने की इच्छा नहीं करते बल्कि अपने सरवान से इच्छा व्यक्त करते हैं कि वह इस से भी अधिक लम्बे रास्ते से ले चलें ताकि इस बहाने उनको उमंग व उल्लास का समय भी कुछ लम्बा हो जाये और इन्तेजार का लुत्फ़ दो बाला हो सके।

इसी उल्लास एवम् उमंग के साथ वह सारा रास्ता तय करते हुए मदीना तय्यबा पहुँचते हैं और अपने साथी से कहते हैं कि हम दोनों का लक्ष्य एक ही है। आज हमको अपने हृदय की कामना पूरी करने और अपने स्वामी तथा प्रियतम के चरणों पर अपनी पलकें बिछाने का अवसर मिला है इसलिए आज हमें अपनी आँखों पर से पाबन्दी हटा लेनी चाहिए और आँसुओं की इस बाढ़ को जो बहुत दिनों से उमड़ने के लिए बेचैन है थोड़ी देर के लिए आजाद छोड़ देना चाहिए।

वह अपने में फूले नहीं समाते और कहते हैं कि उनका कितना बड़ा अहोभाग्य है कि यह शुभ घड़ी उनके भाग्य में आई और उन जैसे तुच्छ सेवक को उस शाही दरबार में उपस्थित होने का सम्मान मिला जहाँ बड़े-बड़े बुद्धिजीवी और धनवानों को पहुँचने का सौभाग्य प्राप्त न हो सका।

किन्तु इस हर्षोल्लास और उमंग में भी वह इस्लामी उम्मत व हिन्द के मुसलमानों को नहीं भूलते और पूर्ण सत्यनिष्ठा एवम् विश्वास के साथ उनके मन की पीड़ा को किताब की तरह खोलकर सामने रख देते हैं।

वह कहते हैं कि इस उम्मत की बड़ी परीक्षा यह है कि यह काफ़ी ऊँचाई से गिरी है और जो जितने ऊपर से गिरता है उतनी ही उसको चोट आती है। वह कहते हैं कि इस उम्मत की परेशानी और इसकी अव्यवस्था का कारण यह है कि जमाअत है और इमाम (नेतृत्व) नहीं, व्यक्ति हैं किन्तु व्यवस्था नहीं। वह कहते हैं कि इसके खून में अब वह आब व ताब और उसके अन्दर वह तड़प बाक़ी नहीं रही जो कभी उसका विशिष्ट गुण था। बहुत दिनों से उसकी मियान बिना तलवार के है और उसकी उजड़ी हुई खेती फूलने फलने से वंचित है।

वह कहते हैं कि यह उम्मत खोज व तलाश के शौक़ से खाली होकर दुनिया की तड़क-भड़क में फंस कर रह गई है। उसके कान सुरीले गानों के अभ्यस्त हो गये हैं और आज़ाद व बेबाक शौर्य वीरों की आवाज़ उसके लिए अपरिचित हो चुकी है। अब उसमें न पहले जैसा विश्वास है और न लगन। प्रेम भक्ति की दौलत उससे छिन चुकी है उसे अपने ठिकाने का पता न रहा।

फिर वह उसके शानदार बीते दिनों की तुलना वर्तमान युग की परेशांहाली से करते हैं। वह बड़े प्रभावी ढंग से कहते हैं कि जिसको आपने फलों और मेवों पर पाला हो और लाड व प्यार में रक्खा हो वह आज इन मरुस्थलों में अपनी जीविका तलाश करने और दर दर भटकने पर मजबूर है।

वह अधर्म के उस झंझावात का वर्णन करते हैं जो इस्लामी संसार की ओर तेज़ी से बढ़ रहा है। डा० इक़बाल (जो स्वयं दर्शनशास्त्र, राजनीति एवम् अर्थशास्त्र के पंडित थे) भली प्रकार समझते थे कि इस्लामी दुनिया में अधर्म का सबसे बड़ा रास्ता विशुद्ध भौतिकवादी दृष्टि-कोण, अध्यात्मवाद की कमी और दिलों का सर्द पड़ जाना है। ठाठ-बाट एवम् अमीराना ज़िन्दगी से इसमें और मदद मिल रही है। उनका विश्वास है कि अधर्म की इस बाढ़ और भौतिकवादी आर्थिक विचार-धारा का मुक़ाबिला अगर किसी चीज़ से हो सकता है तो वह साधना

एवम् प्रेम है। इस पर अगर कोई चीज भारी पड़ सकती है तो वह हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ र० का साधना एवं प्रेम से परिपूर्ण जीवन है। वह मुसलमानों के लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इस अनुकरणीय जीवन की कामना करते हैं। उनका विश्वास है कि अगर लोगों का जीवन हज़रत अबूबक्र र० जैसा हो जाये तो सारी दुनिया उनके सामने सर झुकाने और उनका सम्मान करने पर मजबूर होगी।

वह मुसलमानों के पतन का कारण ग़रीबी और भौतिक साधनों की कमी को नहीं समझते बल्कि उसका कारण उस जीवनज्योति का ठंडा हो जाना है जो किसी युग में उनके सीनों में प्रज्वलित थी। वह कहते हैं—जब यह सन्त और फ़क़ीर अल्लाह के लिए सजदा करते थे और किसी अन्य की सत्ता स्वीकार नहीं करते थे—उस समय राजाओं का अस्तित्व उनके चंगुल में था जब यह ज्योति ठंडी हो गई तो उनको दरगाहों और ख़ानक़ाहों में शरण लेनी पड़ी।

वह मुसलमानों के इतिहास का अध्ययन करते हैं और उसका एक पन्ना उलट कर देखते हैं। इसमें उनको जगह जगह ऐसी चीजें मिलती हैं जिनसे एक मुसलमान का सर शर्म से झुक जाये। अनेक ऐसी चीजें सामने आती हैं जिनका हज़रत मोहम्मद स० की नबूवत, उसकी शिक्षाओं एवम् उसकी उच्च मान्यताओं तथा सिद्धान्तों से कोई तालमेल नहीं। उनको अनेक मुशरिकाना[1] बातें, गैर अल्लाह की पूजा, अन्यायी एवम् अत्याचारी राजाओं एवं शासकों की चमचागीरी तथा उनकी प्रशंसा के ऐसे नमूने नज़र आते हैं जिनसे एक स्वाभिमानी व्यक्ति के माथे पर पसीना आने लगता है। इक़बाल ख़ामोशी के साथ एक एक चीज देखते जाते हैं और अन्त में बड़े स्पष्ट एवं साफ़ शब्दों में किन्तु संक्षिप्त एवम् अलंकरित भाषा में कहते हैं—कि वास्तविकता तो यह है कि इन गिरावटों के साथ हम कदापि आप की मान मर्यादा के अनुकूल न थे, हमारा आपसे नाता जोड़ना आपकी मान मर्यादा के विरुद्ध है।

1. शिर्क का विशेषण।

इस्लामी संसार पर जो उनका देखा भाला और जाना पहचाना है वह एहतियात के तौर पर दोबारा एक नज़र डालते हैं और अपने जायज़े का निचोड़ यह बताते हैं कि एक तरफ़ खानक़ाहें ख़ाली हैं दूसरी तरफ़ दानिशगाहें (विद्या केन्द्र)। इनका काम मात्र यह रह गया है कि तय किये हुए रास्ते को बार-बार तय करती हैं। साहित्य व शायरी मुर्दा व निर्जीव हो गये हैं। वह कहते हैं कि मैंने इस्लामी दुनिया का कोना-कोना छान मारा किन्तु वह मुसलमान मुझ न मिला जो मौत से कांपने के बजाय मौत उससे भय खाती हो और जो स्वयं मौत के लिए मौत हो। वह मुसलमानों की परेशानियों और उनके मारे मारे फिरने का कारण बताते हुए कहते हैं कि हर वह व्यक्ति अथवा समाज जो दिल तो रखता है किन्तु दिलबर नहीं, प्रेम रखता है किन्तु प्रेमी नहीं ठहराव और इतमीनान से सदा वंचित रहता है उसकी शक्तियां नष्ट होती हैं। उसके प्रयास कभी एक लक्ष्य पर केन्द्रित नहीं रहते।

किन्तु हतोत्साह कर देने वाली इन तमाम बातों के बावजूद वह मुसलमानों और ख़ुदा की रहमत से निराश नहीं, बल्कि निराशा, दूसरों पर निर्भर करने और हर चीज़ को दूसरों की नज़र से देखने की शिक्षा देने वालों की वह कड़ी आलोचना करते हैं। और बड़े दर्द से कहते हैं कि हरम (काबा शरीफ़ का कैम्पस) के सन्तरी बुतख़ाने के रखवाले बन बैठे हैं। उनका विश्वास मर चुका है और वह दूसरों की मदद पर भरोसा करने लगे हैं। वह कहते हैं कि मुसलमान भले ही सैनिक शक्ति न रखते हों किन्तु उनकी क्षमता बादशाहों से अधिक और निगाह उनसे ऊँची है। यदि थोड़ी देर के लिए इनको उनकी जगह दे दी जाये तो इनकी ज्योति सारे संसार में उजाला फैला सकती है।

इक़बाल का पूरा जीवन निस्सन्देह वर्तमान युग से खींचतान में व्यतीत हुआ। उन्होंने पश्चिमी सभ्यता और भौतिकवाद का न केवल इनकार किया बल्कि आगे बढ़कर उसकी तीव्र आलोचना की उसे चुनौती दी और पूरे साहस व भरपूर तर्क के साथ उसको खोटा सिद्ध किया और उसकी वास्तविकता एवम् असलियत को बेनक़ाब किया।

वह वास्तव में नई पीढ़ी के प्रशिक्षक, आत्म-विश्वास व आत्म-निर्भरता के पक्के हामी थे। वह इस्लाम के प्रति पूर्ण जागरूक तथा भौतिकवाद एवं भौतिकवादी विचारधारा के कट्टर विरोधी थे।

वह पाश्चात् शिक्षा से अपनी बग़ावत, उसके जाल से बच निकलने और अपने अक़ीदा व यक़ीन तथा अपनी विशेषताओं का वर्णन करते हुए दावा करते हैं कि उन्होंने पश्चिमी सभ्यता व शिक्षा का डटकर सफलता पूर्वक मुक़ाबिला किया। वह गर्व व उल्लास के साथ एलान करते हैं कि उन्होंने इनके तत्व को ले लिया और छिलके को फेंक दिया और सफलता के साथ उसके जाल से बाहर आ गये। उन्होंने उसके उस पेंडोरा बाक्स (भानुमती का पिटारा) की क़लई खोलकर रख दी जिसने पूरब व पश्चिम दोनों की नज़रबन्दी कर रक्खी थी।

वह अपनी ज़िन्दगी के उन दिनों का वर्णन करते हैं जो उन्होंने योरोप के बड़े बड़े शहरों में गुज़ारे थे और जहाँ नीरस किताबों, मुंह तोड़ वाद विवाद, फ़ितनों की जननी सुन्दरता और मनमोहक दृश्यों के सिवा उन्हें और कुछ न मिल सका। इसके सिवा अगर कोई चीज़ मिली तो आत्मविस्मरण जिसने उनके अस्तित्व को मिटा देना चाहा। वह कहते हैं कि पश्चिम की मधुशाला में बैठकर मुझे दर्द सर के सिवा कुछ न मिला मैंने अपने पूरे जीवन में इससे अधिक नीरस दिन नहीं बिताये जो इन अंग्रेज बुद्धिजीवियों के साथ गुज़रे।

फिर इक़बाल बड़े दर्द के साथ कहते हैं—मैं तो आपकी एक कृपा दृष्टि का पाला हुआ हूँ। ज्ञानी और बुद्धिजीवी समाज की यह सारी लनतरानी और तर्क वितर्क मेरे लिए ववालेजान हैं। मैं तो केवल आपके दर का फ़क़ीर हूँ आपकी गली का भिखारी हूँ मुझे किसी की चौखट पर सर फोड़ने और क़िस्मत आज़माने की क्या ज़रूरत ?

फिर वह उस—वर्ग को सम्बोधित करते हैं जो दीन की शिक्षा का प्रतिनिधि समझा जाता है वह उसकी नीरसता, ठहराव, प्रेम से दूरी, मालूमात और नये नये शब्दों की गरमबाज़ारी की शिकायत

करते हुए बड़े प्रभावी ढंग से कहते हैं कि यह वर्ग उस मरुस्थल के समान हो गया है जिसमें न ज़मज़म हो और न अल्लाह का घर (काबा)। हेजाज़ के मरुस्थल की क़ीमत तो काबाशरीफ़ और ज़म-ज़म के पानी से है अगर यह न हों तो इन तपते हुए बियाबानों और ख़ामोश पहाड़ों में क्या फ़ायदा? इसी प्रकार वह दीन का ज्ञानी कितना निर्धन और नादार है जो ज्ञान का पंडित, भाषा का आचार्य और बुद्धिमान तो है किन्तु उसकी आंख प्रेम के आंसू और दिल मुहब्बत की तड़प से ख़ाली है।

वह कहते हैं कि मैंने एकबार ग़ैर अल्लाह पर भरोसा किया और उसकी सज़ा में दो सौ बार अपने स्थान से नीचे गिराया गया। यह वह स्थल है जहाँ शक्ति और साधन काम नहीं आते। यह अल्लाह की मर्ज़ी का मामला है इसमें तनिक सी चूक आदमी को बहुत नीचे गिरा सकती है। वह कहते हैं कि सच्चाई एवं निष्ठा से ख़ाली इस युग में जहाँ लोग स्वार्थ के अतिरिक्त किसी और चीज से परिचित नहीं और जहाँ "सुरुचि, सुभाष, सरस, अनुराग" का अभाव है, मेरे लिए कुढ़न एवं पश्चाताप के सिवा और क्या है। वह कहते हैं पूरब व पश्चिम कहीं भी कोई मेरा हमदम और हमराज़ नहीं मैं अपने हृदय की व्यथा स्वयं अपने दिल से कहता हूँ और अपने को बहलाता हूँ।

उनको इसकी शिकायत है कि उनकी सच्ची शिक्षा और सलाह को किसी ने नहीं माना और उनके ज्ञान से किसी ने लाभ न उठाया। उन्होंने अपनी शायरी के माध्यम से जिस रहस्य को बेनक़ाब किया उस पर किसी ने कान न धरा। सब उन्हें केवल एक ग़ज़लगो शायर समझते रहे।

वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शिकायत करते हैं कि आपका हुक्म और फ़रमान तो यह है कि मैं लोगों तक चिर-स्थायी जीवन का सन्देश पहुँचाऊँ किन्तु यह बावरी दुनिया मुझसे यह आशा करती है कि सामान्य पेशावर कवियों की तरह मैं लोगों की मौत की तारीख़ निकालता रहूं। वह बड़े मार्मिक शब्दों में इस बात

की शिकायत करते हैं कि वह ज्ञान और सन्देश जो उनके शेरों का असल निचोड़ है उससे लोगों को सबसे कम दिलचस्पी है। वह कहते हैं कि—मैंने अपनी पूरी दुकान खोलकर बाज़ार में रखदी किन्तु कोई इन अनमोल मोतियों का खरीदार न मिला। मैं ने दिल का सत् पेश करना चाहा किन्तु कोई इसका भी क़दरदान न मिला। मुझसे अधिक अजनबी और अकेला इस दुनिया में और कौन हो सकता है।

अन्त में वह सुल्तान इब्न सऊद को सम्बोधित करते हैं किन्तु वास्तव में वह तमाम अरब के बादशाहों और इस्लामी संसार के समस्त सरबराहों से कहते हैं कि विदेशियों पर भरोसा न करना। उनके बजाय खुदा पर और स्वयं अपने आप पर भरोसा करना वह कहते हैं कि यदि तनाब तुम्हारी है तो जहाँ चाहो और जिस समय चाहो अपना ख़ैमा गाड़ सकते हो और हर जगह अपनी मंज़िल बना सकते हो अगर वह नहीं तो मांग कर तुम आज़ादी के साथ कोई क़दम नहीं बढ़ा सकते वह कहते हैं कि तनिक अपने को पहचानने की कोशिश करो। इस भूतल पर तुमको वह स्थान प्राप्त है जिसकी सन्ध्या दूसरों के प्रभात से अधिक ज्योतिर्मय है।

प्रियतम् की नगरी में

नज़र उठाकर देखिये यह दोनों तरफ़ पहाड़ों की क़तारें हैं, क्या अजब है कि नबी स० की ऊँटनी इसी रास्ते से गुज़री हो। यहाँ की हवा में सौरभ और सुगन्ध इसी कारण है। लीजिये मुसैजद[1] आगई। अब बीरअली (ज़ुलहुलीफ़ा) की बारी है।

अनुवाद:– प्रियतम का घर ज्यों ज्यों निकट आता है त्यों त्यों अनुराग बढ़ता जाता है।

दरूदशरीफ़ ज़बान पर जारी है। हर्षोल्लास से दिल उमड़ रहा है। अरब ड्राईवर हैरान है कि यह अजमी (विदेशी) क्या पढ़ता है और क्यों रोता है। कभी अरबी में गुनगुनाता है कभी दूसरी ज़बानों में शेर पढ़ता है।

भीनी भीनी हवा है और हल्की हल्की चाँदनी ज्यों ज्यों मदीना क़रीब होता जा रहा है हवा की खुनकी, पानी की मिठास और ठंडक किन्तु दिल की गर्मी बढ़ती जा रही है। सुनिये कोई कह रहा है:–

बादे नसीम[2] आज बहुत मुश्कबार[3] है।
शायद हवा के रुख़ पे खुली ज़ुल्फ़-यार है॥
वह एकबार इधर से गये मगर अब तक।
हवा-ए-रहमते परवरदिगार आती है॥
वह दानाएसुबुल ख़तमुर्रसुल मौलाए कुल[4] जिसने।
ग़ुबारे राह[5] को बख़्शा फ़रोग़ वादी-ए-सीना[6]॥

---

1. मदीना के रास्तों में एक स्थान का नाम।
2. प्रभात की शीतल मन्द सुगन्ध हवा।
3. सुगन्धित।
4. हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।
5. रास्ते के धूल-कण को।
6. बढ़ाकर सीना की घाटी बना दी।

खाके-यसरब अज़ दो आलम ख़ुश्तर अस्त ।
ए! ख़ुनक शहरे कि आंजा दिलबर अस्त ।।

(अनुवादः- मदीने की धूल दोनों आलम से बढ़कर है । कितना प्यारा है वह शहर जहाँ मेरा दिलबर रहता है ।) ।

लीजिये ज़ुलहुलीफ़ा आ गया । रात का बक़िया हिस्सा यहाँ गुज़रना है । नहाया, ख़ुश्बू लगाई । कुछ देर दम ले लीजिये और कमर सीधी कर लीजिये सुबह हुई, नमाज़ पढ़ी । मोटर रवाना हुई । क्या जहाँ सरके बल आना चाहिए था वहाँ मोटर पर सवार होकर जायेंगे ? ड्राइवर के साथ बैठना काम आया "वादी-ए-अक़ीक़" में बीरउरवा[1] के पास उतार देगा । सामान, स्त्रियां और बूढ़े सवार रहेंगे । बात करते करते बीरउरवा आगया । बिस्मिल्लाह! उतरिये वह देखिये ओहद पहाड़ नजर आ रहा है । वह मदीना नगरी के वृक्ष दिखाई पड़ने लगे । क्या वही वृक्ष हैं जिनके बारे में शहीदी ने कहा थाः--

तमन्ना है दरख़्तों पर तेरे रौज़े के जा बैठे ।
क़फ़स जिस वक़्त टूटे तायरे रूहे मुक़य्यद का ।।

वह गुंबदे खिज़रा नजर आया । दिल को संभालिये और क़दम उठाईये । यह लीजिये मदीना में दाखिल हुए । मस्जिदे नबवी स० की दीवार के नीचे नीचे बाबे मजीदी से गुजरते हुए बाबे जिब्रील पर जाकर रुके । हाज़िरी के शुक्राना में कुछ सदक़ा किया और अन्दर दाखिल हुए । पहले मेहराबे नबवी स० में जाकर दुगाना अदा किया । गुनहगार आँखों को जिगर के पानी से पवित्र किया, वजू कराया फिर बारगाहे नबवी स० पर हज़िर हुएः--

अनुवादः— आप पर सलात व सलाम ऐ! अल्लाह के रसूल । आप पर सलात व सलाम ऐ! अल्लाह के नबी । आप पर

---

1. एक कुएँ का नाम ।

सलात व सलाम ऐ अल्लाह के हबीब। आप पर सलात व सलाम ऐ साहबे खुल्के अज़ीम[1]। आप पर सलात व सलाम ऐ! क़यामत के दिन लेवा उलहम्द[2] बलन्द करने वाले। आप पर सलात व सलाम ऐ! साहबे मक़ामे महमूद[3]। आप पर सलात व सलाम ए! अल्लाह के हुक्म से लोगों को अन्धेरों से उजाले में निकाल कर लाने वाले। आप पर सलात व सलाम ऐ! लोगों को बन्दों की बन्दगी (भक्तों की भक्ति) से निकाल कर अल्लाह की बन्दगी में दाख़िल करने वाले। आप पर सलात व सलाम ऐ! लोगों को धर्मों के अन्याय से निकाल कर इस्लाम के न्याय में दाख़िल करने वाले, और दुनिया की तंगी से निकाल कर दुनिया व आख़िरत की विशालता में पहुँचाने वाले। आप पर सलात व सलाम ऐ! इन्सानियत के सबसे बड़े मोहसिन (उपकारी)। ऐ! इन्सानो पर सबसे बढ़कर शफ़ीक़। ऐ। वह जिसका अल्लाह की मख़लूक़ (सृष्टि) पर अल्लाह के बाद सबसे बड़ा एहसान है। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और यह कि आप अल्लाह के बन्दे और उसके पैग़म्बर हैं। आपने अल्लाह का पैग़ाम पूरी तरह पहुँचा दिया अमानत का हक़ अदा कर दिया। उम्मत की ख़ैर ख़्वाही में कसर नहीं रक्खी। अल्लाह के रास्ते में पूरी पूरी कोशिश की और वफ़ात (मृत्यु) तक अल्लाह की इबादत में लगे रहे। अल्लाह आपको इस उम्मत और अपनी मख़लूक़ की तरफ़ से वह बेहतरीन बदला दे जो किसी नबी व रसूल को उसकी उम्मत और अल्लाह की मख़लूक़ की तरफ़ से

---

1. उच्च आचरण वाले।
2. अल्लाह तआला के शुक्र का झंडा (मानवीकरण अलंकार)।
3. उच्च एवं प्रिय पद वाले।

मिली हो। ऐ! अल्लाह तू मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को क़ुर्ब (सान्निध्य) व बलन्दी और वह मक़ाम महमूद अता कर (प्रदान कर) जिसका तूने उनसे वादा फ़रमाया है। तू अपने वादा के ख़िलाफ़ नहीं करता ऐ! अल्लाह मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर और उनकी आल (सन्तान) पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमा जैसी तूने इब्राहिम (अलैहिस्सलाम) और आले इब्राहिम पर नाज़िल फ़रमाई। बेशक तू हमीद व मजीद है। ऐ अल्लाह! मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आले मोहम्मद पर बरकतें नाज़िल फ़रमा जैसी तूने इब्राहिम व आले इब्राहिम पर नाज़िल फ़रमाई। बेशक तू हमीद व मजीद है।[1]

इसके बाद दोनों रफ़ीक़ों (साथियों) और वज़ीरों[2] को श्रद्धांजलि सलाम व दुआ की शक्ल में अर्पित की और डेरे पर आये।

अब आप हैं और मस्जिदे नबवी। दिल का कोई अरमान बाक़ी न रह जाये। दरूद शरीफ़ पढ़ने का इससे बेहतर ज़माना और इससे बेहतर मक़ाम कौन हो सकता है जन्नत की क्यारी में नमाज़ें पढ़िये। मगर देखिये किसी को तकलीफ़ न दीजिये। हस्तक्षेप, जगह को अपने लिए सुरक्षित करना, मस्जिद में दौड़ना, हर जगह बुरा है मगर जहाँ से यह अहकाम (निर्देश) निकले और दुनिया में फैले वहाँ उनकी अवहेलना बहुत ही घृणित (मकरूह) है। यहाँ आवाज़ बलन्द न हो। यहाँ दुनियाँ की बातें न हों मस्जिद को गुज़रगाह (चलने फिरने की जगह) न बनाया जाये। जहाँ तक सम्भव हो बे वज़ू दाख़िल होने से बचें। क्रय-विक्रय से दूर रहें।

---

1. यह दरूद लेखक की ज़बान से पहली हाज़िरी में निकला यह किसी किताब से उद्धरित नहीं है।
2. संकेत हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ र० तथा हज़रत उमर फ़ारूक़ र० की क़ब्र की ओर है।

दिन में जितनी बार जी चाहे हाज़िरी दीजिये और सलाम अर्ज़ कीजिये। आपके नसीब खुल गये। अब क्यों कमी कीजिये। मगर हर बार अज़मत व अदब, इश्तियाक़ व मुहब्बत, प्रेम व श्रद्धा के साथ। दिल की हमेशा एक हालत नहीं रहती। वह भी सोता और जागता है। जागे तो समझिये कि नसीब जागे। कभी उसका भी जी चाहेगा कि भक्तों की टोली के साथ हाज़िर हो। भक्तों की आँखों से जिन्होंने वियोग के दिन काटे और विरह की रातें बसर की जब आँसुओं का मेह बरसेगा तो शायद कोई छींटा उसको भी तर कर जाये। रहमत की हवा जब चलेगी तो शायद कोई झोंका उसको भी लग जाये। कभी दबे पांव लोगों की नज़र बचा कर एकान्त में हाज़िर होने का जी चाहेगा। दिल की इस सम्बन्ध में फ़रमाइशें खूब पूरी कीजिये। कोई हसरत बाक़ी न रहे। कभी सिर्फ़ आंसुओं से ज़बान का काम लीजिये कभी प्रेम व श्रद्धा के साथ विनती कीजिये। दरूद शरीफ़ लम्बे भी हैं और छोटे भी जिसमें जी लगे और उमंग पैदा हो उसको अख़्तियार कीजिये मगर इतना ध्यान अवश्य रहे कि तौहिद (एकेश्वर-वाद) की सीमाओं से क़दम बाहर न जाये। आप उसके सामने खड़े हैं जिसको, "जो अल्लाह चाहे और और आप चाहें" तथा "इन दोनों की नाफ़रमानी "सुनना गवारा न हो सका[1]। सज्दे का क्या ज़िक्र[2] ?

---

1. हदीस में है कि एक व्यक्ति ने कहा, "जो अल्लाह चाहे और आप चाहें"। आपने फ़रमाया, "क्या तुमने मुझे अल्लाह के बराबर कर दिया। कहो, "जो अल्लाह ही चाहे"।

   एक दूसरे वर्णन में है कि एक साहब ने तक़रीर करते हुए कहा, "जो अल्लाह और उसके रसूल की अताअत (कहना मानना) करे सच्ची राह पर है और जो इन दोनों की आज्ञा की अवहेलना (नाफ़रमानी) करे वह रास्ते से भटक गया"। आपने उसको नापसन्द किया कि अल्लाह का और आपका ज़िक्र इस तरह एक शब्द में किया जाये जिससे दोनों की बराबरी महसूस हो। आपने फ़रमाया "तुम बहुत बुरे वक्ता हो"।

2. हुज़ूर स० ने क़ैस बिन साद सहाबी से फ़रमाया, "भला तुम अगर मेरी क़ब्र के पास से गुज़रो तो सज्दा करोगे"? क़ैस ने कहा, "नहीं। इस पर आपने फ़रमाया, तो मुझे (ज़िन्दगी में) भी न करो"।

ईश्वर के गुणों में, उसकी क़ुदरत में, उसके अधिकार क्षेत्र में, किसी को शामिल करने का लेशमात्र भी प्रयास न हो। चाहे जामी[1] का कलाम पढ़िये, चाहे हाली[2] की दुआ सुनाइये। बस इतना ध्यान अवश्य रहे कि आप तौहीद के सबसे बड़े और आख़िरी पैग़म्बर के सामने खड़े हैं जिसको शिर्क का ध्यान आना भी गवारा न था।

अब हमारा पड़ाव मदीना मुनव्वरा में है, जहाँ की ख़ाक़रोबी (फ़र्राशी) को औलिया व बादशाह अपना अहोभाग्य समझते हैं वहाँ आप हर वक़्त हाज़िर हैं। एक एक दिन को और एक एक घड़ी को ग़नीमत समझिये। पाँचों नमाजें मस्जिदे नबवी स० में जमाअत के साथ पढ़िये। अगर कहीं बाहर जाइये भी तो ऐसे समय कि कोई जमाअत छूटे नहीं। तहज्जुद[3] में हाज़िर होइये। यह समय सुकून का होता है, लोग रौज़ा-ए-जन्नत की तरफ़ दौड़ते हैं वहां तो बिना दौड़े और बिना कशमकश जगह पानी मुश्किल है। आप पहले मवाजह शरीफ़ में आइये इस समय शायद आपको सिर्फ़ पहरेदार ही मिलें। इतमी-नान से सलाम अर्ज़ कीजिये फिर जहाँ जगह मिले नफ़्ल नमाजें पढ़िये और सुबह की नमाज़ पढ़ कर इशराक़[4] से फ़ारिग़ होकर बाहर आइये।

आइये आज बक़ी चलें जो नबियों की क़ब्रों के बाद सत्य एवं निष्ठा का सबसे बड़ा मदफ़न है-- "दफ़्न होगा न कहीं ऐसा ख़ज़ाना हरगिज़"

अगर आपको नबी स० की सीरत, सहाबा क्राम र० के हालात और उनके पद की गरिमा का ज्ञान है तो आपको यहां सही एहसास होगा, आप हर क़दम पर रुकेंगे और एक एक ख़ाक के ढेर को अपने

---

1. फ़ारसी के प्रसिद्ध नातगो शायर।
2. उर्दू के प्रसिद्ध कवि।
3. आधी रात के बाद भोर से पहले पढ़ी जाने वाली नफ़्ल नमाज़।
4. कुछ सूरज चढ़े (सवा नेजा) पढ़ी जाने वाली नफ़्ल नमाज़।

आंसुओं से तर करना चाहेंगे। यहाँ के चप्पा चप्पा पर ईमान व जेहाद और इश्क़ व मुहब्बत का इतिहास लिखा है। एक एक ढेर में इस्लाम का खज़ाना दफ़न है। अब बक़ी में दाख़िल हो गये। ज़ियारत कराने वाला आपको सीधा अहले बैत[1] की क़ब्रों पर ले जायेगा। यहां रसूल स० के चचा सय्यदना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब, जन्नत की सरदार रसूल स० की बेटी फ़ात्मा र०, सैय्यदना हसन र० बिन अली र०, सैय्यदना अली बिन अल्हुसैन जैनुल आब्दीन, सय्यदना मोहम्मद अल्बाक़र र० सैयद्दना जाफ़र अस्सादिक़ र० आराम फ़रमा हैं। यहाँ से चलते वक़्त उम्मुल मोमनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाह अन्हा और (हज़रत ख़दीजा व मैमूना रज़ी अल्लाह अन्हुमा के अलावा) रसूल स० की तमाम पाक बीबियों, फिर पाक बेटियों की क़ब्रें मिलेंगी। फिर दार अक़ील बिन अबी तालिब जहां अबुसुफ़ियान बिन अल्हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब व अब्दुल्लाह बिन जाफ़र आदि की क़ब्रें हैं फिर आपको एक टुकड़ा मिलेगा जिसमें इमाम दारुल हिजरत सैय्यदना मालिक बिन अनस साहबुल मज़हब और उनके उस्ताद नाफ़ आराम फ़रमा हैं। यहां से आगे बढ़िये तो एक ज्योति पुंज मिलेगा। यह एक मुहाजिर की पहली क़ब्र है यहाँ वह उस्मान बिन मज़ऊन दफ़्न हैं जिनके माथे को हुज़ूर स० ने चूमा था। यहीं बक़िया सहाबा सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद, फ़ातेह (विजेता) ईराक़, साद बिन अबी वेक़ास, सैयदना साद बिन मआज़ जिनकी मौत पर आसमान कांप गया था, सैय्यदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और दूसरी महान आत्मायें दफ़न हैं। यहां से आगे चलिये तो उत्तर-पश्चिम की ओर दीवार के निकट वह सत्तर सहाबा और मदीना के वासी दफ़न हैं जिन्हें हर्रा की घटना में यज़ीद के शासन काल में सन् 63 हि० में शहीद किया गया था। इसके बाद बक़ी के बिल्कुल कोने पर पूर्व-उत्तर की ओर इमाम मज़लूम शहीदुद्दार सैय्यदना उस्मान बिन अफ़्फ़ान आराम फ़रमा हैं[2]।

---

1. नबी स० की पाक बीवियां तथा उनके परिवार के अन्य सदस्य।
2. अक्सर ज़ायरीन (ज़ियारत करने वाले) सबसे पहले यहाँ हाज़िर होते हैं।

यहाँ पर कुछ देर ठहरिये और प्रेम व श्रद्धा के जो आंसू सैय्यदना अबूबक्र र० व सैय्यदना उमर र० की क़ब्र पर बहने से बच रहे थे उनको उनके तीसरे साथी की ख़ाक पर बहाइये:–

आस्मां इसकी लहद पर शबनम अफ़शानी करे
सब्ज़ा-ए-नवरुस्ता इस घर की निगहबानी करे

(अनुवाद:- आसमान इसकी क़ब्र पर ओस का छिड़काव करे। और नर्म, नई हरीघास इस घर की रखवाली करे।)

इसके आगे सैय्यदना अबू सईद ख़ुदरी सैय्यदना अली करम अल्लाहु वज्हु की वाल्दा फ़ातिमा बिन्त असद की क़ब्रें हैं। सबको सलाम अर्ज़ कीजिये और फ़ातिहा पढ़िये।

फिर एक क्षण ठहर कर पूरे बक़ी पर इबरत की नज़र डालिये। अल्लाहु अकबर! कितने सच्चे थे यह अल्लाह के बन्दे जो कुछ कहते थे कर दिखाया। मक्का में जिसके हाथ में हाथ दिया था, मदीना में उसी के क़दमों में पड़े हैं:–

जो तुझबिन न जीने को कहते थे हम।
सो उस अहेद[1] को हम वफ़ा कर चले॥

गुम्बदे ख़िज़रा पर एक नज़र डालिये फिर मदीना के इस शहर ख़ामोश (क़ब्रिस्तान) को देखिये। सत्यनिष्ठा, धैर्य तथा वफ़ादारी की इससे अच्छी मिसाल क्या मिलेगी। आइये बक़ी में इस्लाम की ख़िदमत का अहेद करें और अल्लाह से दुआ करें कि वह हमें इस्लाम ही के रास्ते पर ज़िन्दा रक्खे और उसी के साथ वफ़ादारी में मौत आये। जन्नतुल बक़ी का यही पैग़ाम और यहाँ का यही सबक़ है।

कुबा में भी हाज़िरी दीजिये। यह वह ज्योति पुंज है जहाँ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दम मदीना से भी पहले पहुंचे। यहां उस मस्जिद की बुनियाद रक्खी गई जिसको "वह मस्जिद जिसकी बुनियाद डाली गई तक़वा पर पहले ही दिन" की पदवी

---

1. संकल्प।

मिल्ती। मुहब्बत व अजमत के साथ हाज़िरी दीजिये। उस ज़मीन पर नमाज़ पढ़िये, पेशानी (माथा) उस ख़ाक पर रखिये जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दमों से पामाल हुई है। उन हवाओं में सांस लीजिये जिसमें वह पवित्र सासें अब भी बसी हुई हैं।

आज ओहद पहाड़ और उसके मशहद[1] (जिसको यहाँ प्रायः लोग "सैय्यदना हमजा" कहते हैं) में हाज़िरी की बारी है। दो तीन मील की दूरी क्या, बात करते करते पहुंच गये। यह वह ज़मीन है जो इस्लाम के सबसे क़ीमती ख़ून से तर हुई। सबसे सच्चे सबसे, अच्छे, सबसे ऊँचे इश्क़ व मुहब्बत और वफ़ादारी के वाक़यात जो दुनिया के पूरे इतिहास में नहीं मिलते इसी तपोभूमि पर पेश आये। शहीदों के सरदार हज़रत हमजा र० के अंग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत और इस्लाम की वफ़ादारी में यहीं काटे गये। और जिगर को खाया गया। एमारा बिन ज़्याद ने क़दमों पर आंखें मल मल कर यहीं जान दी। अनस बिन अन्नज़र को जन्नत की ख़ुश्बू इसी पहाड़ के अंचल मे आई और अस्सी से ऊपर ज़ख्म खाकर यहीं से विदा हुए। हुज़ूर स० के मुबारक दान्त यहीं शहीद हुए। सर पर ज़ख्म यहीं आये। भक्तों ने अपने हाथों को और पीठ को अपने प्रियतम स० के लिए ढाल यहीं बनाया। मक्का का लाडला मसअब बिन उमैर र० यहीं एक कम्बल में शहीद हुआ और एक कम्बल में दफ़्न हुआ। यहां इस्लाम के शेर सोते हैं। यह पूरी ज़मींन नबूवत की शमा के परवानों की ख़ाक है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मर मिटने वालों की बस्ती है:—

यह बुलबुलों का सबा मशहदे मुक़द्दस है।
क़दम संभाल के रखियो यह तेरा बाग़ नहीं।।

यहाँ की हवायें और यहाँ के पहाड़ आज भी "उसी पर जान दो जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से

---

1. शहीद होने की जगह।

गये[1]" की सदा से गूँज रहे हैं। आइये इस्लाम पर जीने और जान देने का अह्द फिर ताजा करें।

मदीना तय्यबा के कण कण को प्रेम व श्रद्धा की दृष्टि से देखिये! आलोचना की दृष्टि और आपत्ति की भाषा के लिए दुनिया पड़ी हुई है। जीवन के कुछ दिन कांटों से अलग फूलों में गुजर जायें तो क्या हर्ज है। फिर भी अगर आपकी निगाह कहीं रुकती और अटकती है तो विचार कीजिये, यह हमारी कोताही के सिवा और क्या है। हमने दीन और दुनिया की ख़ैरात यहीं से पाई, आदमीयत यहीं से सीखी, यहाँ का पथप्रदर्शन प्राप्त न होता तो हममें से कितने मआज़ अल्लाह बुतख़ाना, आतिशकदा[2] और कलीसा[3] में होते। लेकिन हमने उसका क्या हक़ अदा किया। यहां के बच्चों की शिक्षा-दीक्षा, यहां के लोगों में दीन के प्रति लगाव पैदा करने की क्या कोशिश की। दूरी का बहाना सही नहीं। इनके पूर्वजों ने समुद्र, जंगल और पहाड़ों को पार करके दीन का पैग़ाम हम तक पहुंचाया क्या हमने भी अपने कर्त्तव्य की ओर कभी ध्यान दिया? हम समझते हैं कि दीन के एहसान का बदला हम कुछ सिक्कों में अदा कर देंगे जो हमारे हाजी अपनी कम निगाही में एहसान समझकर मदीना की गलियों में बाँटते फिरते हैं।

मदीना इस्लाम की दावत की खान है। इस दावत को इस खान से प्राप्त कीजिये और अपने अपने देश के लिए सौग़ात लेकर आइये। खजूरें, गुलाब व पुदीना, ख़ाके शिफ़ा मुहब्बत की निगाह में सब कुछ हैं मगर इस तपोभूमि की असली भेंट और यहां की सबसे बड़ी सौग़ात

---

1. यह कथन हज़रत अनस बिन अन्नज़र र० का है। उन्होंने सहाबा को ओहद के मैदान में बैठा हुआ देखा, पूछा क्यों बैठे हो? उन्होंने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह स० शहीद हो गये, अब लड़कर क्या करेंगे? कहा तो फिर उसी पर तुम भी जान दे दो जिस पर रसूलुल्लाह स० ने जान दी।
2. मजूस की इबादतगाह।
3. ईसाइयों की इबादतगाह।

दावत और इस्लाम के लिए संघर्ष और जान देने का संकल्प है। मदीना, मस्जिदे नबवी स० के चप्पा चप्पा, बक़ी शरीफ़ के कण कण, ओहद की हर हर कंकरी में यही पैग़ाम आता है। मदीना आकर कोई यह कैसे भूल सकता है कि इस शहर की बुनियाद ही दावत व जेहाद पर पड़ी थी। यहाँ वही लोग मक्का से आकर आबाद हुए थे, जिनके लिए मक्का में सब कुछ था मगर दावत व जेहाद के अवसर न थे। यहाँ की आबादी दो ही भागों में बंटी थी। एक वह जिसने अपना अहेद (संकल्प) पूरा कर दिया और इस्लाम के रास्ते में जान दे दी। कोई डर, कोई लालच उसको अपने लक्ष्य से विचलित न कर सकी। दूसरा वह जिसने अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश की लेकिन अल्लाह को अभी उनसे और काम लेना था। उनका जो समय गुज़रता इन्तेज़ार की हालत में गुज़रता, शहादत की लगन में गुज़रता। यही इस्लामी संसार का हाल होना चाहिए। यहां भी या तो वह लोग हों जो अपना काम पूरा कर चुके या वह जो समय का इन्तेज़ार कर रहे हैं। तीसरी श्रेणी उन लोगों की है जो जीवन के माया मोह में लीन और दुनिया दारी में व्यस्त हैं, मौत से डरते हैं और सेवा कार्य से भागते हैं, पेट पूजा में पूर्णतया व्यस्त ऐसे लोगों की गुंजाइश न मदीना में थी न इस्लामी संसार में होनी चाहिए।

लीजिये पड़ाव का समय समाप्त होने को आया। कल क़ाफ़िला कूच करेगा। अब रह रहकर इस क़याम के दौरान की कोताहियों और अपनी भूल चूक का ख़्याल आता है और पछतावा होता है। अब तौबा व नदामत (पश्चाताप) के सिवा क्या चारा है। आज की रात मदीना की आख़िरी रात है ज़रा सवेरे मस्जिद में आजाइये।

लेकिन दिल को एक तरह का सुकून भी हासिल है आख़िर जा कहां रहे हैं? अल्लाह के रसूल के शहर से अल्लाह के शहर की तरफ़। अल्लाह के घर से जिनको हज़रत मोहम्मद स० और उनके साथियों ने अपने पवित्र हाथों से बनाया, अल्लाह के उस घर की तरफ़ जिसको उनके पितामह हज़रत इब्राहिम अ० और उनके पुत्र ने अपने हाथों से

बनाया। और जो क्यों रहे हैं ? अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह के रसूल स० की मर्ज़ी और हिदायत से। यह दूरी दूरी कब हुई।

आख़िरी सलाम अर्ज़ किया, मस्जिदे नबवी पर हसरत की निगाह डाली और बाहर निकले, नहा कर अहराम[1] की तैयारी कर ली थी, जाने ज़ुहुलीफ़ा में इसका मौक़ा मिले न मिले। मोटर पर बैठे। प्रियतम की नगरी पर मुहब्बत की निगाह डालते चले। ओहद को डबडबाई आंखों से देखा। अब मदीना से बाहर हो गये जो क्षण गुज़रता है मदीना दूर और मक्का क़रीब होता जाता है। अल्हम्दु-लिल्लाह कि हम मक्का और मदीना के बीच ही हैं।

---

1. हज के समय हाजियों द्वारा एक ओढ़ी जाने वाली तथा दूसरी तहमद की तरह बांधी जाने वाली चद्दरें।

मदीने की चर्चा[1]

लोगों ने मुझसे फ़रमाइश की है कि कुछ हेजाज़ की बातें करो। जो कुछ वहां देखा है, वह हमें भी दिखाओ। मुझे यह फ़रमाइश सहर्ष स्वीकार है:–

"ज़िक्रे हबीब कम नहीं वस्ले हबीब से"

मुझे वह दिन याद नहीं जब मक्का और मदीना का नाम मेरे लिए नया था और वह पहला दिन था जब मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जन्मभूमि मक्का और इस्लाम के गहवारे, रसूल स० के शहर मदीना के बारे में कुछ सुना हो।

मैं तमाम मुसलमान बच्चों की तरह एक ऐसे वातावरण में पला जहां हेजाज़ और इन दोनों पवित्र शहरों की चर्चा होती ही रहती है। मुझे अच्छी तरह याद है कि लोग तेज़ी में अकसर "मक्का मदीना" कहते थे, मानो वह एक ही शहर का नाम है। वह लोग जब भी इनमें से किसी एक शहर की चर्चा करते तो दूसरे की भी अवश्य चर्चा करते। इन्हीं बातों से मैं यह समझता था कि यह दोनों एक ही शहर के नाम हैं। मुझे इस अन्तर का ज्ञान उस समय हुआ जब मैं कुछ बड़ा हो गया और मुझे कुछ समझ आ गई। उस समय मुझे मालूम हुआ कि दोनों अलग अलग शहर हैं और इनके बीच की दूरी भी कुछ कम नहीं है।

मैं ने बचपन में जिस प्रकार लोगों को जन्नत और उसकी न्यामतों (वरदानों) की बड़े शौक से चर्चा करते हुए सुना, उसी प्रकार हेजाज़

---

1. सन् 1951 ई० में हेजाज़, मिस्र व सीरिया की यात्रा से वापसी पर आल इण्डिया रेडियो दिल्ली से प्रसारित एक अरबी तक़रीर के उर्दू अनुवाद से।

और उसके दोनों शहरों की चर्चा भी सुनी थी। जन्नत को हासिल करने और हेजाज़ देखने की तमन्ना उसी समय मेरे दिल में करवटें लेने लगी थी।

जब मैं कुछ बड़ा हुआ और मुझे मालूम हुआ कि जीते जी जन्नत को देखना सम्भव नहीं है, हाँ! हेजाज़ तक पहुंचा जा सकता है—हाजियों के क़ाफ़िले बराबर आते जाते हैं, तो मैं ने कहा कि फिर ईमान की इस जन्नत की सैर क्यों न की जाये। दिन पर दिन गुज़रते गये और मैं बढ़ता गया, जब मैंने रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक सीरत और इस्लाम के इतिहास का अध्ययन किया तो मेरा पुराना शौक़ ताज़ा हो गया। थपकी दे देकर सुलाई हुई तमन्नायें जाग गईं और मैं दिन-रात हज व ज़ियारत की तमन्ना में रहने लगा।

फिर ऐसा हुआ कि मैं इस जगह आ पहुंचा जिसकी ज़मीन पर न तो हरी घास का फ़र्श है, और न इसकी गोद में नदियां खेलती हैं। इसके चारों ओर जले हुए पहाड़ खड़े पहरा दे रहे हैं, लेकिन हफ़ीज़ के कथनानुसार:—

न इस में घास उगती है न इसमें फूल खिलते हैं।
मगर इस सरज़मीं से आसमां भी झुक के मिलते हैं॥

जब मैं ने बाह्य सुन्दरता से ख़ाली यह तपोभूमि देखी तो मैं ने अपने दिल में कहा कि यह शहर दृश्यों से कितना ख़ाली है लेकिन साथ ही साथ मैंने यह भी सोचा कि इस शहर ने मानवता और मानव सभ्यता पर कितना बड़ा एहसान किया है। अगर यह शहर जिसकी गोद गुलकारियों से खाली है, भूतल पर न होता तो दुनिया एक सोने का पिंजड़ा होती और इन्सान मात्र एक क़ैदी! ....यही वह शहर है जिसने इन्सान को दुनिया की तंगी से निकाल कर उसकी विशालताओं से परिचित कराया, मानवता को उसकी खोई हुई सरदारी और छिनी हुई आज़ादी दिलाई। इसी शहर ने मानवता पर लदे हुए भारी बोझों को उतारा, उसकी बेड़ियों को काटा जो ज़ालिम

बादशाहों और नादान क़ानूनसाज़ों (विधि निर्माता) ने डाल रक्खे थे।

जिस समय मैंने यह सोचा........अगर यह शहर ना होता ?... उसी समय मेरे मन में यह विचार आया कि मैं दुनिया के बड़े-बड़े शहरों को इस शहर से तुलना करूँ और देखूं कि अगर यह शहर न होते तो दुनिया में मानवता और मानव सभ्यता में क्या कमी होती! ....मेरे सामने एक एक शहर आये और मैं ने देखा कि यह तमाम शहर मुट्ठी भर इन्सानों के लिए ज़िन्दा और आबाद थे उन्होंने मानवता की थाती में कोई बड़ी बृद्धि नहीं की। यह विभिन्न युगों में मानवता और मानव सभ्यता के प्रति दोषी रहे हैं, अपने तनिक से लाभ के लिए बारबार एक शहर ने सैकड़ों शहरों को बेचिराग कर दिया, एक क़ौम ने बहुत सी क़ौमों को अपनी ख़ूराक बना लिया। कितनी बार कुछ एक आदमियों के कारण हज़ारों लाखों इन्सान मौत के घाट उतार दिये गये। वास्तव में अगर यह शहर दुनिया के नक़्शे पर न होते तो मानवता और मानव-सभ्यता का कुछ न बिगड़ता और दुनिया में कोई बड़ी कमी न होती।

लेकिन अगर मक्का न होता तो मानवता उन तत्वों व तथ्यों, आचरण एवम् आस्था तथा ज्ञान व विज्ञान से ख़ाली होती जो उसकी सबसे बहुमूल्य थाती और उसकी सबसे बड़ी सुन्दरता है। इसी की बदौलत दुनिया ने ईमान की उस चिरस्थायी दौलत को फिर से पाया जिसे वह खो चुकी थी। दुनिया ने उस सही ज्ञान को पाया जो कल्पना और अनुमान के परदों में छिप चुका था वह इज़्ज़त दुनिया को दोबारा मिली जो सरकशों और ज़ालिमों के हाथों पामाल (नष्ट) हो चुकी थी.........सच तो यह है कि यहाँ मानवता ने नया जन्म लिया और इतिहास नये सिरे से ढलकर निकला।

किन्तु मुझे हुआ क्या है जो मैं कहता हूं, अगर मक्का न होता ....? अगर मक्का न होता तो क्या हो जाता ? मक्का तो अपने शुष्क पहाड़ों, रेतीले टीलों बल्कि ख़ान-ए-काबा और ज़मज़म के पवित्र

कुफ़्र को अपनी गोद में लिए हुए छठी शताब्दी ई० तक बराबर सोता रहा है, और मानवता सिसकती और दम तोड़ती रही है, लेकिन उसने मदद का कोई हाथ न बढ़ाया। मक्का उस समय तक शुष्क पहाड़ों और रेतीले टीलों से घिरा हुआ, दुनिया से अलग थलग इस प्रकार ज़िन्दगी के दिन काट रहा था मानो मानवता के कुटुम्ब से इसका कोई सम्बन्ध न था, दुनिया के नक्शे से अलग था।

इसलिए मुझे यह कहना चाहिए कि मक्का नहीं बल्कि मक्का का वह महान सपूत अगर न होता जिसने इतिहास का रुख़ बदल दिया ज़िन्दगी के धारे को मोड़ दिया और दुनिया को एक नया रास्ता दिखाया तो दुनिया का यह नक्शा न होता।

यह सोचते सोचते मेरी आंखों के सामने कुछ एक दृश्य फिर गये। मुझे ऐसा महसूस होने लगा जैसे क़ुरैश का सरदार अकेला ख़ान-ए-काबा का तवाफ़ (परिक्रमा) कर रहा है, लोग उसका मज़ाक़ उड़ा रहे हैं, किन्तु वह बड़े इतमीनान के साथ तवाफ़ कर रहा है। जब वह तवाफ़ ख़त्म करता है तो ख़ान-ए-काबा में दाखिल होना चाहता है। लेकिन ख़ान-ए-काबा के कुंजीवाहक उस्मान बिन तलहा उसे सख़्ती से रोकते हैं। सरदार धैर्य से काम लेता है और कहता है, "उस्मान! वह दिन भी क्या होगा, जब यह कुंजी मेरे हाथ में होगी और मैं जिसे चाहूँगा उसे दूँगा"। वह जवाब देता है "नहीं बल्कि उस दिन उन्हें सच्ची इज्ज़त मिलेगी"।

फिर मैं ने देखा कि वही सरदार मक्का की विजय के दिन ख़ान-ए-काबा का तवाफ़ कर रहा है, उसके वह साथी जिन्होंने अपने को उस पर बलिदान कर दिया था उसके आस पास परवाने की तरह जमा हो रहे हैं। उस समय वह काबा के कुंजीवाहक को बुलाता है और कहता है, "उस्मान! लो यह तुम्हारी कुंजी है। आज का दिन नेकी और वादा पूरा करने का दिन है।"

इतिहास साक्षी है कि वह व्यक्ति केवल उस कुंजी का मालिक नहीं हुआ जिससे वह ख़ान-ए-काबा के दरवाज़े को खोल सकता था,

बल्कि उसके पास वह कुँजी भी थी जिससे वह मानवता के उन तालों को भी खोल सकता था जो किसी ज्ञानी और दार्शनिक से उस समय तक नहीं खुल सके थे। ....यह कुँजी क़ुरआन करीम है जो उस पर नाज़िल (अवतरित) किया गया.........रिसालत है जो उसे सौंपी गई जो मानवता की सारी गुत्थियों को सुलझा सकती है और हर युग की समस्याओं का हल प्रस्तुत करती है।

हज के बाद मैं अपने शौक़ के परों पर उड़ता हुआ मदीना मुनव्वरा की ओर चला। प्रेम तथा वफ़ादारी मुझे अनायास मदीना मुनव्वरा की ओर खींच रही थी। रास्ते की ज़हमतों को मैं रहमत समझ रहा था और मेरी निगाह के सामने उस पहले यात्री का नक्शा घूम रहा था जिसकी ऊँटनी इसी रास्ते से गुज़री थी। और उसने इस रास्ते को अपनी बरकतों से भर दिया था।

जब मैं मदीना मुनव्वरा पहुँचा तो सबसे पहले मैंने मस्जिदे-नबवी में दो रकअत नमाज़ अदा की और अल्लाह का शुक्र अदा किया। फिर मैं आप स० के सामने हाज़िर हुआ। मैं आप स० के उन एहसानात के नीचे दबा हुआ था जिनका ऋण चुकाना सम्भव नहीं। मैं ने आप स० पर दरूद व सलाम पढ़ा और गवाही दी कि बेशक आपने अल्लाह का पैग़ाम पूरा पूरा पहुँचा दिया। अल्लाह तआला की तरफ़ से सौंपी हुई अमानत को पूरा पूरा अदा कर दिया। उम्मत को सीधी राह दिखाई और अन्तिम क्षण तक अल्लाह की राह में पूरी पूरी कोशिश की। इसके बाद मैंने आपके दोनों प्रिय मित्रों को सलाम किया। यह दोनों ऐसे दोस्त हैं जिनसे बढ़कर दोस्ती का हक़ अदा करने वाला मानव इतिहास में नज़र नहीं आता और न कोई ऐसा जानशीन (उत्तराधिकारी) दिखाई देता है जिसने उनसे अधिक अच्छी तरह जानशीनी के कर्त्तव्यों का निर्वाह किया हो।

दरूद व सलाम के बाद मैं जन्नतुल बक़ी की तरफ़ गया। यह ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा है जहाँ सच्चाई तथा वफ़ादारी का अनमोल ख़ज़ाना दफ़न है........."दफ़न होगा न कहीं ऐसा ख़ज़ाना

हरगिज" यही वह लोग भी रहे हैं जिन्होंने आख़िरत के लिए सांसारिक जीवन को तज दिया। यह वह लोग हैं जिन्होंने अपने यक़ीन और अपने दीन की ख़ातिर सहर्ष घरबार छोड़ा। इन्होंने रसूल स० के क़दमों पर पड़े रहने के लिए रिश्तेदारों और संगी साथियों के पड़ोस को सदा के लिए तज दिया।

अनुवादः— बाज लोग ऐसे हैं जिन्होंने अल्लाह से जो अहद किया उसे सच कर दिखाया।

यहाँ से विदा लेकर मैं ओहद की तरफ़ गया ओहद वह पवित्र तपोभूमि है जहाँ मुहब्बत तथा वफ़ादारी का सबसे मनमोहक दृश्य देखने में आया। इसी मैदान में मानव इतिहास ने ईमान व यक़ीन को जीते जागते पात्रों (किरदारों) के रूप में देखा। यहीं से शौर्य एवं वीरता के शब्द शब्दकोष को मिले। इसी मिट्टी ने पाक मुहब्बत और दुर्लभ दोस्ती का नमूना दुनिया को दिखाया यहाँ पहुँचकर मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं अनस बिन नज़र रज़ी अल्लाहु अन्हु को यह कहते हुए सुन रहा हूं......... "मुझे ओहद पहाड़ की तरफ़ से जन्नत की खुश्बू आ रही है"........."मुझे कुछ ऐसा महसूस हुआ जैसे साद बिन मआज रज़ी अल्लाहु अन्हु रसूले खुदा की शहादत की ख़बर सुनकर कह रहे हों........."अब आप के बाद जंग व जेहाद का क्या लुत्फ़"? .... और अनस र० बोल उठे हों........."लेकिन आपके बाद जिन्दगी का भी क्या मज़ा" ?

इसी ओहद पहाड़ की गोद में हज़रत अबू दुजाना र० ने अपनी पीठ को हुजूर स० के लिए ढाल बना दिया था, तीर अबू दुजाना र० की पीठ को छेद रहे थे किन्तु वह हिलते तक न थे। इसी जगह हज़रत तल्हा र० ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर बरसने वाले तीरों को इस प्रकार अपने हाथ पर लिया कि हाथ बेकार होकर रह गया। इसी मैदान में हज़रत हमज़ा र० शहीद हुए और उनके टुकड़े टुकड़े कर दिये गये। मसअब बिन उमैर र० जो क़ुरैश के लाडले और कड़ियल जवान थे इसी जगह इस हालत में शहीद हुए कि उनके

लिए कफ़न भी न था। एक कम्बल था जिसमें अगर सर छिपाया जाता तो पैर खुल जाते, पैर ढाँके जाते तो सर खुल जाता।

ऐ काश! अहद दुनिया वालों का अपने इस मुहब्बत के ख़ज़ाने में कुछ दे देता। काश! आज दुनिया को उस पिछले ईमान व यक़ीन का लेशमात्र भी प्राप्त हो जाता। अगर ऐसा हो जाये तो इस दुनिया की क़िस्मत बदल जाये और यह दुनिया जन्नत बन जाये।

लोगों ने मुझसे कहा कि तुमने हमें क़ाहिरा की सैर कराई और वहाँ के महापुरुषों से परिचय कराया, तुमने दमिश्क और दमिश्क वालों की बातें सुनाईं और वहाँ के साहित्यकारों एवं विद्वानों से मिलाया, तुम हमें मध्यपूर्व ले गये और वहाँ की सैर कराई। अब हेजाज़ और हेजाज़ के महापुरुषों का भी परिचय कराओ . . . लेकिन मैं क्या करूँ। हेजाज़ की तो एक ही हस्ती है जिसकी बातें किये जाइये जिसके कारण हेजाज़, हेजाज़ है और इस्लामी संसार, इस्लामी संसार है।

सूरज के सामने सितारों और चिराग़ों और उसकी रौशनी से रौशन होने वाले ज़र्रों (कण) का क्या ज़िक्र। बस यही हेजाज़ की कहानी है और यही हेजाज़ का परिचय!

—:o:—